Lith Compd. Kondra

21st March 1938.

Manyawar, Secretary. C.C. ko mera bahut 2. yishusahay.

Main aplogon ka 24th January 1938 ka bheja huwa (Kondra Parish Pracharkon ka darkhast 11-11-38 talab Sambandhi) Kagaj pakar aplogon ki aggyanusar 9th March 1938 ko Ilaka baithakar jo phaisla huwa hai aplogon ki jankike liye bhejdeta hun So malum howe

Prem se aplogon ka
bishwast sewak
Rev. L. Lakra.
21-3-38.

कोन्डरा इलाका पंचकी बैठकी,

आज तारिख ८वीं मार्च १९३८ को कोन्डरा इलाकाकी बैठकी हुई जिसमें निम्नलिखित मेम्बरगण हाजिर थे। १, पादरी बाबु लौरेन्तियुस लकड़ा, चेयरमैन, २, पादरी बाबु इमानुएल कुजुर, ३, यूसफ टोप्पो, ४, बाबू इलियाजर मास्टर ५, प्रचारक आबादियाह कुजूर ६, कुंवार खड़ा, ७ जोहन टोप्पो ८ इलियाजर टोप्पो प्रचीन।

II कोन्डरा प्रचारकों का दरखास्त ता० ११-१२-३७ (तलब सम्बन्धी)

इलाका बैठकी में पढ़कर सुना दिया गया:— बहुत बात चीत के बाद सभा को यह ज्ञान पड़ा इस दरखास्त को निपटारा करने का उपाय सेन्ट्रालाइज करने से आप से आप हो जाता है।

इसलिये सभा ने यह पास किया कि आगे को प्रचारक और पादरी अपने अपने कुल आमदनी को सेन्ट्रालाइज करें और आगामी सेन्ट्रालाइज होने पर पादरी और प्रचारकों का स्केल ठीक कर लेवें और बांटवारा करें॥

Rev. L. Lakra
Kondra
21-3-38

महाशयु

महामान्यवर चर्च कौंशिल के मेम्बरान गर्णों को हम जयपुर स्टेट नीच धार के अयोग्या सब भाई बोहनो वो कर्म चारियों का बहुत२ याशु सहाय

आगे महाशयो आप सभों को निश्चय मालूम है कि जयपुर में सन जाब जब से प्रभु का मराडली स्थापित हुई १९०६ ई० से उसी समय से आज तक जयपुर स्टेट के बाहर हो से मराडली का चरवाहा करना साल मे एक दफा कोई मराडली में एको दफा नहो ऐसा हो ढोलाई चरवाहो के करण से आत्मिक वो लौकिक हालत सब दिन सो दिन खराप होते बढ़ रहा है इस लिय हाजुर लोग जयपुर स्टेट नीच धार मराडलियां धर्म को बातों में अब तक नन्हा बालक हो है यही नन्हा बालक को बोझा उठाना बहुत हो कठीन है। क्योंकि अब तक धर्म का जड़ भीतर तक नहीं धस गया है। इसलिये जयपुर का हालत को देख कर हाजुर लोग जयपुर स्टेट नीच धार मराडलियो को मिश्नफिल्ड में अलग किया गया; और क्या देखा जाता है कि ओरोनमस सब भाई बहिनें पर रखा गया वो कर्म चारियों के उपर सो नीचे लिखात अनुसार मजोर धरनाये देखाया गया है उस के अनुसार यदि उचित बिचार न किया जाय तो मराडली का ठहरना बहुत ही मुसकिल है॥ जैसे

१ शादी फीस अभी ४) रु: लिया जाता है हमों का अर्जी है जैसा पहिले देते आये सो साबीक रहे अर्थात लड़का तरफ १।) रु: सवा रुपया और लड़की तरफ ।=) दास आना

२ स्कुल फीस पहिला क्लास में एक आना; दुसरा में दो आना; तीसरा मे तीन आना; चौथा में चार आना, पांचवा में पांच आना महुंवारी ठहराया गया है इस को भी गरीब हालत के कारण से नहीं दे सकते हैं।

३ मराडली बहार वालों का ग्रहण होने बारे टेक्स ठहराया गया है एकर

रुपया, दो रुपया, वो पांच रुपया तक देने से मण्डली ग्रहण किया जाता है, नहीं तो नहीं।

४ लड़का लड़की जब फंस जाते हैं उन से जो पंच खर्चा लिया जाता है उस को पंच को न दे कर जो चेयर मेन हैं सो ले जाता है

५ जब कोई भाई बहिन या लड़का लड़की मण्डली बाहर होवे हैं तो उन को पहिले शादी देकर पीछे ग्रहण किया जाता है।

६ एक लड़का और एक लड़की आपस में फंस गये थे उन में से एक को अर्थात लड़की को शादी दिया गया और लड़का को मण्डली सजा दिया गया यह तो पादरी का न्याय है वा अन्याय है।। इसी तरह का दूसरा अन्याय सीरनी आदि का कटन बाजार भाव तो ठहराया गया था पर वैसा न करके तलप बचाने को इच्छा से बजार भाव छोड़ कर के दो पैसा के जगह के तीन पैसा काटा जाता है इत्यादि

७ बिना बचन दत्त के खासी खा कर शादी दिया जाता है तो बचन दत्त देने का नियम तोड़ा जाता है वास्ते यहां बचन दत्त नहीं दिया जायगा केवल शादी।

८ इस पादरी को (लौरनीतयुस) हम लोग नहीं चाहते हैं वास्ते नीच-घार के लिये एक अलग पादरी दिया जाय और ऊपर घार नीच-घार से अलग रहे।

९ हम भाईयों का कहना है कि प्रचारक सब को पोस नहीं सकेंगे इस-लिये सभों को पुरा पुरा तनखा होना चाहिये जिस्ते प्रचारक सब-मण्डली में प्रभु का काम करने पावें।

१० सरसापानी स्कुल के हेड मास्टर (मंगलदास लकड़ा को) किनकेल-स्कुल में दिया गया और यहां के लिये हेड मास्टर सुलेमान कुजूर को हेड मास्टर बनाया गया है इस में हम लोग राजी नहीं हैं क्योंकि सुलेमान मास्टर एम, ई, एस ट्रेनिङ्ग पास नहीं किया है इसलिये मंगलदास ही रहे क्योंकि स्कुल को टूटना डर है क्योंकि

सुलेमान मास्टर कई एक लड़कों से स्लेट किताब आदि खरीदने का —
पैसा ले कर कै वर्ष बित जाता है अब तक नहीं दिया है अलावे —
स्कूल घर का मरा मोल पैसा जो मान्यावर एम थोबे साहेब से मिला —
उस को । काम करवा कर अब तक दो रुपया भाईयों को नहीं दिया
है वास्ते सुलेमान मास्टर सरहापानी स्कूल से बदली किया जाय
यह सभों का राय है।

११ हम जशपुर स्टेट नीच घार के कर्मचारीयों का तलप या सहायता पैसा —
१९३७ ई० के जून महिना से इधर एक भी नहीं मिला है और मास्टरों —
का जुलाई का तलप १९३८ ई० के फरवारी को मिला क्या १९३७ ई० के
केवल जुलाई महिना का तनखा १९३८ ई० के फरवारी में आया हम को
लोगों के समझ से बाहर है।

१२ इसलिये मान्यावर लोग यदि उपरोक्त लिखीत सब बातों के अनुसार
उचित बिचार नहीं करेंगे तो महाशयों से हम लोग सभों का आर्जी है
कि कृपा कर मेलप्रेम से हमों को दुसरे मिशन में जिमा दिजीये कहे
की यदि आप लोग उचित बिचार नहीं करेंगे तो मण्डली घेरे २
अलग हो कर दुसरे मण्डली तरफ चली जायगी। जैसे
सरहापानी मण्डली के भाल घर गिरजा आना जाना बांद कर
दिये। इस दरखास का जाबाब जहां तक हो सके बहुत ही जल्दी
देना चाहिये

१३ प्रचारकों का स्केल इस तरह से ठहराया गया है नीच घार के कर्म
चारियों का किसी का दो रुपया किसी का आढ़ाई रुपया किसी का
तीन रुपया ठहराया गया है और उपर घार वालों का किसी का
तीन, चार, पांच, से छः रुपया तक स्केल ठहराया गया है
क्या यह वाजीब न्याय है?

इस का जवाब कृपा कर चोन्हस कुजूर कोरोंगा पो० ओ० तपकरा
जशपुर स्टेट नीच घार सी० पी०

द० मुसा लकड़ा सरहापानी
केम्प बांसबहार ता: ११-२-३८

स० इरिनयास तिर्की खुटेरा पंच
अंगुठे का निशान बिनयास तिर्की खुटेरा पंच

लुथार लकड़ा सरहापानी पंच
जयमसीह लकड़ा बगया पंच
निको द्रिम लकड़ा बगया पंच
तिमथी उराँव केरकेट्टा बगया पंच
अंगुठे निशान इस्राएल टोप्पो बगया पंच

स: जुसफर लकड़ा कोरोंगा पंच

मय अगूंठी समरुवेल एक्का कोरोंगा पंच का निशान

मय अगूंठी रुजुब पन्ना कोरोंगा पंच का निशान

Bhwatsahay Lakra prachark Cherkighaghra

स: इलयाजर खेस्स ठेठटांगर पंच

Nainsukh Tirki Pracharak Barangjor

स. ख्रिस्तीय ग्रिह का रखवाला बंसबहार पंच

प्रेम चन्द्र तिर्की बंसबहार पंच

प्रेम प्रकास रवलखो

मय अगूंठी निशान प्रभु दयाल टोप्पो बंसबहार पंच

द: जोहन तिर्की मौं जा नरेरदाड

प्रेमनतोरका नरेयारडांड

मग्रुभ देन बोवास तिर्की नरेयारडांड

Jahi-Christ Kalyan Minj Narial Danr

Suleman Minj Pracharak Banderchuna

सही-कुन्युजान...

Chonhas Kujur Pracharak ...

11-2-38-

लुथर मिंज प्रचारक सुजोबहार

११-२-३८

Makro Bageya

इमानुएल टोप्पो प्रचारक सराहपानी

Samuel Minj Pracharak Bansbahar

Mathias Minj ... Parhapani

Johan Ekka Kuranga Pracharak Kusumkona

Shimon Toppo Khatgaon

Nathaniel Lakra Karangi

सही मथ्यास तिर्की प्रचारक नरेयारडांड

सही शोमीनन...

सही रिखलाल...

द: पोहन बरवा डरडडांड

द: कुंजल केरकेटा पकरीटोली

मौजा डुडरुडांड

द: प्रेमचन्द भगत पकरीटोली डुडरुडांड

फलू चन्द लकड़ा मौज डुडरुडाड़ पकरीटोली

महामान्यवर,

महाशय चर्च कौंशिल के आंग पाद्री बाबू J J तिग्गा
छोटा नागपुर, आसाम, जशपूर सर्कलस, रांची।

आप को बहुत २ यीशु सहाय।

महाशय,

जशपूर नीच घाट सरहापानी स्कूल के बिशय औ मंडली के बिशय मैं अधिक २ बातें हुजूर महाशय को जनाने चहता हूं। सरहापानी स्कूल सन १९१६ में खड़ा हुआ, औ मंडली १९०७ में, पर अभी दोनों का ब्योरा बहुत २ सोचिनये योग्य है। स्कूल की दशा बिशेष कर १९३३ से गिरी हुई है हुजूर महाशय हम लोगों का तलप मिलने का ठिकाना नहीं होता है कोई महिना III/3, II/4, I/6 रुपैया, और कोई २ महिना एक भी नहीं मिला, केवल १९३६ का हम दोनदासों के लिये जो ठहराया गया था मिला, और अभी १९३७ का भी आधा मह का ठिकाना नहीं है। महाशय एम. ओ बे साहेब से बात मिलता है कि होम बोर्ड से ग्रेंट नहीं, नहीं मिलता है, और यह भी बात मिलता है कि कोई महिना के पंनचैत में निकलता है, कि १९३७ का देन में कोई सूरत से अदा करेगा, अबर १९३६ का जुलाई का तलप ३-२-१९३८ में मिला और अभी कहा गया कि १९३८ का ठिकाना नहीं है। एक लाल पैसा नहीं आया है हम कहां तक देखें, ऐसी दशा में अभी हम गरीब माष्टर गरा धर्मी के राज्य में रहकर दुख, उठाते आते हैं। इधर रोरा पैंचा में तबाह हो रहे है हुजूर अभी १९३८ में स्कूल फीस भी ठहराया गया है। १ला में -) आना २रा में =) आना ३रा. में ≡) आना ४था में ।) आना ५वां मे ।-) आना, अभी तो भाई लोग स्कूल फीस देन, भी देने नहीं सकते हैं और कहते हैं कि हम देने नहीं सकेगें, अलावे हम छोटे नोकर तलप के बिशय, हुजूरों से कहते वा मंगते, करवाई के साथ कह दिया जाता है। हम छोटे नोकर कुत्ते सरीख पूंछ दबा, सिर नीचा कर कैसे हो बैठ जाते, पर तौभी अभी तक दुख उठा खिलपात सह काम कर हो रहे हैं, महाशय आप कंप में रह कर जनते होंगे कि तलप जशपूर के लिये आता है व नहीं फिरभी जशपूर स्टेट की कनुनी के कारण खेत न. टांड़ बंधिक नहीं मिलती है इस हालत में दोनों नाथ, दया सागर काम करना, औ पर वरिस पाना मुसकील होता है। अलावे तलप न मिलने के कारण अभी १९३८ में सरहापानी स्कूल का हेड माष्टर जो एम. ई. ट्रेन था, छोड़ दिया, और अभी दो माष्टर इन साल रखने का बिचार किया गया है। १९३८ के ३-२-३८ में किनकेल पनचैंत ठहराई गई थी, उसमें यह प्रसताव सभा में किया गया, कि कौन २ माष्टर मार्च महिना तक काम कर सकेगा, औ कौन २ नहीं, यह बात डाले जाने से मुझको ही पहले पूछा गया, मैं बहुत ही सोच बिचार कर जबाप दिया कि मैं स्कूल मार्च तक करूंगा, तब सब को यह बात पूछा गया। जबाप मिला कि हम सब काम

P. t. o.

To,
The Rev. M. Kerkhs
for favourable consideration & disposal.
Some time ago if I rightly remember a report was given to the effect that the catechists & teachers of Jashpur field have been paid for the whole of 1937. Please see which is true & do the needful.
[signature]
18. 2. 38

मास्टर द्वारा मार्च महिना तक करेंगें। क्या जाने आगे क्या विचार होता है और तलब मिलता है कि नहीं, ऐसी दशा में आप लोग जशपुर नीच घाट मंडली को छोड़ दे रहे हैं। सो दीन सागर, दया करता, जशपुर नीच घाट के फुलबगान कोई रकम से रखिये, जो चूर चार जो स्वामी के मेज से रोटी गिरती है जिसको कुत्ते खा जीते, वैसा ही चूर चार भी अपने छोटे दास को मिले, जिससे हम अपने जशपुर की दशा, जो धर्म्म की दशा सुधार करने को आप महाशयों से भेजे गये हैं सुधारें, और आगे को भी धर्म्म में दिन दिन हमों का जशपुर नीच घाट मंडली अधिक अधिक बढ़ते जावें,

II महाशय दीन दयाल, जशपुर स्टेट नीच घाट सरहापानी के लिये मेट्रिक पास किया हुआ, इनडो साल हेड मास्टर भेजा जाय, मैं तो ट्रेन फेल हूं। इस कारण मैं अधिक २ निवेदन करता हूं कि कृपा दृष्टि कर मेट्रिक ही मास्टर सरहापानी स्कूल के लिये भेज दिया जाय, जिस्से वह स्कूल का काम औ मंडली का काम अधिक ज्वालन्ता के साथ करने सकें।

III मंडली की दशा भी गिरी हुई है। जशपुर नीच घाट मंडली भी अभी तक सिद्ध नहीं हुई है। भीतर गौर कर देखने से एक दम धर्म्म में पोकता नहीं है, मंडली ओर से जो ठहराया गया देन है सब देन में निहायत कम जोर है। अभी तो मंडली डगमगाती है क्योंकि आप महाशय द्वारा जशपुर नीच घाट मंडली को मिशन क्षेत्र कहते हैं, और स्वावलित मंडली के समान यहां काम, औ कार बार होता है यह गड़बड़ १९३७ से होते आता है पर अभी १९३८ में अधिक से अधिक है। और २ बातें भी है पर अभी सादी ब्याह में ज्यादा गड़बड़ है कोई संसार होने चहते, और कोई २ मंडली दूसरे मिशन में मिलने चहती है सो कृपा नाथ हुजूर महाशय, यह बात जो नीच घाट मंडली में होने वाली है आ सब भाई बहिनों को समझावेंगें, नहीं आने से ठीक मेरे छोटे दिल से नहीं होगा सब भार आप महाशयों का के हाथ में है उगाना, और डुबाना, अभी तो हम लोगों का समझाना भाई, बहिन लोग सुनते, न सुनते सो मेरा हाथ जोड़ बिन्ती है कि जो कुछ मैं अपना मालिक को मंडली की दशा औ स्कूल की दशा लिख को सूचित करता हूं। माफ चहता हूं। और आप महाशय द्वारा आकर सन्तों को धर्म्म की रास्ता में जीवन और मुक्ती है चलावेंगें, और हम सब योशु मसीह में रह दिन २ उजयाला में बढ़ने पावें, कृपा कर यह मेरा लिखा हुआ बात का जबाब मिले,

आई थे हुजूर मालिक हैं

१४-२-३८

आप के आज्ञा धीन दास
सुलेमान कुजूर गुरु छात्र
सेकेन्ड मास्टर सरहापानी मिशन प्राईमरी
स्कूल - डाक घर नरैनपुर।

इलाका में जो दरखास्त पेश किये थे उसका "नकल"

कोन्डरा इलाका पंच के मेम्बरों को हम कोन्डरा प्रचारक पन के भाईयों की ओर से यीशु सहाय।

हम लाचार जनों की नम्रता पूर्वक अर्ज गुजारीश ऐसी है कि :-

१ सक्रामेन्ट के व्यवहार के विषय हमों के बीच अप्रसन्नता हुई है अर्थात हम लोग चाहते हैं कि जैसा और २ इलाकाओं में अर्थात समस्त छोटा-नागपुर और आसाम में सक्रामेन्ट के लिये जो २ चीजें चार्च कौंसिल से ठहराया गया है उन को छोड़ हमों के मध्य में दुसरी चीजें व्यवहार किई जाती है जिसे हम लोग एकदम अप्रसन्न हैं हम लोग चाहते हैं कि जो चीजें समस्त छोटा नागपुर और आसाम में जारी हैं वे ही चीजें हमों के बीच में कायम रहे।

२ हमों के पोरोहित हमों के बीच ऐसे २ काम का दिखलाते हैं कि जो हमारे मुल्क रियासत रिवाज के एकदम बरखेलाप है और हमों के लिये "कुनमुना" जान पड़ते हैं सो जब हमारे पोरोहित हो के घर में ऐसे काम होते हैं तो हम अज्ञान भाईयों को क्या सुधारेंगे। -

आप लोगों के सेवा में -

धर्मदास एक्का, मनमसिह एक्का, मनोहरदास टोप्पो, मरकस लकड़ा, फिलिमोन टोप्पो

ता० ८ मार्च १९३८.

Church Council
Received 18.3.38
Register No. 344
Date 14.3.38
File 5
Reply No.........
Date.........

To
The church council G. E. L. Mission
Chota Nagpur & Asam
Dated Kondra the 14th March 1938.

श्रीयुक्त महामन्यवर महाशय गण

चार्च कौंसिल के मेम्बरों को हम कोन्डरा प्रचारक-
पन के भाईयों की ओर से सादर येशुसहाय।

हम लाचार भाईयों की नम्रता पूर्वक अर्ज ऐसी है कि कृपा कर निम्न-
लिखित बातों पर उचित ध्यान कर निःपक्ष इन्साफ करने की अनुग्रह प्रदान करेंगे।

I जब से पेरिश पाद्री I. Kujur आये तब से "इमली" का सरबत प्रभुभोज में
दाखरस के जगह व्यवहार करते हैं हम भाई लोग अप्रसन्न हैं और ग्रहण नहीं करेंगे।

II फिर जब से पाद्री I. Kujur कोन्डरा आये उसी समय से अपने "पुतो" को गाली
गुप्ता और मार पीट करता है जो साधारण से साधारण भाईयों के जानते में बिल-
कुल बुरा है। जिसको न तो अखृष्टयान लोग ऐसा काम करते हैं न तो खृष्टयान
लोग ऐसे काम करते हैं पर हमारे "पोरोहित" होकर ऐसा काम कर दिखलाते हैं
जो भारी ठोकर का कारण है। जिसका ग्राही एक खृष्टयान बहिन है;
अर्थात "ख़ुसाना येप्पो"।

उपरोक्त के दोनो बातों का इतलाय, हमों ने कोन्डरा इलाका पंच में ढेर किया था
पर इलाका "चेयर-मैन और इलाका पंचों" ने हमों के सच्चाई पर ध्यान न देकर
इस तरह फैसला किया, कि :—

१ भाई अपने प्रचारक पन में प्रभु भोज के व्यवहार के लिये क्या काम में लाया जाय
वह बिचार करके उसका बन्दोबस्त करें और इलाका को जानकारी देवे।

२ कोन्डरा प्रचारक पन के भाईयों ने एक लिखित दोष पाद्री बाबु के बिरुध पेश किया
बात चीत के बाद आपस में माफा माफी किया गया।

हम लोग इलाका के फैसला से प्रसन्न नहीं हैं क्योंकि जो भी हमों ने सच्चाई
बात दिखलाये तौभी इलाका नहीं माना।

III ता० ८ मार्च '३८ को इलाका सभा में पाद्री I. Kujur सरासर "झूठ" बोलने सो
इतना बड़ा पाद्री होकर झूठ बोलता है, इसलिये हम लोग उसके गिर्जे में नहीं
बैठेंगे न उससे सक्रामेंट ग्रहण करेंगे।

IV 1938 ई० के सादी में ढेंगा भाड़ी के एक जोड़े के सादी अंगुठी को पाद्री बाबु फेंक
दिये और अपने अंगुठी से सादी दिये और फिर ले लिये, इस अत्याचार के कारण
वे जोड़े एस. पी. जी. मिशन चले गये, इससे हमारे मंडली का भारी नुकसान है।
इसलिये हम लोग चार्च कौंसिल के मेम्बरों के निकट "अपील" करते हैं
क्यों कि अपील पर ध्यान कर उचित इन्साफ करने के लिए आने की कृपा कीजिये।
जब तक आप लोग आकर सफाई न करें तब तक हम लोग न तो उसके गिर्जा
में बैठेंगे न उसका बचन सुनेंगे न उसके हाथ से सक्रामेन्ट ग्रहण करेंगे।
इलाका में जो दरखास्त पेश किये थे उसका नकल साथ भेज देते हैं।

आप लोगों के सेवा मे —

To

The Secretary, Church, Council
Chotanaggpur & Asam
Lutheran Misscon, compaund
Ranchi

धर्म्म दास एक्का

Markas Lakra
14 - 3 - 38

पुरन प्रभु - टोप्पो

Herwant Toppo
14 . 3 . '38

योहन एक्का

मनमासीह एक्का

मासुरला टोप्पो

शिमोन किन्डो

ख्रिस्तोवित बड़ा

निकोदिम टोप्पो

शिमोन टोप्पो

जीवन एक्का

याकूब किन्डो

ख्रिस्तोफला बड़ा

प्रभु सहाय खेस्स

मसीह दास टोप्पो

प्रभुसहाय टोप्पो

निर्मल किन्डो

सुलेमान किन्डो

प्रभु चरण कुजूर

पौलूस एक्का

महा मान्यवर

महाशय, क्लूमकैट साहेब मिसनारी किन कैलन

को हम जसपुर नीच घाट सरहापानी मंडली का भाईयों का
बहुत २ येशु सहाय,

आगे हुजूर से अर्जी बिनती है के हम लोग १९·६ ई. में
ख्रिस्त के मंडली में याने लुथेरन कलीसिया में रोपे गये वो १९-१४ ई.
में मिसनारी साहबों ने हमों को अनाथ छोड़ के चले गये
हम बेचारे लोग बिन रखवाले भेड़ों के नाईं भटका फिरते थे
आत्माओं के ना सौभाग्य बढ़ती ना घरों का कोई ठेकाना नहीं
था तो हमों के आत्माओं बढ़ती के लिये मनोवाम टैलार
साहेब के द्वारा यहां सरहापानी मंडली में धर्म का
जुती देने वाला पेड़ रोपा वह पेड़ बहुत सुन्दर फूल के
फाल देता आया जिस को देख के भाई बहनों का
धर्म का जुस दिन हो दिन बढ़ती चली आयी वो
घर घर जुती चमकता था वह गाढ़ आना आता जो के
फेंका जाता है वो जुती भी बुझ जाता है।

आगे हुजूर से सब भाईयों का अर्जी है के बिन पंचायट में
प्रचारक के जरिये हाल मिला कि स्कूल को स्टेट के
लिये जमा देने का विचार हुआ यह बात सुन के इस सब भाई
लोग घबरा गये वो हम भाईयों का कहना है कि स्कूल
को स्टेट में जमा ना देना चाहिये जैसा स्कूल को
छोड़ दिये वैसा यहां सरहापानी वो खुटेरा के भाई
बहनों को छोड़ दी जायेगा हम सब कोई दूसरे
मिशन में मिल जायेंगे आज से हम आपसे लोगों
का कोई सम्बन्ध नहीं है ना रहेगा वो गिरजा भी

आप पंचायत का से बन्द किया गया और गिरजा घर भी नहीं बनाते हैं

आगे हुजूर खाविन्द मालिक हैं

१ बा० कलाम जुनाथान लकड़ा २४।४-३८

२ इलियास तिर्की खुटेरा ३ सदरक तिर्की खुटेरा ४ सुलेमान तिर्की

५ प्रभु महाय खालखा ६ रूफुस तिर्की ७ बिलयम लकड़ा

८ फिलीप कुजूर ९ ईमान नुएल लकड़ा

१० कालियान खांखो ११ सिलास लाकड़ा

१२ मूसा लकड़ा सरहापानी १३ याकूब लकड़ा

१४ जोहन खाखा १५ इलियाजर खाखा

१६ मत्ताइस एक्का १७ हिरलकुंवार तिर्की १८ अवदनेगो मिंज

१९ बोवास मिंज

२१ मत्ताकी तिर्की २० रूपचन्द खाखा

२२ फुलचन्द खाखा

२३ पौलुस खाखा

The Gossner Ev. Lutheran Church in Chotanagpur & Assam.

[Mission Estd. 1845—Autonomous 1919]

Officers and members of the Executive.

1. *President :* Rev. J. Stosch,
2. *Actg. Treasurer :* Mr. N. Soy,
3. *Secretary :* ~~Mr. F. N. Topono~~ Offg. Secretary
4. Rev. J. J. P. Tiga,
5. Mr. A. L. Tirkey,

Other members of the Church Council.

6. Rev. W. Radsick,
7. ,, L. Jojowar.
8. ,, S. Kula,
9. ,, S. Bage,
10. Mr. Th. Surin,
11. ,, C. D. Ekka,
12. ,, P. Soy.
13. ,, D. Tirkey,

Incorporated under Section 21 of Societies Registration Act of 1860 on July 30, 1921.

G. E. L. COMPOUND.
RANCHI. (BIHAR) INDIA.

No. 1509/40/F. 5. Dated the 29.vii.1940.

Rev. Laurentius Lakra,

Kondra.

Manywar Rev. L.Lakra ko Yisusahay.

Main ap ke pas September mahine ka Girja pari hej deta hun. Ap President ke chithi se malum kiye honge.

Ashra rakhta hun ki ap log sab achhe honge aur sab kam Ishwar ki daya se thik chal rahe honge.

Shiksa Class men bhent hone ki ummed rakhte hain.

Ap ka Bishwast,

J. Tiga

Kondra Ilaka

No. 4

इचकेला जशपूर स्टेट. सी.पी.
२९-४-४०.

श्री श्री १०८ श्रीयुक्त मान्यवर सेक्रेटेरी साहब लुथेरान चार्च रांची।
आप को हमों की ओर से बहुत २ यीसुसहाय।

आगे बात ऐसी है कि हम लोग रांची से १२.४.४० को घर पहुंच गये, क्योंकि हेड सुपरभैजर १४.४.४० को इचकेला स्कूल देखने वाले थे, जिसके कारण बहुत तकलीफ और दुख उठा कर भी पहुंचना ही हुआ। पर अफसोस कि हेड सुपरभैजर को पादरी साहब कोण्डरा से १३ ही तारीख को टिपकापानी लेगये, और उधर ही उधर किनकेल तक पहुंचा रखे,

इस समय भी हम जशपुरियों के स्कूल बिषयक बात अधूरा ही रह गई, जिससे हम लोग निरास पर निरास हैं कि हमों को कोई भी नहीं पूछते हैं, हमारे पादरी साहब को भी ख्याल नहीं कि इचकेला स्कूल बिषयक बातें बहुत जरूरी हैं अगर वे उनको कोण्डरा से इचकेला पहुंचा देते, तो हम लोग इधर जानते कि क्या करना होता। क्योंकि इस समय स्टेट भी मुलाकात के लिये तरस रही है। सो इनका इचकेला ना पहुंचना हमों के लिये ज्यादा दुखद है, अब हम लोग क्या करेंगे, रांची जाने का क्या खबर स्टेट को देंगे, हम लोग लाचार के लाचार ही हैं, अगर हजूर लोग स्टेट को जवाब नहीं देंगे तो हमों को स्टेट से और भाई लोगों से लाजीम है, क्योंकि हमों का पादरी भी आज तक इस बिषय में हमों को न कोई राय सलाह देते ना बात चीत करते, ना हमों का लिखा पढ़ी में सही देते हैं अभी तो मानो हम लोग स्टेट तरफ हैं और पादरी मानो उसके बिपरीत हैं. और यह अच्छी बात नहीं है, उनको तो उलटी भाई लोग दिवान साहब के पास पहुंचा देते हैं जैसा १७.३.४० को हुआ था, दिवान साहब उनको नहीं पहिचानते थे, इतना बरस स्टेट अन्दर काम करने पर भी ब्यवहार ऐसी है तो ऐसों से कहां तक कोई काम हो सकती है।

इस लिये हजूर लोगों के पास फिर भी बिनय किया जाता है कि इस स्कूल के लिये यथोचित बिचार किया जाकर, स्टेट को जल्दी भेजा जाय अब हम लोग कितना चिल्लाते रहेंगे, आज हम लोग नगर जा रहे हैं अफिसरों को स्कूल बिषयक क्या खबर बतलावेंगे, हम लोगों को बड़ा मुसकिल लग रहा है सो हम लोगों का दोहाई हजूर लोग नहीं भूल जायेंगे क्योंकि हमलोगों का दुख सुख पहुंचाने वाला कोई नहीं है।।

सेन्दे हजूर मालीक और मा बाप हैं, भूल चूक हो तो
माफ किई जाय

सुपर भैजर का चिट्ठी जो १२-४-४० को मेरे पास पहुंची सो भेजा जाता है।
A. Kujur

सही. आप के बिश्वस्त - A. Kujur Ichkela
बाना बास टोप्पो
Barnabas
Raiipath

मूसा तिरकी बारोकरिया
२९. ४. ४० ई.

सेक्रेटरी साहब आप को फिर मैं कई एक बातें सुनाता हूं
जशपुर स्टेट की हालत इस समय बेसक दूसरी है, याने जब से
पेट्रोल साहब यहां आये हैं, अब प्रजा गणों की भलाई निमित्त
बहुत चिन्ता किया जा रहा है।

जैसे गांव सफाई के लिये स्टेट से सिपाई दिया जाता है
गांव में बड़ी तालाब बनाने को मदत स्टेट करता है
बेठ बेगार एकदम मिटाया गया,
अत्याचार अनाचार भी उठाया गया
खेर चरी माफ किया गया,
स्कूल के लिये बहुत चिन्ता किया जा रहा है [हुई है
1950 जुलाई से यहां के स्कूलों में बिहार कोर्स की जारी मंजूरी
लुथेरान ख्रिस्तानों पर भी बहुत मेहरबानी का समय है
अब सोच कि नगर में लुथेरानों की संख्या सैकड़े तक हो गई है
और वहां के स्कूलों में भी कितने बिद्यार्थी पढ़ते हैं जो लुथेरान
हैं पर वे बिन चरवाहे भेड़ों की नाई रहते हैं, इन्तिजाम
करने वाले कोई नहीं हैं, पादरी वहां जाकर सिर्फ नेग गुजरा
करही लौटते हैं। नगर जशपुर में हमों का पहला हक तो है पर
करने वाले कोई नहीं है।

इस समय एस. पी. जी. मिसनरी, जो पादरी प्रचारक भी
यहां आये थे, जो भी उनके केवल चार ही पांच ख्रिस्तान हैं
पर वे भारी नकसा बना के गये हैं, हो सकता है पेट्रोल
साहब से धर्म के कामों के विषय बहुत बात चीत हुआ है
मेरे बिचार में ऐसा बुझाता है कि ऐसे समय में हमारे
कौन्सिल मेम्बरों में से भी कोई २ आते तो अच्छा होता,
बहुत २ बातें हैं पर अब इतना ही मैं अन्त करता हूं

आगे शुभ - आप का Aledici Kerjur
Ietikelai

5

Kondra
15. 8. 39

Mamyarwar President Saheb Ka
bahut 2 yishu sahay.

Do bishayonke kagaj apkepas bhejraha huin. Asha hai ki Bhulchuk Deri hone ka maph karenge jisko ap khud jante hain.

I Rachna karinthpatrika

II Gharbhara par Kondra Ilaka ki ray.

Bahut yishusahay
Premse apka bishwast
Sewak!
Rev. L. Lakra Kondra
15-8-39

5

File No. ...

Manyawar President ko yishu sahay.

August mahina ke gharbandhu men jo Gharbhara ke bishay likhi gayi hai aur jiska ek mahina ke bhitar uttar milna hai

Kond Ilaka se Station Comity + Ilaka executive comity ~~ne~~ 9.8.39 ko baithi thi aur bahut bat bichar kar yah phaisla ki hai jo ap ke pas bheje ja rahe hain.

Gharbhara:- Karj Katni + Station Comity sabhase yahi ray pragat hoti hai ki Ghar kiraya Harek Rs 10/- men /4/- mahinwari liya jawe -

Rev L. Lakra
Chairman
Sd. - Daud minj
" Naiman Toppo.
" Eliazar Toppo.
" Jusaph Toppo.
" Johan Toppo

9.8.39

Kondra

To,

The Rev. Laurentius Lakra,
G. E. L. Church, Kondra.

Dear Rev. Lakra,

The enclosed copy of the complaints is herewith sent to you with the request that you will kindly send your explanations on them at an early date. The C. C. Executive wants this explanation.

We are asking the Burbdanr Mandli why they do not centralise. They must centralise their income.

With Yishusahay,

Yours sincerely,

Acting President.

Copy.

Wah hujur janawali Porohit mahasay, Church Council ko Purbdanr Mandli ke bhai bahinon ka yishusahay.

Darkhast.

Age Purbdanr Mandli ke bhaiyon ka arj o niwedan hai.

1. Bat hai ki Purbdanr Mandli men tarikh 13.8.39 ko Ilaka aya tha. 1 Laurentius Padri Babu Chairman, 2 Johan Toppo, 3 Yusaph Toppo khajana janch karne ko aye the. Girja ghar men 11 baje girja b st hone se usi ghari sab bhai bahinon ko rok kar panchait kiya.

2. Par ki bat jo khajana ka nikala so Padri Babu prexx premta se bat nahin par ki bahut kridhta ke sath bat karne laga is karan se girja khas ghar men ragar aur jhagar bahut jor se huwa. Yahan tak ki bahinon ne dar ke mare bhag gaye. Isliye Purbdanr Mandli ke bhai o bahin gossa ke karan se Ilake samne Laurentius Padri Babu ko bol diye ki ap ke hath se Prabhu Bhoj nahin lenge.

3. Mandli ka kahna hai ki dusra Padri Babu hona chahiye kyonki 12 barsh Kondra men kam karna ho gaya. Is bat ka phaisla jaldi kiya jay. Ainde hujur malik hain.

1.	Sahi	Silas Toppo, Purbdanr, ba khas.
2.	,,	Illegible.
3.	,,	Stiphan Ekka, Ba khas.
4.	,,	Manohar Barwa, Purbdanr, Ba khas.
5.	,,	Suleman Toppo, Barwa.
6.	,,	Ishwarsahay Toppo, Purbdanr.
7.	,,	Adam Barwa, Purbdanr.
~~xxxxxNabinxBaba~~,		
8.	Sahi	Nabin Baba, Purbdanr.
9.	,,	Patras Tirkey.
10.	,,	Habil Kerketta.
11.	,,	Salomi Tiga.
12.	,,	Phanuel Khess.
13.	,,	Johan Toppo.
14.	,,	Nansidh Barwa.
15.	,,	Charles Lakra.

Purb Danr Mandli ke bhaiyon ke pas.

C/O Silas Toppo, Burbdanr.

From :-

The Rev. J.J.P.Tiga,
Acting President,
G.E.L.Church, Ranchi.

Randhi, the 2nd October, 1939.

Purubdanr ke pyare bhai bahinon ko G. E. L. Church Council ke Karjkarini ka Yishusahay. Ap logon ko malum howe ki ap logon ki chitti mili. Ham log ap logon ki baton par bichar kar rahe hain.

Ap logon ke chitti se malum huwa ki ap logon ka khajana janch karne ko Ilaka Sabha gayi thi. Ap log apne Khajane ke bishay report yahan bhejiye aur likhiye ki Centralise karte hain ki nahin. Jabab jaldi ana chahiye.

Age Shubh,

Ap logon ka Bishwast,

Acting President.

मान्यवर, सेक्रेटेरी चार्च कौंसिल ओ
प्रेसिडेन्ट को येशुसहाय;

आगे आप के निकट

तारिक ६वीं सेप्टेम्बर १९३९ को; इलाका मेम्बर और प्रचारकों की समलित बैठकी का एक बिशय पर जो फैसला हुई जानती के लिये भेजते हैं।

बैठकी में निम्नलिखित मेम्बर हाजिरथे :—
इलाका मेम्बर गण :— Rev. L. Lakra, बाबू अबादिया कुजूर, दाऊद मिंज, हबिलबड़ा; बाबू जोहन टोप्पो; इलाजर टोप्पो, युसफ टोप्पो, नैमन टोप्पो।
प्रचारक गण :— कासम तिर्की; फाबेरुस मिंज, प्रभुदास तिग्गा, निर्मल तिर्की; फिलिप टोप्पो, जोहनबड़ा कोमल टोप्पो, प्रभुसहाय कुजूर.
साधारण भाई :— बरनाबास टोप्पो।

सेन्ट्रालीजेशन पर गम्भीर तौर से सोच बिचार किया गया, और यह पाया गया कि इलाका में सेन्ट्रालीजेशन बड़े आनन्द से अच्छी तरह से होता है पर पूर्बा डांड़ जो एक मराड़ली है जहां पर पंच गिर्जा होता है सेन्ट्रालाइज़ नहीं करती है। जिसके लिये इलाका अपने करोवाई पर बिलकुल असामर्थ हो आप के पास यह जानती करवाई के लिये भेजते हैं।

Rev. L. Lakra
Ilaka chairman
Kondra
6. 9. 39

सेक्रेटेरी. Johan Toppo
Hathabhanri
The 6th Sept. 1939.

Return 13.12.39

587

26

प्रभु में पियारे पुरोहित महाशय मान्यावर पर्च कौंसिल को हमों के पुरबडाड़ माराडली के भाई बहिनों का पीभु सहाय

(१) आगे आप लोगों का दुसरी दफा भेजा हुआ चिट्ठी का जबाप मिला और पंच बिचार कर के पुरबडाड माराडली की आमदानी इलाका में नोवेम्बर १९३९ से जमा करतें हैं पर दुसरे माराडली के अनुसार पुरबडाड़ माराडली का स्केल नहीं ठहराई जाती है। और माराडली के समान स्केल ठहराई जावे।

(२) पुरबडाड़ माराडली के भाई बहिनों का निवेदन है कि औशिशात्युस पादरी बाबु छोड़ का इजाजत मिले कि दुसरे इलाका से पादरी बाबु आकर कारें काम करें क्योंकि बहुत स्नान वाले हैं जो प्रभु भोज खाने के लिये लालासित हैं तथा दृढ़ी कारण को बिबाह हैं इन दुःखों को दूर करने के लिये इस का फैसला कौंसिल से जल्दी किया जाय।

(३) आगर जल्दी न होवे तो कौंन्सिल से पुरबडाड़ माराडली के लिये एक बिशेष हुकुम नामा कागज दिया जावे कि जिस्से उस कागज को लेकर दुसरे इलाकी पादरी बाबु के पास जाकर स्नान दृढ़ी कारण बचन दान बिबाह करावें आइन्दे हुजुर मालिक है।

ता० २०-११-१९३९

सेक्रेटेरी - बिलाश टोप्पो पुरबडाड़ बरख
Nayman Tirki Purubdar Taralaya
Nasri Liga Purabdana Kanaidulu
नबीन बरवा

नोकोदीमटोप्पो - समेल टोप्पो
ईश्वारसहाय टोप्पो गोब्रल एक्का
पानु वेनटोप्पो निशाम टोप्पो

पुयान प्रसाद कुजुर

अनुवेर खेस्स

मनासित बरवा

फिलीमोन एक्का

R. 13.12.39.

498

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G. E. L. CHURCH
IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.

Memo No. 1028/39/F-5. Dated, the 7th November, 1939.

From :-
N. Topno Esqr.,
Secretary,
G.E.L.Church, Ranchi.

To,
The Rev. L. Lakra,
G.E.L.Church, Kondra.

Manyawar Padri Babu ko yishusahay.
Ap ki chitti mili. Council ka phaisla nimin likhit anusar hai :-

6th November, 1939, Item No. 2.

" Jashpur Schools :- Jashpur Schoolon ke sambandh men Padri L. Lakra ka report hai ki State Schoolon ko lene chahti hai. Roman School liye ja chuke hain. Yadi C. C. manjur kare to Lutheran School bhi liye jawen. Bad bibad ke bad phaisla huwa ki kam bichar kar kiya jay aur is ke liye Mr. Klimkeit ka opinion bhi invite kiya jay."

Mandli ke liye C. C. ka phaisla jo Mandli ke liye bheja gaya hai so is prakar hai :-

26th October, 1939, 3 p. m. Item No. 1.

" Purbdanr Mandli :- Purbdanr Mandli ki chitti parhi gayi. Bahut tark bitark ke bad phaisla huwa ki Church Council lachar hai wah kisi Mandli ke dukh ko dur karne ke liye chinta nahin kar sakti hai jab wah Mahasabha ke Centralization sambandhi hukum ko palan nahin karti hai. So Purbdanr Mandli pahile apne khajane ko Ilake men Centralize (jama) kar lewe tab Church Council un ke dukh ke bishay age x soch bichar karegi. Purbdanr Mandli ki pahli chitti ka nakal Padri ko bheja gaya hai aur Council us ke jabab ke asre men hai. Tab tak Mandli se asha ki jati hai ki wah khajana ko Ilake men jama karegi."

Ap ka bishwast,

N. Topno.

Secretary,
G. E. L. Church.

" Matters arising out of the Minutes :- Purbdanr Mandli ke sambandh men Padri L. Lakra ka explanation pahunch gaya hai. Wah C. C. ke samne parha gaya. C. C. use note kar rakhti hai aur drirha kar kahti hai ki 26th October ka phaisla jo Mandli ke liye hai so bahal rahega."

R 13.12.39.

3 Jr

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G. E. L. CHURCH
IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.

Memo No. 1029/39/F- 5.   Dated, the 7th November, 1939.

From :-
N. Topno Esqr.,
Secretary,
G.E.L.Church, Ranchi.

To,
The Purbdanr Mandli,
Kondra.

Prabhu men piyare Purbdanr Mandli ke bhai aur bahinon ko hamari or se bahut bahut yishusahay pahunche.

Ap logon ki dusri chitti kai din pahile hi pahunch gayi hai aur us ke bishay bichar bhi ho gaya hai. Phaisla niche diya jata hai. Ap log Mandli amdani ko Ilaka Panch men jama kijiye tab jo kuchh ap logon ka kahna hai khule man se boliye. Us ke pichhe ham log dekhenge ki ham logon ko kya karna hai. C. C. chahti hai ki harek Lutheran Christan Mahasabha ke hukum ke adhin rahe.

26th October, 1939, 3 p. m.   Item No. 1.

" Purbdanr Mandli :- Purbdanr Mandli ki chitti parhi gayi. Bahut tark bitark ke bad phaisla huwa ki Church Council lachar hai wah kisi Mandli ke dukh ko dur karne ke liye chinta nahin kar sakti hai jab wah Mahasabha ke Centralization sambandhi hukum ko palan nahin karti hai. So Purbdanr Mandli pahile apne khajane ko Ilake men Centralize (jama) kar lewe tab Church Council un ke dukh ke bishay age soch bichar karegi. Purbdanr Mandli ki pahli chitti ka nakal Padri ko bheja gaya hai aur Council us ke jabab ke asre men hai. Tab tak Mandli se asha ki jati hai ki wah khajana ko Ilake men jama karegi."

Ap logon ka bishwast,

N. Topno.

Secretary,
G. E. L. Church.

R 13.12.39

File

True Copy 5. Kondra. Dated 4th Nov 1939

कोन्डरा इलाका की बैठकी।

आज तारीख २४. १०. ३९ को कोन्डरा इलाका की बैठकी इचकेला गिर्जा घर में हुई जिसमें निम्न लिखित मेम्बरगण हाजिर थे। १, Rev L. Lakra, २, आबु दाऊद मिंज, ३, युसफ टोप्पो, ४, नैमन टोप्पो, ५, इम्बिल लड़ा, ६, आजादियाह कुजुर, ७, जोहन टोप्पो, ८, बरनाबस टोप्पो,

I <u>चार्च कौंशिल के २, १०, ३९ की चिट्ठी का कैफियत,</u>

१, कोन्डरा इलाका पंच की ओर से आप के २, १०. ३९ की चिट्ठी (Explanation of the Purubdand mandli) अनुसार बहुत धन्यवाद कि आपने सुसमय में हमों के पास भेज दिये। जिसका कैफियत आपके कारवाई के लिये नीचे लिख भेजते हैं।

(a) १९३९ के मार्च महिना में जब खाखा साहेब (प्रिसिडेन्ट) कोन्डरा आये हुए उस समय पुरुब डांड मराडली के निसबत लड़ांग तिर्की से बातचीत किये, और मान्यवर खाखा साहेब centraligation के बिषय लड़ांग तिर्की को बहुत भिड़के तब लड़ांग करार किये कि अबसे आगे को आमदनी सेन्ट्रलाइज करेंगे पर किये नहीं।

(b) १९३९ के ११+१२ वीं जुलाई के प्रचारक पंचैत की बैठकी की ओर से दो प्रचारक फिर भी दूसरी बेर सेन्ट्रालाइज के बारे समझौता के लिये पुर्ब डांड मराडली भेजे गये १, प्रचारक पाब्लुस मिंज, २, प्रचारक जोहन टोप्पो। फल कुछ नहीं।

(c, कोन्डरा इलाका की कार्य्य कारिणी सभा की ता: ९: ८. १९३९ के बैठकी के फैसलानुसार निम्नलिखित मेम्बरान को मिशन चुने जाकर पुर्ब डांड मराडली की बातों के लिये भेजे गये।

१, Rev. L. Lakra २, युसफ टोप्पो, ३, जोहन टोप्पो,

(d) खजाना जांच करने के लिये नहीं पर उनको समझाने के लिये गये कि वे अपना मराडली आमदनी सेन्ट्रालीजेशन के लिये लावे।

२, २३वीं अगस्त १९३९ के मंगल समाचार बचन के अनुसार उनको समझाते हुए बिन्ती के साथ बैठकी आरम्भ हुई। बैठकी में सेन्ट्रालीजेसन के निसबत बहुत कुछ बातचीत होने लगी और वे सेन्ट्रालाईज करने में साफ इनकार कर दिये।

उनमें से एक भाई मड़ांग तिर्की कहने लगे कि जो हो चार्च कौंशिल हमों को क्या कर सकता है, इलाका भी हमों को कुछ नहीं कर सकता है। यह हमों का मराडली है हमलोग जो चाहें सो कर सकते हैं। इन्हीं बातों पर पादरी बाबु मड़ांग को कुछ बात कहे और मड़ांग कुछ भाईयों के साथ बाहर निकल गया। बचे भाईयों के साथ मेल प्रेम से बातचीत कर बिन्ती के साथ बैठकी खतम किये।

३, दरखास्त के नाम :- ये नाम जो दरखास्त पर सही दिये गये हैं सो सब साधारण भोले भाले भाई लोग हैं, पर जो मराडली में उत्पात (गोलमाल) मचाने वाले हैं सो दरखास्त पर छिपे हुए हैं :- वे ये हैं :-

१, दाऊद मिंज माष्टर (E. P. D. B. School Kombdaur (Secy.)),

२, मड़ांग तिर्की ताराटोली (हेड पंच सभापति) पर
| मड़ांग तिर्की अभी हाल में उसको पंच से निकाल दिया गया है उसके मतवालापन से।

३, नेमन तिर्की ताराटोली,

४, नासरी तोगा कोन्दुवा,

५, शिलास टोप्पो पुर्ब डांड़।

४, उपरोक्त बातों की कैफियत अनुसार इलाका पंच कोन्दरा आशा रखती है कि आप लोग उचित बिचार कर कोन्दरा इलाका के भलाई के लिये चिन्ता किया करें॥

Chairman
Rev. L. Lakra
24-10-39

Johan Toppo
Secy.
24-10-39

R 13/12/39

D 12

1

श्री द्वि श्री मान्यवर पाद्री जे. स्तोश साहब
प्रेसिडेन्ट छोटानागपुर
लूथेरान कलीशिया।

महाशय

हम लोगों की अर्जी यह है कि पाद्री लौरिन्तयुस लकड़ा को अब यहां ११ वा १२ बर्ष हो गया इस लिये उसको एक बेर बदली किई जावे।

हाल में जो इलाका पंच बने हैं उन से भी हम लोग राजी नहीं हैं।

तारिक १०. ३-३८.

आप के आश्रित लूथेरान
भाई लोग

नैमान तिर्की पुर्वडांड़ बा: स्व:
प्रमन. तिग्गा. पुर्वडांड़ बा: स्व:
सकलु किन्डो बिरकेरा बा: स्वा:
प्रेमचन्द लकड़ा चिरोडांड़ बा: स्व:
कुवांर बड़ा चिरोडांड़
मसीदास टोप्पो कोनडरा बा: स्वा:

नैमान एक्का कोन्डरा बः खाः

धर्म्म दास एक्का कोन्डरा बः खाः

प्रभूसहाय खेस कोन्डुरा बाःखाः

नैमन खेस्स. कोन्डुरा. बाः खा.

गः जीमांजीगा - तोरडी

गाः गमाल्यमा - बाः माः

साः - नैमन टोप्पो, बः माः उोड़ना

साः— खिस्तोपाल बड़ा कोन्डरा बाःखाः

जीवन एक्का कोन्डराबाःखाः

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G. E. L. CHURCH
IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.

Memo No. 1326/39/F. 5. Dated, the 16th December, 1939.

The undermentioned document is forwarded to the Church Supervisor for information with the request to take necessary action.

Actg. Secretary,
G. E. L. Church.

Extract copy from the Minutes ofthe C. C. Executive Commtt. held on the 12th December, 1939 at 3 p. m.

Item No. 26.

" Application from Purbdanr :- Purbdanr Mandli ke log Padri L. Lakra ke birudh ujur karte hain aur apne Mandli ki Purohitiya sewakai ke liye bandobast chahte hain. Phaisla huwa ki :-

Church Supervisor Prabhu ke Janm Parbb ke pichhe wahan jawe aur awashyak bandobast kare."

The Gossner Ev. Lutheran Church in Chotanagpur & Assam.

[Mission Estd. 1845.—Autonomous 1919.]

G. E. L. COMPOUND.
RANCHI. (Bihar) India.

Secretary: F. N. TOPNO Esqr. No. 1332/39/F. 5 Dated the 16th Dec. 1939.

Ag. Secy :- Rev. J.J.P.Tiga.

To,

The Rev. L. Lakra,
G. E. L. Church, Kondára.

Manyawar Padri bhai ko yishusahay.

C. C. Executive ki 12.12.39 ko faisla ke anusar Church Supervisor Rev. Jojowar Purbdanr Mandli ki baton ka bichar karne ko ja rahe hain. 27th December ko Gumla pahunchenge. 28th ya 29th Dece., 1939 ko ap wahan meeting thahraiye aur ap 27th ko un ko le jane ko Gumla aiye. Un ki arji hai ki ap 28th Dec. tak Gumla men us ke liye thahriye sayd kisi golmal se 27th ko agar we Gumla na pahunchne sakenge to we 28th Ko jarur pahuchne ki asha rakhte hain.

Age shubh,

J J P Tigā

Actg. Secretary.

Papers connected with the Purbadam-
case hand over to Rev. L. Jojowar
for necessary action 5 in
number

L. Jojo
13.12.39

Kondra

C. C. निकट बिनय पत्र लूथेरान चर्च रांची को ।

पादरी इम्मानुएल कुजुर कोन्डरा की ओर से ।

कोन्डरा १४-४-३२

महाशय गरा

आप लोगों को मेरा योशुसहाय।

हाल ऐसा है कि पादरी L. Lakra और युसफ टोप्पो रांची महासभा से लौटकर यह खबर फैला दिये है कि इम्मानुएल कुजुर पादरी को बदली वा छुट्टी हुई है।

मैं यह मालुम किया हूं कि कोन्डरा प्रचारक पन के बघोंड़ा गुड़ही टोली, दुरक टोली, और वेहरा टोली वालों को मान्यवर पादरी L. Lakra बिलासी मिस्ट्रेस्स और हेरबन्त टोप्पो ने अपने राय में लाके C. C. के निकट चार सिकायतें पहुंचाये हैं था जिस के वजह से C. C. मुझ को बदली करती है वा छुट्टी देती है।

मैं C. C. को यह बात भी जनाता हूं कि मान्यवर L. Lakra मेरे ऊपर दोष आरोपण करने की कोशिश में बीते जून १९३० में जब मैं बदली होकर आया तब ही से लगे हैं और पहिली चढ़ाई आप ने मुझ पर बीते नोवेम्बर महीने में जब C. C. कमिशन कोन्डरा आई थी तब एक जलसाजी चिट्ठी जिस को वे आप खुद तैयार किये कमिशन के सामने प्रगट किया।

इससमय लोगों को उसकाया और जो २ बातें चर्च कौंसिल में पहुंचाने योग्य नहीं हैं उन को पहुंचवाया।

वे हम बुढ़ा बुढ़ी पर गर्भ पात का दोष आरोपण करते हैं।

मेरी बहु को फुसलाकर मेरे घर में बिगाड़ करने के लिये और मेरे काम को बिगाड़ने और मेरे इज्जत, मर्याद की हानि पहुंचाने वास्ते वे आप लग गए और अपनी स्त्री, बिलासी मिस्ट्रेस और हेरबन्त टोप्पो को भी लगाये।

नीलमनी किस्पोट्टा मिस्ट्रेस के गर्भपात किये हुए का आंदोलन थाने तक पहुंच गया है बिनासाबित की बातों का ये लोग क्यों ऐसा करते हैं।

मैं बहुत अफसोच में हूं और निवेदन करता हूं कि आप लोग कमिशन भेजकर ठीक जांच करिये और सान्त कीजिये।

P. T. O.

मंडली बिभाधक काम मे भी जिस को मैं पहली सुधार बदली वास्ते करने लगता हूं चलने नही देते। इन का मतलब ऐसा ही है कि आप की बदली तो किंकेल हो गई है, पर आप नहीं गए हैं इसी विचार से कि मुझ पर दोष लगाकर बदली वा छुट्टी कराके आप यहां रह जावे।

एक जाल करने और मेरी बहु को फुसलाने बहकाने की कोशिश करने की एक कपी कि जो मेरी बहु का लिखा हुआ है नकल कर भेजता हूं।

आप लोगों का दासानुदास
Immanuel Kujur

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

Church Council
Received 25.3.38
Register No 360
Date 23.3.38
File 5
Reply No.........
Date.........

Rev. J. Kujur's application for grant or transfer to Jashpur Upar Ghat. Int. 16.5.

C. C. निवेदन विनय पत्र.
पास्टर. जाई. कुजुर-की ओर-से

Kondra the 23rd March 1938.

महाशयगण.

सविनय. मैं-अपनी-दुःख-की-बातों-को-जताता-हूँ कि-सहानुभूति-होय. और-सुधार-होय.

मैं-कोन्डरा-शिविल-पेरिश-का-पास्टर-होकर-यहाँ-आया और-अपना-दिन-बहुत-तकलीफ-के-साथ-व्यतीत-कर-रहा-हूँ और-तकलीफ-बढ़ती-जाती-है, तकलीफ-हो-रही-है. इस-का-कारण तो-आर्थिक-घटी-है- जिस-से-अन्न, वस्त्र-ओ-बाल-बच्चों-का-शिक्षा-खर्च-देना-निहायत-मुश्किल-हो-गया, मैं महासभा-जा-नहीं-सकता हूँ-न-कोई-डेलीगेट-भेज-सकता-हूँ सब-से-अधिक-उदासी-होती बात-मुझ-में-यह-है-कि-पवित्र किताबें-बांटने-के लिये-धार्मिक खरीदने-नहीं सकते-हैं।

मैं सोचता-हूँ-कि-C.C. इस-~~बात-को~~ तकलीफ-को जिस-को मैं-भोग रहा-हूँ-अच्छी-तरह-समझती है. और-चिन्ता-करनी चाहिए-था-कि-तकलीफ-घटाया-जाय।

9-3-38 को-इलाके-सभा-के-नाम-में-एक-जोइंट-मिटिंग कोन्डरा शिविल-पेरिश-और-ऊपर घाट-की-हुई थी, जिस में-मैं कठिनाइयाँ जिस-को-मैं भोगता-हूँ-बात चीत-हुई थी, कोन्डरा-शिविल-पेरिश-पंचों-ने-साफ-कहे-कि-एक-पास्टर-के-जगह-में-दो-पास्टर- जीना-चला-नहीं-सकेंगे, आप-को-तो आज्ञा-से-भी-काम-दिया-गया और-आप-पर-रुपया-का-बोझ-पड़ा-है।-बहुत-तकलीफ-होगा-इस को हम-लोग-जान लिये-हैं. इसी-लिये-कोई-पंची-को-जिस-को-C.C. यहाँ-भेजती थी-हम-लोग-आने-नहीं-दिया-और-यदि-हम-लोग-पहिले जानते-कि-आप-को-C.C. भेज रही-है-हम-लोग-आप-को-आने-नहीं देते। आप-के-तकलीफ-का-C.C. जवाबदेही-है-और-वही उस-को घटाने-सकेगी। मैं-ने-सभा-में-कहा-कि-निश्चय-तकलीफ-तो-मैं-भोग रहा-हूँ-पर-इस-का-दोष-मैं-किसी-पर-नहीं-लगाता-हूँ-आप-लोग-मेरे-मुँह-से-कभी-नहीं-सुने-हैं। मैं-उन-को भजन-संहिता-१२१-स्मरण-करवाया-और-कहा-परन्तु-भी-हो-तौभी-मैं-किसी-को नहीं-बताऊंगा।

आप-लोगों-से-मेरी-अर्जी-है-कृपा कर-मुझ-को-आर्थिक-घटी-की मुश्किलता-से-बचाइये।

मैं-आप-लोगों-को-दो-उपाय-~~ब~~ दिखाता-हूँ

I. ग्रांट-दीजिए.

II. कोन्डरा-अपनी-पहिली-दशा-में-रखा-जाय-और-जशपुर-में-केवल एक-नेटिव-पास्टर-नहीं-वरन-दो-से-काम-कराया-जाय- जैसा-पहिले-था-~~जै~~ जशपुर-का-सादी-लेसन-पेश-है-मैं-आप

P.T.O.

नहीं-करना-चाहता-हूं-नवाबूर-में-काम-करने-का-बन्दोबस्त
वैसा-ही-किया-जाय-जैसा-पहिले-था- नीचे क्लास के-लिये-एक
मास्टर- Kinkel में- और-ऊपर क्लास-के लिये-एक मास्टर
कोरडशा-में- जो-कोरडशा-सिविल पेरिश-का-भी-मास्टर-होंगे
अधीन-कोरडशा-इलाका-रहे-जैसा-पहिले-था-इस-प्रकार
नहीं-होने-से-कोई-बड़ा-काम-जो-करने-की-इच्छा-किई
जायगी-किई नहीं-जा सकती है-जैसे- कोरडशा-में- M.E.
School-का-होना-अच्छा-समझा-गया- और बिल्डिंग
बनाया-जा-रहा-है. कोरडशा-बने-चाहती-है-उसमें-बोर्डिंग
मत-हटाइयो।-

आप-का- आज्ञाधीन-दास-

J. Kujur

नोवेम्बर ३-११-३६ पाद्री-ने-पलंग के पास यही भी कहा
कि बुढ़िया की सेवा मत करना क्योंकि तुम-को-भी-बीमारी
पकड़ेगी। ता. ७-३-३८ जब मैं अपनी लड़की के खोज
में निकली तब मैं पादरी के घर गई मैं पूछी कि मामो साब
यहां-पर-आई-है? तब उन्होंने कहा-नहीं-आई पादरीआइन
ने कही कि मैं नगरवाली-को-अपनी-मा-के समान-जानती
हूं तुम जाकर उनको भी बहुत-तकलीफ-देना, ~~बुढी~~
बुढ़ी बुढ़ी-ने बच्चा को चुराकर चुपके से नगर भेज-दिये
तब मैं कही कि अच्छा मैं ~~काली~~ नगर जाकर बच्चे को
ले कर चली आऊंगी क्योंकि-मेरे को दूसरे दिन
खजोड़ी जाना-था काम सीखने जाना-था पर नहीं
जा सकी-और-कही-कि-लड़की-को-मत-देना
मांगे तिस पर भी मत देना और काम-न-करना
खाने-के समय-घर में-रहना और-पूर्ण-देख कर
खाना। नहीं खाने-देंगे-तो मेरे पास-आना।

बीता —

2

ता. २४-२-६८ पादरिन मिस्ट्रेस के बारे में पूछी कि मिस्ट्रेस कहाँ से बच्चा पेट में लेकर आई और पहले कैसी मोटी थी पर अब कैसे पतली हो गयी है। मेरे को फुसला २ कर पूछती है बांध के पास बुला कर गोबर बीछने को जाती थी तब वह अपने घर में बुला कर पूछती थी पर मैं कुछ नहीं कहती थी तो भी वह जिद्द कर २ पूछी कि वह नया जगह मुझे बता दे कि उसको कहां बुढ़ा बुढ़ी गढ़ा कोड़ कर गाड़े हैं। पर मैं कही कि मैं न जानती। और मेरे से कहती थी कि बाप मा से नराज रहो, बहुत तकलीफ देओ कही थी, मैं गिरजा को गई थी तब। गिरजा निकल कर, अपने घर बुला कर पूछती थी, पर मैं कही मैं नहीं जानती। तो जबर जस्ती बुला कर कही कि थोड़ा देर बैठ कर बता। पर मैं कुछ नहीं कही। फिर पूछी कि कितने लूगा थे। मैं ने बता दिई कि दो लूगा बता दिई। एक साड़ी एक समीज।

मिस्ट्रेस को बुखार आता था वह अपने मासिक दशा में थी इस लिये मा और टिपका पानी को प्यारी कपड़ा को धोकर लायी।

मां बाप लकड़ी गये थे तब उसके बुलाने से उसके घर चली गयी तब खाने पीने के बारे पूछती थी खाने को देते हैं कि नहीं? मैं हां कही। और पूछी चावल दाल नाप के देते हैं कि नहीं? मैं बोली नाप के नहीं देते। और पूछी चूल्हा तवा करने देते हैं कि नहीं? मैं कहीं कि जब नटखटी करती तभी मुझे नहीं करने देते। साबुन सोड़ा बारे पूछी देते हैं कि नहीं। मैं कही कभी रहता कभी नहीं रहता। कभी देते कभी नहीं देते।

ता-३-२-३८ सोमार के बिहान में पानी लाने गयी थी। पाद्री एल. लकड़ा मुझे पूछा बूढ़ा बूढ़ी कैसा वर्ताव करते हैं? भूखा मार डाल देते हैं कि नहीं? मैं जवाब दिई कि नगर वाली एग्नी थी उसी को मां ने जनम पर्व में खरा कर दिई थी। पाद्री ने कहा मैं उसको नौकरी खारिज कर देऊंगा।

ता ६ नोवेम्बर एतवार आपने पलंग के पास बुला कर कहा बूढ़िया जब बिमार होगी तब उसके पास मत जाना, उसको सेवा मत करना, उसका बिस्तरा मत उठाना और कोठरी को मत झाड़ना और मत लीपना और भूखा भी मत होना और बौवा सब को बहुत सताना; और बच्चों को मारना पीटना और खाना पकाने में तकलीफ करना। जब बूढ़ा मारेगा और पीटेगा तो हम को नालिश करना। हेरो भी ऐसा ही आ कर उसी रोज सांझ समय डांड़ी गयी थी तो बोला कि मां को सेवा मत करना

ता:२७ फरवरी एतवार को मां बाप और मिस्ट्रेस पुर्बडांड़ गये थे तब हेरो मेरे को आके कहा बहुत मैला रही और कहने से इतना मैला क्यों रहती हो? तो कहना कि तुम सोडा साबुन नहीं देते हो तो कहां साफ रहूंगी? फिर मेरे को चूल्हा के पास ले जा कर पूछा कि तुम को नस्ता देते हैं कि नहीं? मैं कही देते हैं। पर वह जिद्द करके पूछते गया कैसे करके सताते होंगे सो तुम वहीं बंगला में जा कर बता देना हेरो बड़ साहब के पास मंगल दिन कहा कि अपना बर्तन को बेच कर अपने देश चले जाओ।
पाद्री आडेन आने के बाद दूसरे हप्ते ~~के~~ बुधवार के बिहाने अपने घर बुला कर बोली कि अपनी बर्तन बेच कर चली जा तब मैं बर्तन को बजार ले गयी।
ता-२० मार्च बरान्डे पर हेरो मिस्ट्रेस बाबत कहा बच्चे को कहां गाड़े हैं। मैं ने कही मैं नहीं जानती। फिर मिस्ट्रेस को अंगुठा बता कर कहा कि मैं इसको नौकरी खा देऊंगा। पूरी टिपका पानी पंपा के पास बैठी थी वह भी देखी। दिन बिफेवार था।

ब्रोता कुजूर

Church Council
Received 9. 5. 38
Register No. 398
Date..........
File. 52
Reply No..........
Date..........

Transfer settled but order is pending. Enquiry needed. N 16.5.38

श्री ६ श्री चर्च कौंसिल
लूथेरान चर्च
रांची

महाशय गरा

आप को कोन्डरा पेरिश के भाईयों का

यीशुसहाय।

हाल ऐसा है कि हम लोगों के कान में यह आवाज आई कि पादरी ईम्मानुएल कुजुर को बदली किई गयो। हम लोगों की अर्जी है और कितने बर्ष तक उसको यहां ठहरने दिया जाय क्योंकि उसको यहां ठहरना बर्ष भर भी नहीं हुआ। इन थोड़े दिनों में इन्हों ने उन कामों को किया जो कम से कम १८ ३० ईश्वी में हो जाना चाहिये था अर्थात:-

क/ प्रचारकों को आटोनोमी मंडली बनाने के लिये उत्साह से भर देना।

ख/ युवा समाज बना कर ख्रिस्तानों के चरित्र को बनाना।

ग, शिक्षित लोगों पर नजर रखना कि वे अपढ़ लोगों के लिये ठोकर न हो जावें।

घ, भाई बहिनों के मनों में अपनी मंडली के लिये परवाह उत्पन्न करना।

उपरोक्त बातों को शुरू हुई है इसी बीच में दूसरा आके इन्हीं कामों को अगुवाई करेगा सो हम लोगों को बिश्वास नहीं होता है।

ङ/ इनकी ~~धर्म~~ पत्नी बिमारी आदमी है; तौभी ये बिमारी के कारण अपना प्रोग्राम नहीं तोड़ते हैं।

च/ जब इनकी पत्नी चंगी रहती है तब पादरी और पादरीन

To be settled with kindness

दोनों देहात घुमते हैं। इस से भाई बहिनों को बड़ा आनन्द लगता हैं।

अब यह भी बिश्वास नहीं होता है कि कोई दूसरा देशी पादी अपनी पत्नी लेके सफर करे।

महाशय गण जब से जर्मन मिशनरी लोग चले गये तब से कितने ही देशी पादी आये और गये हम लोग कोई उजुर नहीं दिया, पर इस समय इनके द्वारा काम होने का बिशेष उमीद रख कर अर्ज करते हैं कि ये वर्तमान में न बदले जांय।

आप के लूथेरान मसीही

सही नयमन खेस्स कोन्डरा बा.खा

सही: खिस्ता हिंगा तिर्की

सा: तारा लोया बा:खा:

बा: इलीयास तिर्की - पंचोरा

बा: खा:

सही नैनाथ तिर्की बा: खा:

सही [illegible] मिंज बा: खा:

बिसकोरा दानिएल कुजुर

सही - समुएल खाखा कोनकेल बा: खा:

बिसकोरा जुसफ मिंज

सही पतरस खाखा बा: खा: रिफकापानी

सही स्तिफान एक्का रिफकापानी

बिरकेरा मसीह प्रकाश प्रचीन

सही - आवदनेगो - लकड़ा - जुरसांग

सही धर्मदास टोप्पो जुरसांग बा: खा:

मनसीद कुजूर बा: खा: जुरसांग

M. Tirky chin dar

सल सा खा: खा:

बा: खा:

पाद्री जे. स्तोश प्रेसिडेंट साहब रांची को।

खृस्त बिस्वासी दुःखिता कुजूर कोन्डरा की ओर से।

कोन्डरा २५ अप्रील १९३८ ई.

श्री श्री ६ श्रीयुक्त महात्मा जे. स्तोश प्रेसिडेंट साहब आप को दीन दुःखित दासी का यीशु सहाय।

मेरे दुःख की बात ऐसी है कि रांची महासभा से लौटने हारे मेरे पास उतरे। उन्ह ने बताये कि पाद्री इमानुएल कुजूर की बदली सिकवार हुई है। मैं बिस्तरा पर हूं और सोचनेलगी मुझ को ऐसा लगा कि मेरे घायल मन में किसी ने निमक डाल दिया क्योंकि थोड़े बरसों में कितनी बेर बदली हुई और होती ही है। १९३३ में जशपूर नोन्ध घाट से किंकेल इलाके में बदली हुई १९३४ जून महीने में किंकेल से चैनपूर बदली हुई १९३६ में जद्दी बदली हुई १९३७ में जून महीने में चिरेडांड कोन्डरा बदली हुई फिर सुनती हूं कि सिकवार बदली हुई। क्या केवल पाद्री इमानुएल ही एक जन है जो बदली हो सकता है? १९३३ ईस्वी ही में मैं बिमारी से पकड़ी गई और अब तक बिमार हूं कोन्डरा आके बिमारी और जोर किई है मेरे पति ने बेर २ अर्जी किया कि बदली न किया जाय पर C.C. ने कभी नहीं सुनी इस बेर फिर बदली की बात सुनती हूं, यहां आया हुआ साल भर भी नहीं हुआ है मैं बूझने नहीं सकती हूं क्यों इतनी जल्दी बदली होती है?।

प्रिये धर्मपिता मैं बिमारी से बहुत तकलीफ पा रही हूं रुपैये पैसे की घटी के कारण ठीक दवाई भी नहीं हो सकता है। चैनपूर में डाक्टर दवाई देते थे बिमारी बहुत घट गई थी बदली वहां से न होवे उस के लिये डाक्टर चिट्ठी दिया था जो C.C. में भेजा गया पर C.C. कभी नहीं सुनी।, बिमारी दिन२बढ़ती जा रही है मैं कमजोर होती जाती हूं। यहां कोन्डरा में रहके जैसी भी बाजार पास ही है मैं साल भर में तीन रोज बाजार गई हूं। मेरी दो बच्चे और तीन नातिने मेरे साथ रहतीं और कोन्डरा यू.पी स्कूल जाती हैं और घर के काम में मदत देती हैं मैं आप कुछ नहीं कर सकती हूं।

प्रिये धर्म पिता हम लोग बूढ़े अवस्था में आ गये हैं और ऐसी बिमारी हालत में बदली होना औ बदली करना मैं अच्छा नहीं समझती, बदली करना मेरी बिमारी को और बढ़ाना है और मुझ को जबरजस्ती कबर में पहुंचाना है।

सिकवार बदली जायेंगे तो दूर बाजार है कौन मेरे लिये सौदा लावेगा

मैं बच्चों को कहां स्कूल भेजूंगी और खर्च दे सकूंगी। मेरे तीन नातियों की ओर से मेरे दमादों की तरफ से बहुत सहायता मदत मिलता है अगर सिकवार बदली जायेगे ये नातिने रुपो से अलग हो जायेंगी और दमाद दूर हो जायेंगे तो सहायता पाना भी कठिन होगा।

मैं आप की दीन दुःखनी दासी आप के पांव पड़ती हूं हाथ जोड़कर अर्ज करती हूं विन्ती मेरी सुनिये और मेरे पति की बदली को काट दीजिये यहां नहीं आने चाहते थे पर बरवाई से आ गये अब जो हो मैं अपनी बिमारी हालत को यहां बिताऊंगी और बिमारी का अन्त मैं यहां देखूंगी। और फिर बदली की बात मैं सुनने नहीं चाहती हूं। मैं बिस्तरे से उठ नहीं सकती हूं। मैं बड़े सकेती में पड़के यही प्रार्थना करती हूं यह मेरी सच्ची प्रार्थना है।

अगर मेरा धर्म पति प्रभु का काम करने में अयोग्य है इस का बात जांच किया जाय। अगर कोई महा बुराई पाप किया है तो साधूतः साथ छुट्टी दीजिये पर बदली करना मैं बहुत नठीक समझती हूं साधरण लोगों के विचार में भी अच्छा मालूम नहीं होता है इस से मैं इतना कह सकती हूं कि प्रभु का काम बिगाड़ जाता है मेरा पति अपना काम कहीं भी दूसरों के समान कुछ बरसों तक करने नहीं पाता है बदली के कारण हर जगह आ शुरु करता है और छोड़ देता है मंडली के भाई बहिन उसके काम को अच्छा कहते हैं पर वही आप लोगों के पास न ठीक बताया जाता है मैं कभी नहीं चाहती हूं कि यहां से बदली होवे बहुत बेर बहुत जगह बदली हुई अब आप सच्चाई और न्याय से बदली को मिटाईये मैं दूसरे जगह ऐसी हालत में कभी नहीं जाऊंगी।

जो वाजिब है सच्ची है सो मैं अर्ज करती हूं और आशा भी विश्वास करती हूं कि मेरी सुनी जायगी

आप की दीनदासी

खृस्त विश्वासी दुःखिता कुजूर

श्री ~~है~~ श्री महामान्यवर डाईरेक्टर J. Stosch
Gossner Church
Ranchi

Dated ~~K~~ondra, the 30·4·38.

महाशय

आप को सादर मुझ बीनिता का यीशुसहाय।
मान्यवर पिताजी मैं अबला कुंवारी लड़की हूं। मुझे स्वंय अपनी बातें आप के पास जाकर बतलाना ही ठीक है पर गरीबता के कारण जाने आने का खर्च नहीं पाती हूं।

मैं ता: 8·1·38 को कोंडरा में अपर प्राइमरी स्कूल में हेडसुपरवाइजर की आज्ञा से काम करने को आयी। पर ता: 10·3·38 को इलाका पंच ने मुझ को बेइन्साफी तौर से काम से छुट्टी दे दिया।

पादरी लौरिन्तियुस लकड़ा, हेडमास्टर ईश्वरी प्रसाद और बिलासी मिस्ट्रेस ने एक साधारण जन से षड्यन्त्र रचवाया और इलाका पंच में पेश किया। इलाका पंच ने उस पर कुछ भी ध्यान न देकर बेइन्साफी से मुझे कामसे छुट्टी देने का फैसला किया। इन्हों ने जब कि मेरे विषायक बालकों को सजा देने का विचार आचार हुआ नहीं बुलाये और नहीं पूछे। अंदाजी सुना सुनी बात को लेकर जो मैं ने विद्यार्थियों को पाठ न सीखने के वजह से किसी 2 को एक और किसी को दो छड़ी मारा था उस को दस छड़ी, इसी प्रकार खाना बन्द करने और क्लास में खड़े करने का दोष लगा कर बुरी तरह से मेरी बेइज्जत कर के मेरी जीविका को नाश कर दिया। सो मैं बेचारी 10·3·38 को स्कूल छोड़ने का नोटिश पाकर काम बन्द कर दिया। फिर 18-3-38 हेडमास्टर को जना कर स्कूल गयी, पर फिर भी वे मुझे यहां ठहरने नहीं देने को लगे तो मैं लोहरदगा अपने घर वापस चली गयी ता० 20-3-38 में पर अभी 27·3·38 को फिर अपने सामान लेने को कोंडरा आयी तो क्या देखती हूं कि वे ही जो स्कूल से छुट्टी दिलाये थे मुझ पर गर्भपात करने का दोष लगाते

हैं और पादरी इमानुएल कुजूर और पादरिआइन पर यह दोष लगाते हैं कि वे ही गर्भपात कराये। ये अर्थात हेरवन्त टोप्पो, पादरिआइन L. Lakra; मिस्ट्रेस बिलासी और पादरी लौरेन्तियुस लकड़ा ये यहां देहात में तमाम यह बात फैला दिये हैं और मेरी बेइज्जत हां भारी बेइज्जत कर मेरी जीविका जीवनी बिगाड़ चुके हैं। ये पादरी को पुत्री बृता कुजूर को पूछते हैं कि पादरी पादरीआइन मुर्दा बालक को कहां गाड़े हैं?

महाशय फरवरी महीने में जब मैं, पादरी I. Kujur पादरीन और Naiman Khess चीरोडांड़ गिर्जा गये थे 5-2-38 को। मुझे वहीं से बुखार और सिरदर्द सर्दी शुरु हो गया हम लोग वहां से तुरन्त 6-2-38 ही को घर लौट आये। 7ता. 2-38को मैं बिमारी के वजह से स्कूल नहीं गयी उसी रोज से मेरा मासिक धर्म्म शुरु हो गया बुखार का दवाई खा लेने के वजह मैं बेतरह हो गयी। सो उसी रोज मिस्ट्रेस और पादरीआइन L. Lakra. मुझे देखने आये और बोतल से सेकने का बात किये। पर हम लोग कुछ न किये। दूसरे ही रोज मैं स्कूल जाने चाहती थी पर पादरीन मां बोली बेटी ठंढा है कल ही बिमार थी सो आज मत जाओ सो मैं स्कूल नहीं गयी। अब इधर मिस्ट्रेस और पादरीन मुझे पर वही गर्भपात करने और बुढ़ बुढ़िया को कराने का दोष लगा के मेरी सब कुछ बिगाड़ चुके इतना तक मुझे इस दुनियां में जीना ही बेफैदा है।

इस लिये मैं अबला सिर्फ आप के पास यह अर्जी पत्र देती हूं कि आप कृपाया ठीक न्याय कर दीजिये क्यों ये झूठ मूठ में मेरा इज्जत बिगाड़ कर मेरी बेतरह हानि पहुंचाये हैं।

आप को ये काम शीघ्र ही न्याय करना होगा और मेरी इज्जत का फिक्र करना होगा। अगर आप मेरे इस विधायक नालिश इन्साफ नहीं करना चाहते हैं तो मुझे छुट्टी दीजिये कि मैं अपने बिरोधियों पर सरकारी कानून के रुल से सजा दिलाने का दरखास्त देऊं

आप की दीनदासी

नीलमणि किन्डो।

मान्यवर जे स्वीस्त साहब के निकट
ना: लोहरदगा, १०-५-३८ ई:

महामान्यवर धर्म्म पिता
यीशुसहाय।

आज मुझे आंसू बहाते हुए ये चिट्ठी आप को अर्पण करना पड़ रहा है।

मेरा दुःख इतना भारी है कि मुझे बतलाने का सिर्फ आप के पास साहस हो रहा है।

मुझे इतना बेकसूर का इन्हो ने स्कूल से छुट्टी दे दिई हां मैं ने कई एक अर्जी पत्र भेजा परन्तु मुझ गरीब अबला कुंवारी का कुछ भी परवाह न किया गया किसी ने कुछ बिचार न किया। अब इतना भारी अन्याय सिर्फ मैं बड़ी हो में पा सकी। एक शुरु से कुड़ू में थी मैं मघहन पाद्री से बहुत सतायी गयी अभी कोंडरा गयी वहां भी सिर्फ पाद्री के चलाने से दुसरों से। अभी मेरी जो कुछ थोड़ा कमाकर जिन्दगी चलाने चाहती थी कोंडरा के भाईयों ने तो मेरी रोटी छीन ली पर आप लोगों से भी यही हुआ। हम गरीब हैं बाप का भी काम नहीं

मां का भारी बिमारी हालत तौभी उसी हालत में बवर्चीनी का काम करती है। (8) रु० से हम घराने भर का जीविका चलाना घर में खाने वाले दस बारह आदमी। मुझ से कुछ सहायता होने की आशा सो भी ले ली गई। अब इस हालत में मुझ कुंवारी एक बीस बरस की लड़की पर झूठा दोष देख कर अब मेरा जी जीने से ऊब गया। मैं ने ये ठान लिया है कि चाहे तो मैं अपना आत्महत्या कर दूंगी या तो दूसरा मिशन उलट जाऊंगी। मेरे उपर बीते दो साल से सिर्फ पाद्री लोगों ही से सताहट मिल रही है। मेरी इस बेकदरी और पादियों की अन्याय काम देख कर मां की मृत्यु का भी ठिकाना नहीं है।

पाद्रियों को इस लिये रखा गया है कि वे धर्म्म प्रचार कर के अपने भटके हुए भेड़ों को खोजें पर मैं यह देख चुकी कि पाद्री सिर्फ पेट पालने और दूसरों का आहार ले लेने, अन्यायी काम कर के अपने भेड़ों को खो देने वास्ते रखे गये हैं।

मुझे ऐसा लगता है कि ईश्वर बाप ने अपने इस छोटानागपुर में धर्म्म का बीज तो बोया पर अब धीरे२ लोगों के लपरवाही के कारण अपना सब कुछ ले लेगा।

प्रिय धर्म्म पिता इतना होने पर भी मुझे इस वचनों से शांति मिलती है

१ आशा से आनन्दित हो क्लेश में स्थिर रहो प्रार्थना में लगे रहो।

२ सोसन फूलों को देखो न वे बोते न लवते न खत्तों में बटोरते हैं पर तौभी तुम्हारा स्वर्गबासी पिता उन को पालता है। निश्चय वह हम गरीब दुबर लोगों को भी सहायता करता है और प्रति दिन की रोटी देता ही आ रहा है।

पिता मेरा दुःख सहने से बाहर है छोटों की कौन सुनता है। बड़े जन तो चाहे जो कुछ बोले सच या झूठ सब सच ही होता है सो आप से दीनता पूर्बक अर्जी है आप जांच कर के मेरे सजा के बारे में कि सच है अथवा झूठ पा सकते हैं। शीघ्र जांच कीजिये नहीं तो मैं आत्महत्या करने को तैयार हूं।

आप की दीन दासी- नीलमनी किस्पो

The Gossner Ev. Lutheran Church in Chotanagpur & Assam.
[Mission Estd. 1845.—Autonomous 1919.]
G. E. L. COMPOUND.
RANCHI. (**Behar**) **India.**
Secretary: **F. N. TOPNO Esqr.**

No. 1144/38/F 5. *Dated the* 9th Aug. *19*38.

To,

The Rev. L. Lakra,
G. E. L. Church,
Kondra.
P. O. Raidih,
Dist. Ranchi.

Manywar Padri Babu ko Yishusahay.

Jashpur State ke ap ke halke ke schoolon ka nam, masteron ke nam sahit un ka qualification aur talab rate bhej dijiye. Schoolon ko State men jima dene ka matlab hai. Dharm bishay nahin parhaya jayga par school ke bahar parha sakte hain. Ap ka ray bhi dijiye.

Ap ka bishwast,

N. Topno

Secretary.

Church Council 13.1.38.
Received 13.1.38
Register No. 250
Date 13.1.38.
File 42
Reply No.
Date

Angart P.o. Bandgaon
c/o. Rev. C.K. Gurea
Torkad
Dist. Ranchi

प्रिय— चर्च कौंसिल के सब मेम्बरों को यीशु मसीह

नाम से आशीष और राम— [illegible] — [illegible] हम

को— आपने मेरे विषय लिखा था— उस माफिक आपने

मेरे को— चर्च में बुलाया— और समझाया और [illegible]

ना— जितनी बातें हमको समझाता— [illegible] उस विषय

लिखा— था मैं सहमत हुआ— सो मैं मानता हूं

कि— मेरे बेर के उपर ना— बदलियों से मुझे

मुक्त कर दीजिये— लेकिन— उसको आप लोगों के

हाथ— सौंपता हूं और मुझे इस बात में बेर को

समझाने में सहायता कीजिये— और मुझे सेवकाई

का उपकार कीजिये—

उसने जिस भांति आप लोगों के साथ

लिखा— था मैं वहीं जाता हूं कि— उसने आपने

आर्थिक— पेश किया है—

आइन्दा आप लोग समझिये

आपका— भाई आपका सेवक

भाई M. Manki

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G. E. L. CHURCH
IN CHOTANAGPUR/ AND ASSAM.

Memo No. 897 - 898/38/F 5, dated the 25th May, 1938.

The undermentioned document is forwarded to Rev. I. Kujur and Rev. L. Lakra, for information and guidance.

N. Topno.

Secretary,
G. E. L. Church.

Kondra.
Minutes of the Full Church Council, dated the 20th May, 1938.
Item No. 7. (Forenoon)

" Kondra :- Rev. S. Bage ne report diya jis ke pichhe bahut tark bitark huwa aur wahan ke golmal o trutiyon ko dur karne ka upay socha gaya,: Akhir men prastaw huwa aur phaisla huwa ki Rev. Laurentius Lakra Jashpur Upar Ghat aur Kondra Civil ka padri rahe aur Rev. Immanuel Kujur Chiur ke khali jagah ko bhare."

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G.E.L.CHURCH
IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.

Extract from the minutes of the meeting of the Full Church Council held from January 12 to 15, 1938.

The 12th January, 1938.

" 2. Kondra Parish ke pracharakon ka darkhast (11.11.38.) talap sambndhi.

Bichar huwa ki yah darkhast Kondra Ilaka Panch ko bichar aur report ke liye bheja jay."

Memo No. 655/38/F5.

The 24th January, 1938.

The above extract is forwarded to the Chairman Kondra Ilaka Panch, for information and guidance.

A. L. Tokey

Secretary,
G.E.L.Church.

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G.E.L.CHURCH IN
CHITANAGPUR AND ASSAM.

From,
Mr. A.L.Tirkey, B.A.,B,Ed.
Secretary,
G.E.L.Church,
Ranchi .

Extract from the Minutes of the Church Council Executive, dated the 3rd Dec. 1937.

" 3. Kondra ke Padri Lawrentius Lakra aur Ignatius Lakra ke bich ke anbanaw ke sambahdh men Church Council ke Commission ka Report.

Padri Lawrentius Lakra aur Ignatius Lakra ke kagjat Council ke samne rakhe gaye. Commission ka report pesh kiya gaya. Commission memberon ne muhjabani bhi bayan diya. Is bishay par der lon batchit aur bichar kiya gaye. Ant men Church Council ne is prakar is bat ka phaisla kiya:-

1. Ki Babu Ignatius Lakra ko Padri Lawrentius Lakra par besabut byabichar ka dosh lagane ke karan ek baras ke Suspenssion men rakha jay,1st January, 1938 se.

2. Ki Padri Lawrentius Lakra Kinkel men rah kar Jashpur ka apna kam kare, 1st January 1938 se.

3. Ki Babu Iswari Prasad Tiga (Govindpur par Larki School ka) Kondra ke U.P. School ka Headmaster niyukt kiya jawe: aur Govindpur Larki School ke liye Miss Kunul Topno Headmistress niyikt kiya jay aur us ka talap Rs 25/ thahraya jay. (with 10% cut)

Memo No. 598/37/F-5, dated the 7th Dec. 1937.

Copy forwarded to Rev. Lawrentius Lakra, ~~Ignatius Lakra~~ and Head Supervisor, for information and guidance, and to the Chairman Kinkel Ilaka.

Secretary,
G.E.L.Church,
Ranchi.

Church Council
Received 1.12.37
Register No 203
Date 25.11.37
File 5
Reply No. 598
Date 7.12.37

कोन्डरा २५-११-३७,

श्रीयुत माननीय प्रेसिडेन्ट जी माननीय
साहब - डब्ल्यू - रस्किन को मुझ लोरेन्तियुस - पादरी का
योशुसहाय - ।

आज जो मेरे ऊपर दोष लगाया गया - यह
जो जिसका इन्साफ आप लोगों - तारीख २२-११-३७ को डकवाएट
तक - कोन्डरा में किये थे - उसके सम्बन्ध में मुझको कई एक बातें
आप लोगों के सामने रख देना था - जिसको मैं आपके समक्ष हु. ख-
ने जिसका अनुकूलता के आशा नहीं कर सका - जिसका आप लोगों को
सामने इस खत के द्वारा रख देता हूँ कि आप लोग उस पर उचित-
विचार करें जिसका बयान तहरीर को मेरी कैफियत - नीचे दर्ज
है जिससे आप लोग अनुमान कर सकते हैं कि वह झूठा दोष जो
आपके किसके चलाने से मेरे ऊपर पड़ा।

१, २ जुलाई के चिट्ठी से जो - मनोस कुल्लिकों के नाम से फर्जी लिखा
गया है - उसमें यह लिखा है कि कोन्डरा विरादरी पुरुष कइ को
का नकल कसारा के भाइयों के कहने से मुझको मालूम हुआ - कि
पादरी लोरेन्तियुस - लकड़ा मेरे बेटी को खराब कर दिया :—

कैफियत :— मनोस कुल्लिकों किस प्रकार ऐसा बयान
लिख सकता है जब कि वह इन सब गांवों में नहीं आया था - इन
सब भाइयों और गांवों का ज्ञान और तो पादरी बाबू इम्मानुएल कुजुर
है और उसको छोड़ ऐसा फर्जी चिट्ठी और कौन दूसरा लिख सकता है -
को लिखा सकता है॥

२, मनोस कुल्लिकों कुजुर पाठ के नाम से फर्जी चिट्ठी लिखा गया है :—
कैफियत :— आज हेडमास्टर यह फर्जी चिट्ठी लिखा हो
तो मिस्सा है सक बाप का नाम - कैसे जाना - जिसको सहज से जानना
कठिन है। पादरी बाबू इम्मानुएल कुजुर २ वर्ष तक बेनपुर में था
जिससे वह मनोस कुल्लिकों का नाम और गांव का अच्छी रीति से
जानता था और जानता है॥

३, मनोस कुल्लिकों का फर्जी चिट्ठी जो कोन्डरा का हेडमास्टर को चिट्ठी
में लिखा हुआ है कि पादरी लोरेन्तियुस लकड़ा को कोन्डरा से निकाल
बदली किया जाय :—
कैफियत :— यह बात न केवल हेडमास्टर को है पर पादरी
इम्मानुएल को भी है क्योंकि उसको इलाका में यह बात फैला हुआ है
कि अब पादरी लोरेन्तियुस यहाँ से बदल कर निकाल जायगा॥

४, २ जुलाई का फर्जी चिट्ठी लिखा गई है और जुलाई ७ को इसका
प्रचार कोन्डरा बजार में किया जाता था :—
कैफियत :— मैं ७ जुलाई को प्रचार कागज को जो
मुझको मोहन प्रचारक से मिला - और जिसको मैं आप लोगों के
सामने दाखिल किया हूँ उससे साफ मालूम होता है - कि मेरे ऊपर
दोष लगाने का आसरा - पादरी बाबू इम्मानुएल कुजुर ने है अगर वह

Church Council
Received ...
Register No. ...
Date ...
File ...
Reply No. ...
Date ...

न होता तो ऐसी बातों का प्रचार वह बजार में क्यों करता। उसको इससे क्या सरोकार था। ऐसी बेसबूती की बातें फैलाने से मेरा नीचा दिखाना के छोड़ उसके मन में और कोई दूसरी बात न होगा।

५) पादरी बाबू इम्मानुएल आप लोगों के सामने बोला कि हेडमास्टर मुझको अपने तरफ मिलाने के लिये बहुत यत्न किया पर मैं उसके तरफ न मिला:—

कैफियत:— यदि इम्मानुएल पादरी इस बात में जैसा कि वह बोला हेडमास्टर के साथ सहमत न होता तो मुझको अपना सगा कर्मचारी जानकर जिस बात के लिये हेडमास्टर उसको अपने सहमत में करने का यत्न किया था उस बात को मुझे बतलाता पर वह ऐसा न कर मेरे बिरोध, जैसा कि ४ था कैफियत में लिखा हुआ है, मेरा सिकायत यहां वहां फैलाने लगा — जिससे यह साबित होता है कि वह हेडमास्टर के साथ सहमत होकर मुझको फंसाने की फिकर में था॥

६) मुझको ~~बातचीत~~ गुमला सदर बंक के इन्सपेक्टिंग क्लार्क से बातचीत करते हुए सुनने में आया कि कुल्लूडू में जब कि इन्सपेक्टिंग क्लार्क अपने साथियों के मुलाहिजा में गया था उस समय उसके सामने और वहां के कोई एक भाइयों के सामने पादरी बाबू इम्मानुएल कुजुर बोला कि लौरेन्तियुस पादरी के ऊपर कोई ~~एक~~ प्रकार का दोष का जाल फैलाया गया है जिससे उसको बचना मुश्किल है। इससे मुझको ऐसा मालूम होता है कि अगर पादरी बाबू इम्मानुएल कुजुर मेरे ऊपर दोष लगाने में सहमत न होता तो वह कैसे जानता था कि मेरे ऊपर कै प्रकार का दोष लगाया जा रहा है जिससे मुझको बचना कठिन था। मुझको यह सम्भव है कि वह हेडमास्टर और उसके दूसरे साथियों के साथ बैठकर ठीक करके मेरे ऊपर दोष लगाने की बात करता था होगा॥

७) २६. २२. ३७ को जब मैं गुमला इलाका के पकरटोली में पहुंचा तब मिरबुहलु प्रचारक मुझको यह बतलाया कि जब इम्मानुएल पादरी बिरकेरा (कोजराइल का प्रचारकपन) स्थान प्रभु भोज के लिये आया था तब वह वहां के भाइयों को यह कहके बतलाया कि पादरी बाबू लौरेन्तियुस लड़कों के ऊपर व्यभिचार का ~~दोष~~ भारी दोष लग चुका है जिससे उसको बचना कठिन है। इस बात से यह मालूम होता है कि मेरे ऊपर दोष लगाने वाला न केवल हेडमास्टर है पर पादरी बाबू इम्मानुएल कुजुर भी भारी युक्ति करनेवाला है॥

८. इम्मानुएल पादरी को आप लोग अच्छी रीति से जानते हैं कि वह किस स्वभाव का आदमी है। आप लोगों को उसके पहले का कुल काम जहां जहां वह था, किया है आप लोगों को मालूम है जैसा कि:— किनकेल में जब वह था मान्यवर एम शीब के ऊपर ~~॥~~ व्यभिचार का दोष लगाया था और ~~[illegible]~~ जैनपुर में मान्यवर पादरी कुजुर स्को के ऊपर व्यभिचार का दोष लगाया था — और जब वह ~~यीदि~~ पूरिस में था तब एक महिना के भीतर ही सब इन्सपेक्टर स्कूल बोर्ड स लड़कों के ऊपर व्यभिचार का दोष लगाया था — पर इनमें से किसी एक का वह साबित कर नहीं

सका-सब कुछ छान निकला। जब वह कोंडरा मराडली में आकर उसका काम करना १ई दिन भी नहीं हुआ कि मेरे ऊपर भी ~~वह~~ व्यभिचार का दोष लगाया गया। जिसका जो स्वभाव होता है उस स्वभाव को बदलना सहज नहीं है। ऊपर के बयान से यह समझ होता है कि पाद्री बाबू इम्मानुएल कुजुर को किसी के ऊपर व्यभिचार का दोष लगाना स्वभाव ही है। इसी से यह साफ जाहिर है कि मेरे ऊपर जो व्यभिचार का दोष लगाया गया है सो हेडमास्टर सेन ही नहीं पर पाद्री बाबू इम्मानुएल कुजुर ही से है। उसी के सलाह मत से मेरे ऊपर यह कलंक लगाया गया है। अगर उसके मन में ऐसी कलंकित-चिन्ता न होती तो वह क्यों इधर उधर मेरे ऊपर व्यभिचार का दोष फैलाता। क्या उसको इसमें आनन्द है?

पाद्री बाबू इम्मानुएल कुजुर का अपनी पुतो पर कुव्यवहार।

जब से पाद्री बाबू इम्मानुएल कुजुर कोन्डर आया तब ही से उसका व्यवहार अपना पुतो के ऊपर बुरी और कड़ा है जिससे अपने पुतो के लिये इस संसार में पग-पग दुःख ही भरा हुआ है और उसका दशा को देखकर जो बहुत ही दुःखी होता और सहा नहीं जाता है ~~र~~ जिसके वजह से आप लोगों के पास लिखना और जनाना पड़ रहा है कि आप लोग उस बेचारी का दुःख को दूर करने के लिये कुछ योग्य उपाय करेंगे। जिस तरह का व्यवहार पाद्री बाबू इम्मानुएल कुजुर का अपने पुतो के ऊपर है उसका बयान नीचे दर्ज है।

क) पुतो को मारपीट करना:— जब मैं अपना टूर से वापस आया तब कुसकायेला का एक भी सोमरा मुझको बतलाया कि पाद्री का पुतो एक रोज अपना सास ससुर के बुरा व्यवहार के कारण खिसिया होकर घर से निकली और उस बुढ़िया के यहां कोई एक दिन तक रही। बाद वह बुढ़िया उस पुतो को अपना सास ससुर के यहां पहुंचा दिई। पुतो को देखते ही अपना ससुर इम्मानुएल पाद्री क्रोधित होकर हाथ में लाठी ले अपना पुतो को मार पीट करने लगा। इतने में वह बुढ़िया पाद्री बाबू को धर दिई और लाठी को पकड़ लिई और अधिक मारपीट करने से बचाई॥

ख) इसी प्रकार कई मरतबे वह पाद्री बाबू अपना पुतो को गाली गुप्ता देकर मारपीट किया है जिसका सबूत आसपास के सब लोग दे सकते हैं क्योंकि सब को यह बात साबित है॥

ग) जब पाद्री बाबू अपना पुतो को अपने साथ प्रेम के साथ नहीं रख सकता है और नहीं चला सकता है तो उसको क्यों अपना बेटा के यहां नहीं भेज देता है। बल्कि मार पीट कर मंडली के भाइयों को बुरा नमूना दिखलाता है और न केवल अपने ~~ल~~ लिये पर अपने संगी कर्मचारियों के लिये लज्जा का कारण है। क्योंकि हमारे देश का ऐसा रिवाज नहीं है कि कोई ससुर अपना पुतो को मारपीट करे और कमजोर इस व्यवहार के कारण जो पाद्री बाबू करते हैं भाइयों के सामने लज्जित और निरुत्तर होना पड़ता है जब कि वे इसके बारे सवाल करते हैं॥

०——

घ. पादरी बाबू इम्मानुएल का पुत्री एक ओरफन लड़की है जिसको कोई मिशनरी मिस्स साहेब पाल परवस्ता किई थी। इसका इधर न कोई मा-बाप न जात कुटुम्ब है। जब कभी वह अपना सास ससुर से निरास होकर घर से निकल जाती है और किसी के यहां शरण लेना चाहती है तो आप लोग विचार कर जान सकते हैं कि उसको कौन कितना दिन तक शरण और दिलासा दे सकता है जब कि उसका सास ससुर यहां मौजूद हैं। मेरे समझ में आता है कि चार्च कौंसिल के मेम्बर को छोड़ और कौन दूसरा उस बेचारी के लिये उपकार का काम कर सकता है और उसके दुःख को हटा सकता है॥

ङ. पादरी बाबू इम्मानुएल का व्यवहार अपने पुत्री के ऊपर जैसा यहां कोन्डरा में है वैसा ही ~~र~~ चैनपुर में भी था। इसके बारे में आप लोग अपने चार्च कौंसिल का मेम्बर दाऊद तिर्की तिग्गावल से जान सकते हैं॥

प्रेम से
आप लोगों का विश्वास-सेवक-
पादरी बाबू लोरेन्तियुस लकड़ा—
कोन्डरा.
२५—११—३६.

8.12.37

Dear Amrit Babu,

Kindly send me copy of the C.C.'s resolution about the Kondh trouble and then as usual the information will be sent to B.D. [illegible] from this office.

Please also send me copy of the resolution regarding transfer of B.D.P. Tiga from Gobindpur to Kondh and appt of a midwife in the Gobindpur G.S. in place of B.D.P. Tiga.

Yours etc.
[illegible]

Brother H. L. Tirki

Secy. C. C.

Ranchi

१२, ११, १९३७

आज ता: १०.११.३७ को कोंडरा गिर्जा घर में कोंडरा के भाई बहिनों के साथ चर्च कौंसिल कमीशन की बैठकी हुई। मा: पाद्री रवीशंकर साहब ने "बुराई के बदले बुराई नहीं पर भलाई की चेष्टा करने" के सम्बन्ध में तैयारी उपदेश देकर प्रार्थना के साथ आरम्भ किया।

प्रेसिडेन्ट पाद्री दाउद कुजूर ने चेयर लिया और पाद्री जिलो तोपा ने रेकार्डर का आसन ग्रहण किया। प्रेसिडेन्ट और पाद्री रवीशंकर साहब ने पंचैत का अभिप्राय बताया कि कोंडरा में कर्मचारियों के बीच जो अनबन है सो मिटाया जावे। आरम्भ में विचार किया गया कि (१) इनसाफ के द्वारा फैसला किया जाय अथवा (२) अपना बुराई को देखकर मान लेवे और मिलाप लेवे। प्रेसिडेन्ट ने दोनों तरफ की बातों को जो चर्च कौंसिल में भेजे गये सो क्रमश: पहिले पाद्री लोरेन्तुस लकड़ा का दरखास्त तब हेडमास्टर इग्नातियुस लकड़ा का दरखास्त (उसके प्रत्युत्तर में) हाजिरी लेने के पीछे पढ़ गया। —

__हाजिरी__: १. कमीशन (चर्च कौंसिल के मेम्बर पाद्री रवीशंकर, पाद्री दाउद कुजूर प्रे. और पाद्री जिलो तोपा और हेडसुपरवाईजर निर्मल सोय) = ४

२. पाद्री लोरेन्तियुस लकड़ा, पाद्री इम्मानुएल कुजूर। (इलाका सेक्रेटरी) = २

३. हेडमास्टर इग्नातियुस लकड़ा और इलियजर टोप्पो। (इलाका मेम्बर) = २

8. साधारण सदस्य — (क) पंच — इलियाजर टोप्पो, प्रायोग बाखोड़ा, मरकुस लकड़ा सकरडेगा, अर्जकदास बेहराटोली, मसीहदास बाखोड़ा, 1

(ख) प्रचारक बरनाबास मिंज, रामपुर, इसहाक खलखो रामपुर, मानुएल तिर्की करंतला, ~~लौरेन्तियुस मिंज चोरोडांड~~, यूनस कुजूर कोनकेला, अन्तोनियुस मिंज चोरोडांड, मत्तियुस लकड़ा कशीरा, लम्पादियुस लकड़ा कशीरा, जुलियुस ~~तिग्गा~~ गुनला = ७+२ = ९

यूसफ टोप्पो बाखोड़ा, सामुएल (इलाका मेम्बर) टोप्पो गुटुटोला, नेमन टोप्पो बाखोड़ा, सिमोन टोप्पो ठुसकटोली, नेमन खलखो बेहराटोली, फिलिमोन टोप्पो गुटुटोली, हेरो टोप्पो बाखोड़ा, मोहन खलखो बेहराटोली, नेमन खेस्स बाखोड़ा, यूसफ खलखो बेहरा~~[illegible]~~टोली, कुशल खलखो बेहराटोली = २२

कुल जमा — ३२

A
I

१४ (क) पादरी लौरेन्तियुस लकड़ा के वक्तव्य पर व्यवहार

फिलिमोन टोप्पो : हम रांची गया था — हेम महेन्द्र खेस्स के घर के गांव के पास पिछवा गया — कुशल खलखो और तिग्गा के कहे हुए को पादरी इ. लकड़ा को बताया, आंख से नहीं देखा।

कुशलमय खलखो — महेन्द्र मास्टर ने पूछा कि इग्नातियुस मास्टर मतवालापन करता है? मैंने कहा मैं तो नहीं जानता हूं — पीछे इग्नातियुस मास्टर को रिक्शा में देखा — मुझे मालूम नहीं हुआ कि वह पीया था कि नहीं — केवल उसके जोर[illegible] को सुना और फिलिमोन से बातचीत किया — हमलोग कि मास्टर को बहुत जोर से बोला — हमलोग [illegible] पर मालूम नहीं किया कि पीया

या कि नहीं। मैंने और किसी को
नहीं बताया।

Rev. L. Lakra: जिस तारीख में हम पंचैत बैठे थे उस
समय हेमन्त के साथ विचार करते थे कि
कैसा करेंगे तब फिलिमोन बतलाया ~~और~~
पंचैत में ~~~~ मैं, हेमन्त और फिलिमोन एक
चटाई में बैठकर बातचीत किये – बातचीत
किये ~~कि~~ उस समय फिलिमोन ने यही को
बात बताया।

Hemant: हमलोग माझी के साथ आपस में अकेले
विषय बातचीत किये। वे अपने
के सुधार के निर्वाचन को ओर से
से तो नहीं देखा पर यह बात अपने
सुधार यहाँ आकर बताया। निर्वाचन के बताये हुए को
अनुमान से नहीं पर
बतलाया यहाँ हम लोगों को।

Philemon: हम तो हेडमास्टर को रिक्शा में तो
नहीं देखा था पर निर्वाचन के बताये हुए
को यहाँ सुनाया।

Headmaster Ig. Lakra: सच है मैं और [illegible] गाड़ी
रिक्शा नियुक्त साइकिल से विश्वनाथ ड्राइवर के
पास किलन ७॥ बजे जाते थे – उनके बालों
मोल लेने के लिये बातचीत करने – तब
Industrial स्कूल के पास निर्वाचन और
कुशल को पाया – फिलिमोन पीछे से आता
था – रिक्शा जोर से दौड़ता था इसलिये
उनको जोर से पूछा कि कब आया।

Mr. N. Joy के सवाल पर पादरी Ig. Lakra को विषय
कि आपने हेडमास्टर से पूछा कि नहीं –
जवाब – मैं और 2 बातों के विचार
के पीछे पूछा –

Ign. Lakra: पादरी L. Lakra से कि आपमुजरिम बोले क्या नहीं?

ख नं II बात: पादरी L. Lakra ने कहा कि बिजय महतो नहीं है - सो गुमला में उससे पूछिये। मैंने बिजय हो से सुना था कि मेरे बारे में बताया था।

जवाब - Ign. Lakra: मैं तो बिजय को सोमू और बिहान coach करता था - मैं कभी नहीं पीया। केवल डर से यह बोल लगाया जाता।

ग नं III बात: मनमोहन यहां नहीं है सो बुलाने के लिये आदमी भेज दिये (कमीशन ने)

घ नं IV बात: पादरी L. Lakra ने कहा कि मैंने आप (President) को बताया है कि डुमरटोली कुछ के साथ गांव में हुआ जिसको मैं मजबूर करते हैं किया है - सो आप ही बताईये।

President ने बताया कि डुमरटोली पीटर के बारे में बताया गया कि नवानिहल के बारे में गया था जिसको हेडमास्टर पीके पीटर का बार पीटर को रखा बताई (President को)

जवाब: Headmaster ने कहा कि नवानिहल हम लोग गये और बाद हमों को बुलाये थे - पर पीटर का पीके दवा के काम में गये थे - पर पीटर का बार नहीं गया था। मैं विहान को पीटर का बार गया था।

Rev. L. Lakra: हेडमास्टर किसी आपने एक लाठीलेकर नवानिहल के साथ मारने साथी को मारने के लिये खोजते ढूंढते थे मतवाला होके कोई

V

लड़ाई होते से ।-

Dgn. Lakra: आठो लोक हम नहीं गये लोगों में और मेरी स्त्री चुल्हा के पास बैठी थे -।

~~V~~ पहाड़ा खड़िया: अभी यहां नहीं है।

~~VI~~ VIIs VIIIच } मनमसीह एक्का - अभी यहां नहीं है।

IX (क) Abdmaelik ने जवाब दिया कि हां मैं ने पादरी को बतलाया कि मेरी स्त्री का मलबारी बन्द होता है तो एक या दो सांझ दवा को साथ मूली पीता है (दवा — चाउलाल चाह डाक्टर का कुछ चीज) मैं ने इतना ही बताया।

पादरी L. Lakra: मैं अभी कहता हूं कि जो लिखा गया है उससे आप प्रमाण देंगे - कशीरा का। मैं प्रमाण दूंगा महेन्द्र मास्टर बुलाया जावे कि यहां कोठरा में कैसा व्यवहार होता है - कोठरा नहीं से ।-

B आमदनी के विषय -
(क) जवाब - हरबन्त - पैसा लाने के लिये झूठी मांगते हुए बताया - पंचों के जरिये मैं सवालों के ठहराया गया - मैं इलाका ढूंढन से सेक्रेटरी के पास पहुंचा देता हूं। पैसा के विषय मैं कहता हूं कि जो पैसा हाता में मिलता है उसी से नापता हूं और रुपया में जो पैसा लगता है उसी से नापता हूं और जो बचता है उससे प्रेम भोज करते

है। ऐसे अवसर में जैसे अभी आप लोग
आये हैं उन का हिसाब मेरे पास है और मैं
जो सेक्रेटरी को देता हूँ उसको हेडमास्टर
और पाद्री बोला होते हैं। हेडमास्टर को
मैंने कभी नहीं बताया कि बिक्री कैसा
करता हूँ। पंच लोग भी मुझे कभी नहीं बताया
है कि इस पैला से या उससे नापो।

इलियास: पैला जिससे नापा जाता है
सो मेरा ही है २६ कनवा वाला। कैसा बिक्री
होता है मैं नहीं जानता हूँ - गिर्जा में बिक्री
का भाव बराबर नहीं ठहराया जाता है। बाजार
भाव से कुछ मोल बिक्री होता है।

हेडमास्टर: मैं हिसाब किताब से
बिल्कुल बाहर हूँ।

पाद्री R. Lakra: चावल जो खरीदने आते हैं गिर्जा
में तब हेरवन्त नहीं देता था तब कोई लोग
अप्रसन्न होकर मुझसे बोलने लगे तब जाँच करने
से कुशल और नसीबदास मुझको यह बात
बताये। ~~#~~ (रव) मैं साबूत करूँगा।

कुशलमय: हेरवन्त मुझको गिर्जा में न देकर
घर में बुलाया वहाँ छोटा पैला से मुझे
दिया तो एक रुपैया का बदले आठ आने
का लिये जिसमें आधा सेर घटा मिला —

नसीबदास: हेरवन्त २६ कनवा पैला से देता
है पर बाकी लोग २८ कनवा से (उसका
~~काटने पर~~ मिलाने पर) देते हैं - नाप का
जानता हूँ।

हेरवन्त — गिर्जा घर में न देने का कारण यह
है कि सिरनी डोड़ा ले जाने में कठिनाई
होता है।

गिरजा घर से किसी को नहीं दिया गया
है — ज्यादा खरीदने वाले अधिकतर संथा-
लिन लोग हैं।

हेडमास्टर: हेमन्त से एक रोज गुप्त रूप
से बात किया कि मुझे चेयरमैन होके अच्छा
नहीं लगता है कि यहीं चढ़ाया गया और
यहीं पैसों — से डाकुओं का खोट ऐसा
लगता है।

President: आमदनी कितना व कितना है?
हेडमास्टर: लोगों को चले गये और लोग आये
और बताये कि हेमन्त महीना २ जमा करके
पैसा (बिक्री किया हुआ) और बाकी चावल मुझको
देते हैं। बाद में सब को पैसा में बदलता हूँ।
मैंने बीते साल के पहिले पादरी को कहा कि
आय के सिविल में २ प्रत्यावर्तन है, जशपुर
में २२ हैं — मैं पूनम नहीं सकता हूँ — (सो
हेडक्वार्टर आफिस के कहने पर) मैं कोनड़ा
प्रत्यावर्तन के आमदनी से 8) रु भर लेता
हूँ आप के हाथ से उसको पुरोहित को दिये
परन्तु बीते पूरा साल से जब नया पादरी आये
तो कठिनाई में पड़कर आधा पादरी को
और आधा स्कूल को देता हूँ। मैं
नहीं खाता हूँ।

(ख) नोटिस पढ़ा गया ———
हेमन्त — मेरा लिखा हुआ है — मेरा गुस्सा
है — अनजान बातों के लिये दौड़ कर — मैं पादरी
से बहुत सीखना चाहता हूँ — यह नोटिस 8 बजे
पहिले का है पर मैं कुछ नहीं जानता था — मैं
लड़काई ज्ञान से लिखा था। मैं माफी मांगता हूँ।

Rev. L. Lakra. मेरा कहना है कि हेरवार्थ जेमस्टोन के कहने पर यह थीसिस लिखा

Hdm. Ign. Lakra. मैं इस थीसिस का विषय बिल्कुल नहीं जानता हूँ।

Herwarth: मैं अपने अज्ञानता को मास्टर्स लिखा – हेडमास्टर से कुछ भी सलाह नहीं लिखा। मैं अपने निज सोच से लिखा ✓ सब प्रत्याख्यान ने जाना था ——

Hd Supervisor: पादरी से – क्या आप यह सोचते हैं कि हेडमास्टर ने हर्बर्ट को ~~बतलाया~~ तो हेडमास्टर को आप को लेख? ✓

~~Ign. Lakra~~ Rev. L. Lakra – हाँ मैंने हेडमास्टर को ~~[illegible]~~ बोला था।

Hdm. Ign. Lakra: मैं बिल्कुल नहीं जानता हूँ ✓

Ele. Toppo – मैं तो बिल्कुल अनजान हूँ।

Hd Sup: हेडमास्टर! क्या पादरी आपको शोध विषय मना किया था?

Ign. Lakra ~~[illegible]~~ नहीं बिल्कुल नहीं।

IX

H'Ship: पूछा कि सेन्ट्रलाइज होता है कि नहीं ?

हेडमास्टर ने सेन्ट्रलाईज के खिलाफ जो इलाका में होता है बयान किया। पाहीन ने बयान किया जो कहता है कि सेन्ट्रलाइज नहीं होता है।

बताया और दिखाया गया कि कोड रा, से सेन्ट्रलाईज किया जाता है।

इलाका सेन्ट्रलाइज: किसी प्रकार से होता आया।

Findings — हेडमास्टर सेन्ट्रलाइज को रोके — नहीं मिला।

इलाका प्रभारी — पार्टी को कहा गया कि १९३३/३३ के डायरी को दिखावे और बतावे कि हेडमास्टर से क्या बातें हुई।

१९ हेडवर्क — २ कि जून १९३२ को ४०) में से इलाका पंच को इजाजत २०) रु. स्कूल को दिये।

हेडमास्टर — रोकड़ रुपैया इसी जिले में जमा दिया गया। हम उस महीना रुपया मुझे दिया गया। स्कूल में कोई चार्ज नहीं था सो नया था। स्कूल में कोई चार्ज नहीं था सो ~~~~ उसी बात चार्ज लेने को २०) रु. मिला सो उसी बात में खर्च किया गया।

X

Rev. L. Lakra : १८३२ करीब और अनुप्रीत चाल स्कूल और तेलापा के बीच आये आय बांटा गया — यह स्थान के सावधिया गया। (१८—१३ ई)

गीत गाया गावे।
प्रार्थना के साथ विहान का पंचोट अन्त हुई।

दूसरा बोली

A गनाम contd from Page IV

मनमसीह रम्बा का इजहार
पियेगा ~~के~~ के तो देखलों मगर मतलब के देखलों — मोंय आपेक सोबसे पहिले हेरो के बतालो।

Hero : एक मरतबे बताय रहे कि H.Sm. मोंय कहलों अगर दारु पियेला — मोंय कोंडरा ने पियी वो पिलायदेबों।

A S. मनमसीह — एहो बात सच आहे मोंय इलियाजर मास्टर के बतालों।
इलियाजर — मुझे ख्याल नहीं है।

A च. मनमसीह — नैमन बतालक कि मास्टरजी जानलक
नैमन — मनमसीह को मैंने नहीं बताया है मैं दारु का बोतल भी नहीं देखा है
मनमसीह — हम लोग दोहो जन थे— दोनडिया के घाअर में कहा।

डि. मनमोहन — मांग एक बोतल दवाई ले लाइए देखो — जैसा बताता था सो वे तो मांग को याद करेगा। मांग बोतल लाइए के मास्टरों से देखो।

Headmaster: डाक्टरों ने मैं २००) था खर्च लिये हैं बराबर देखने जाता हूं — (२५ + २३) किया जमा २८४ — मनमोहन जो मेरे विरुद्ध बोला है उसके कारण — (क) वह मेरा अपमान करता — (क) वह मेरा अपमान जाने के पहिले २०) मांगता था — मैंने नहीं दिया (ख) नुकसान और अपमान से लौटकर (विनय) मेरे पास कहा कि मैं जो डाक्टर — था सो काम मुझे दो दिये — मैं मनमोहन को जानने के लिए कहा कुछ मुझे नुकसान जाने के लिए कुछ नहीं बोला और गया कहने कहा कोई लिये कि आप आपही बड़े बातें कोशिश उसको मैं beaver नहीं बनाया लिखकर उसको मैं काम और बोलो तो कारण — उसके पास मैंने Head मालूम होता है वह कहता है (ग) Rev. L. Laber का वकीला सबब है — उसका 8) का खिदमत है पहिले पाद्री उसके हैं। महीना देता है काम करावे वह नौकरी से निकाल सकता है (घ) इन दोनों ने इलाज कर सकता है कि पादरी मनमोहन को गाड़ी मेल है कि पादरी मनमोहन को गीता यहाँ बना दिया है और जैसा उसको आठ और बातन को सिखाया वैसा ही बोला।

४३

~~मनमसोहन~~ पाण्डे से चलाया करता
मनमसोहन द्वेष रखता है, ये दोनों मिलकर
हेडमास्टर को गिराना चाहते हैं।

मनमसोहन: जब से गुलाम नबी गये हैं
सलीम नांय होरी और इलियास्पर मास्टर
को बताय रहे।

नैमत खुसरू: कुशल से पूछा - महेन्दु से एस
गुलाम कब पूछा —
जवाब — प्रायः रावण बिलन — नांय
कहलो हमरे मन की जानो - मिलियान
जो बैसाखी कहलवा। नियोत तो संग में
नहीं रहे।

H.O.M. नियोत की बात आई तो मैं
स्कूल की बात रखूंगा — नियोत मेरी
ओर तिरछी नजर रखता है। मेरा बेटा
पुत्री की बेटी की सादी कर रहा है और
इसलिये वह मेरे और मेरे बेटे को देखेंगे
कहता है।

President: H.O.M. क्या आप उसको जरिया
ले गये थे? जवाब: हां
क्या निसा थीं ये? नहीं, बनाई हुई
बात है
इसेर सुमार गोस की बात? हमारा
सेर खांसी का मास लिये थे
और ससुराल लौट गये और गुरबख्श को
नहीं गये।
दारू गुमला से लाये थे? नहीं जानता
हां।
मनमसोहन को यहां मुहोबा दारू लाने भेजे थे? नहीं

XLVIII

Rev. Im. Kufir: मिस्ट्रेस आप ही जानती है
कि Kuimbarky साहब को जो मैंने समझा
दिया कि मैं कभी भी उनके खिलाफ बातचीत
नहीं किया हूं — हेडमास्टर से भी बातचीत
नहीं किया हूं।

Mr. Jg. Calem — मैं अभी Kuimbarky
साहब का ~~पुत्र~~ सुनता हूं — Rev. Im.
Kufir के साथ कभी भी मिस्ट्रेस के
मकान के विषय बात किये हैं।

President ने HQm सा कहा —
यह बात आप के रिपोर्ट से निकला है।
आप ने लिखा है — देखो तुम्हारे ~~पास~~
विषय इसी के विषय अनेक बार ईसा-
... भी लिखा — पीये
२०) रुपैया का कबूलियत भी लिखा — आगे
के विषय — यह झूठा नहीं सच है। आप
इसी पर बेइज्जत की बात निकलती है। आप
इसी बात पर पकड़े जायेंगे अगर पकड़ा जाय।
इसी बात पर किसी का रखा खिले-
इज्जत की बात है। आप किसी कारण खिले-
सब से पहिले खिलाफ आप हैं। आप को इतने
विषय के खिलाफ होना चाहिये। लाख देखो
पर लीख मत देखो — आप ने तो लिख
दिया है। आप ही पकड़े जायेंगे।

पैला विषयक बात

जो पैला लाया गया (हैरो बताया पैला जिससे बच्चा है) – कुशलनय : सन्देहयुक्त

नकोहदारा – इसस नहीं दिया

रघुस्नेमपाल – इसी पैला से दिया ✓

Hego – नाई लोग कहते हैं कि इस पैला से लगता है और और इहि कनवाले बच्चा है – इनको किसी ने

डायरी विषयक बातें : पादरी ने कहा कि डायरी में खोज नहीं सके। – मुझे नहीं बताया – सभा में कहा गया क्योंकि हो द्वारा (पादरी के रिपोर्ट से) सदा लाईन बन्द हुआ और कि पेर हो द्वारा बड़ी सिरनी बन्द हुआ ✓

सो कर पादरी से रखना

कशीरा का नरेन्द्र मास्टर : एक रोज पादरी के बरांडा में बैठे थे तो कई बार पादरी से रुपैया मांगते आये थे तो उसने कहा कि नहीं पार (फूलो) तब एक बोतल दिया था और तीन बोतल पादरी बोला कि लोग कहते हैं तुम एक हम को दिये हो – तब नहीं चार बोतल कहते हो – तब नहीं चार बोतल बोलते हैं बोलने कि नहीं, कहु कौन बोलता है बोलने वाला ही को तो दिये हैं।

हेडमास्टर : उसरोज (मुझे याद नहीं है) मैं अपने काम से फुरसत पाके रांड तरफ निकला – नहीं दार को देखा कि हातों से निकल रहा था मैंने पूछा क्यों लाता आया। मैंने पूछा क्यों? उसने कहा कि पादरी को खोजने आया था

XLVIII

यदि मेरे ऊपर D.C. और officer लोग मेरे ऊपर
दोष लगाते जायेंगे तो मेरी जिन्दगी कहाँ रहेगी?
अगर D.C. भी ऐसा ही कहती है तो अपने मनुष्यों
को जाँचने लिये मंत्र या Civil Surgeon ले के
आते।

Hdmispr. बीते साल मैंने Heads को हिदायत
देने वाले होंगे – न केवल Heads को पर पादरी
को भी। मैंने अपना कर्तव्य किया।

Rev. L. Lahri. हाँ उसको भी बोले – Rev. W.R.
Radside भी बोले थे।

क्या आपने ऐसा अनुभव किया कि मैं भी
Mistress पर सन्देह किया? आप को कैसा
मालूम हुआ?

Mistress: मेरे मन में दो प्रकार के अनुभव हैं।
बोले होंगे कि सकता है आप
(a) आप बोल
लोग देखियेगा।
इसके विषय ऐसा डायरी है
अथवा (b) कि
सो भेजके देखियेगा।

Hdmispr: मैं तो हर स्थान में मिस्ट्रेस लोगों
की रक्षा और भली दशा के विषय कहता
पादरी और हेडमास्टर को पर मैं
हूँ – आप के विषय बुरी चाल के सन्देह के कारण
नहीं बोलते हैं पर मेरे कर्तव्य के कारण।
हर जगह बोलते हैं कि Mistress लोगों
को छिपा जाती हो या मैंने आप के बुराई
के लिये नहीं कहे हैं।

XIV

उसके पास इकतीस [illegible] फूलों का दान था [illegible] है उसको मांगने आया था उधार में २५) रु. का नदीयार से मिला सो मुझे बहुत ताज्जुब हुआ पर उसको मिला।

पादरी : इकतीस नदीयार दिया है — पादरी साहब के पास नया जाम के समय

हेडमास्टर : नदी पार बलियाजर ने भी बोला

बलियाजर : मैंने भी और दिये — उस नदीयार से — उसने कहा कि पादरी से २५) रु. पाना है शराब के लिये।

[illegible] : हेडमास्टर और बलियाजर मास्टर साहब को भी बतलाता पार हो गया।

नदीयार बुलाया जाय

(1) हेडमास्टर का व्यवहार —

[illegible] : इलाका पंच का फैसला करने पर —

Julius : हम जानते हैं सब जगह नाचना मना है पादरी मेरे पास थे — मैंने ~~[illegible]~~ उसको कहा कि पादरी ने कुछ नहीं देखने आगे नाच होगा — पादरी ने [illegible] किये जैसा होता है किया — हम लोग नाच देंगे [illegible] है।

Yusaf Topno — नाचडेगा हुआ पर बहुत काम

XLVI

President कैसे आप कह सके कि आपका जीवन बरबाद कर डाले ?

Ans मैंने केवल इसी बात के कारण ऐसा ऐसा बोला – क्योंकि पीछे तो Johan बाबू को बोला कि ऐसा ही लोग पर हम ऐसा ऐसा बोला ।

Johan हाँ इन्हीं गोलमालों के विषय बोला ।

Rev. Im. Kubr – यह इन्हीं का पंचायत इसलिये मैंने प्रगट किया – मैंने अपना अफ़सोस और किसी से नहीं बोला हूं । यह चिट्ठी मैं बिल्कुल नहीं जानता हूं । मैं Johan के पास भी हालों के विचार से नहीं बोला ।

Rev. L. Caleb: Imanuel पादरी से – आप कान से कान जानते न होंगे ।

Rev. Im. Kubr – मैं नहीं जानता था – आप लोगों के झगड़ा को देख मैंने Johan से नहीं बोला । अलबत्ता भी मेरा विचार नहीं है ।

मिसट्रेस: मेरी बात यही है कि Bishop भी हेडमास्टर से बोले थे कि आप मिसट्रेस को नौकरी से हटावें । जैसे अभी यहां वैसे ही चैनपुर में मेरा नाम बदनामी हुआ – वहाँ कर्मचारियों की ओर से Runkanky साहेब बेसामा जबकि मा: पादरी Im. पादरी आये तब से यही बातें हो रही हैं – वहाँ भी Bishop + हम पादरी ने मेरा बदनाम किया – ये मेरा जिन्दगी खराब करते जा रहे हैं । मैं अबला कहाँ जिन्दगी बिताऊंगी ।

XV

विषय: ~~श्रीमें~~ नाजिर रखना बताया जो ~~मालिक~~ में
शत्रुं
हुआ है।

पर इजहार ——

पादरी: गणमान्य बतलाया जब कि पादरी से उसके मैंने पूछा कि मौजूद और उसकी स्त्री से पूछने पर मालूम हुआ।

Julius: वहाँ मेरे चाचा के लड़के की शादी था — हम जुमलों में बहिन को पूछा — मेरे चाचा तब बैठे हैं। बहिन बताई कि पहिली मुलाकातों के कारण आनन्द था पर शिक्षा के गाँव से बेचैन थे और बिमार पड़ गई।

[illegible]: मेरी पत्नी मुझे भी नहीं बताई।

1) जुलियुस तीगा :

नम्बरदार: पादरी बाबू को बिमारी के समय कुछ भी नहीं दिया। [illegible] को भी नहीं दिया।

नर बिशप चर्च कौंसिल में हो गए इस लिये

भगत स्कूल:— —

Julius ने कहा भगत स्कूल नहीं पर Village Uplift Society है — चाइबासा के [illegible] में भगत चुना गया है — Society तरफ से मैं चुना गया।

XLV

President ने Johan (Oppo) से
क्या यह आप बतलाते हैं?

Johan — हाँ -

President - कैसे यह हुआ?

Johan हुआ [illegible] बाजार आये. उसके बाद
पादरी इम्मानुएल से मुलाकात हुई - हालचाल
बतियाते वे बोले कि C.C. लकड़ा पादरी को
बहुत इमानदार और कामकाज में ठीक से
जानती थी मगर ई अपना जीवन बिगाड़
दिया। इसलिए बतलाये तबदल सामने रहे
गये — मैं पूछा भी नहीं उससे क्यों कि मुझे
शरम लगा। मुझसे Rev. L. Lakra से
मुलाकात बहुत दिन नहीं हुई तो जो भेंट
हुई तो हम पूछ बैठे कि सुना पादरी बीमार
कहते थे - वह हमारा गुरु भी था सो पूछना
ठीक नहीं लगा सो कहिये तो क्या क्या हुआ।
भी वह ऐसा र बोले। लकड़ा पादरी
बोले कि कब बोले? मैंने कहा बाजार में
जब भेंट हुई तब।-

President ने Immanuel पादरी से पूछा —

Ans. मैंने तो मालूम की बात और [illegible] को
कहा था C.C. में उसके विरुद्ध ऐसी बात
पहुँच गई है उसको खुलकर कहा कि ऐसा
खुलकर काम करनेवाले पर ऐसा शिकायत
C.C. में लिखा पढ़ी हो गया है और यहाँ भी
बातचीत होता है — इसी अफसोस के कारण
मैंने कहा।

XVI

हेडमास्टर का दरख्वास्त

(जवाब समेत)

Hd.Supervisor ने बताया कि हेडमास्टर ने पादरी डाह से ऐसा जवाब दिया है। अर्थात मेरे और मेरे स्त्री के सम्बन्ध से, क्रोध से, इसीलिए विरुद्ध लिखा है।

और पादरी से — औरों के नाम के विषय नहीं लिखा —?

पादरी: २६ मार्च १९३७ के पहिले मैं ने नयना नयनों के विषय का रिपोर्ट नहीं दिया हूं।

Hd.M.: मैं ~~३२~~ मार्च को रांची जाकर देखा Hd.Super. के आफिस में।

Hd.Super.: पादरी जे: आप के रिपोर्ट को मैं ने Hd.M. को दिखाया और उसको जवाब देने न दिया। मुंह जबानी जवाब को मैं ने नहीं माना — लिख के जवाब मांगा।

Rev. L. Lakra — मैं तो केवल निशानों के विषय लिखा था और लिखा था एक के विषय लिखा था और Hd.Sup. Hd.M. का बदली की चिट्ठी पर 31.5.37 को मेरे पास पहुंचाया जिस तारीख के विषय लिखा।

Rev. Ign. Lakra: मैं ने रांची में Hd.Sub. के office में Rev. L. Lakra के लगाये चोरी रिपोर्ट को पढ़ा।

XLIV.

मिस्टर एस की बाप की सहाय से चिट्ठी 2 7/37
की पढ़ी गई। उसके सम्बन्ध में फिर उसी
प्रचारक की चिट्ठी पढ़ी गई जिसमें पहिली
चिट्ठी को नहीं लिखने की बात लिखी है।
दोनों का हेन्ड writing बिलकुल भिन्न है।
Rev. L. Lakra मालूम होता है कि चिट्ठी यहीं मालपाल से लिखा
नेकहा। है जो लिखा है सो यहीं का जानकारी है – Hdm.
है कि वह (पादरी)
के रिपोर्ट्स से जो बहुत बात जाहिर है कि उसमें
बिलकुल कोड़ा से रद्द किये गये। कि उसमें
Schiebe साहब को नोटिस दिया जाता है कि
पादरी यहाँ से हटा दिया जाय। मुझको मालूम
होता है कि Schiebe का खास और जो [illegible]
खबर है जिसमें लिखा है कि पादरी को जेल
ले जाइये। इससे यह मालूम होता है कि लिखने
वाले कोड़ा के मायर लोग हैं। कि 2 7/37
को जब यह चिट्ठी लिखा गया तो उसको
पूरा जानकारी है वह मजमून क्यों कि 7 7/37 कुबाबर
के दिन मुझको एक लिखित मिल गया है जिसमें
इमानुएल कुजूर पादरी ने कहा कि चर्च
की सिल कोरेन तिर्की लकड़ा के ऊपर
बहुत जोर सा रखता था पर अब [illegible] का
विश्वास उसके ऊपर बढ़ गया जिसके कारण
वे अपना जीवन बरबाद कर डाले – लिखने
वाला जोहन टोप्पो – (यहाँ एक प्रचारक है
जो आज भी यहीं है) – मामला Commission
के हाथ सौंपा गया।

Johan. Toppo बुलाया गया।

Mr. N. Soy: वह मायर कौन है?

Rev. L. Lakra – Rev. Jus. Kerketta + Hdm. सब सलाह करके लिखे हैं।

XVII

पाद्री का कहना है कि मैंने हेडमास्टरशीप के
विषय पहले नहीं लिखा जब तक हेडमास्टर
मेरे और पाद्री आदमीन का विरुद्ध न रहा।
चोड़ा। रिपोर्ट नहीं लिखा था।

पाद्री: जब पाने के विषय में शिकायत किया
तब HdQm ईर्षा और दोष लगाकर लिखे हैं।

HdQm: HdSupdt. ने कहा था कि आप
स्थानीय लोगों का सही दस्तखत करके
भेजिये (अपना शिकायत)

पाद्री: मैं पहले आपको सब पंचायत पंचों
को बुलाया।

HdQm: तब पंचायत पंचों को नहीं बुलाया
को चिट्ठी CC.
Kondh के पंचायतपन
को भेजी गई ता: २७. ८. ३७.

HdQm: HdSupdt. मुझसे हलाका पंच का
मांगे तो ८. दि. ३७ को हलाका पंच
मेम्बरों को चिट्ठी CC. को भेजी गई।
शिकायतों और
सिफारशें हेडमास्टरशीप के
जायने के सम्बन्ध में लिखा है।

HdSupdt. मेरे विचार में पाद्री से पहले रिपोर्ट
मिला तब हम HdQm से दलील किया
शिकायत HdQm भेजा।

पाद्री: शिकायत और दोष लगाने वाला मैं
पहिला नहीं हूं।

HdSupdt: File से देखा जायगा।

मिस्ट्रेस लोग भी शादी से सब थे। तब कहलो अगर गवाह कहैं तो बचा ली नैरवे गवाह पुरैक तो नो पावें।

President - नटिपन से -

काहे नाचनी कहलो?

Ans Supervisor लिखके भेजलक कि चार बातों का खबर लानेक और दिये का जाये कि एक कागज पादरी कि लिखलक सके पादरी भी के बतालक। भोय चिट्ठी गेलो और कहलो कब होलक साबूत नहीं पुराने होने तो मैं अनगुत और दवो कि आपने तो सादी बिहा में नाचो लोगों पादरी में लड़ैना आगे ना - इतना एक जातल लेत ने चूल 325 पावक जे नाचे सेरवे भार नाचनी कहैं न। रहे बात के एक बरात देखे (आपन आँखे) ननबा कहे के कहलो - तो 37 मन आई, के जाय रहे तबसे एकहान से खूब बत- मालो कि मिस्ट्रेस मुखित और मास्टरीन तो खूब नाचत रहे। ई आसपास के आदमी के पूछबा - जे नाचे न लेवे भोय तो नाचनी कहे न। भोय बबची नौन पादरी के बगल के एक बसंत में भी कहे हो। तकर में Headmasters कहे भोके मुख्य कहला? Mistress के बाप के भी मुख्य ठहरावैं और इन भोके ठहरावैं। मिस्ट्रेस के बाप कहाने कि कोको चिट्ठी कहेना का चिट्ठी भोज CC में भेजलो कि CC ननोर से पूछा पूछी करैं ना।

XVIII.

President: Dyn. Babu से : सबूत दीजिये
एक पादरीसाहब, लिकर्स पीते हैं और
पिलाते हैं

Dharmanath Khes: सर्विसचल का दिन था
नहवा बोटा करते थे-
जोहारी का दिन - नहवा का मेला
युवकों आठबजे से लालटेन पकड़कर
पाना था - 7" बजे सब पानी का
मिनिस्टर और पादरीसाहब जमुन
बोतल पकड़कर आठ बुलाने गये - वे डर
गया - पूछने से बोले कि हम बार पीते
आये हैं - आठ आनों वाला हम पीते ही
लेकर जाम पानी को कहा था उसमें
आयल आया जो लाली था नर बचले
आये - पिये का नहीं बुखलो - बचलाकर
सबको मांग पिलो। दोनों [illegible] बात
बोले। - जड़ीबार बयादुओं को दिया।

प्रचारकगण को चिट्ठी:
Hewards: हेडमास्टर पंचैट बैठाये।
पादरी रही में इसलिये टली ही को
बुलाये। और कुछ नहीं विचार
किये

Ilaka Panch:
इसमें भी पादरी आजुपस्थित थे।
स्थानीय इलाका पंच लोग लिखे भारती
Executive भी हैं।
पादरी - चेयरमेन को गैरहाजिरी में
यह बात हुई।

काले तो पउके रैसन कहिसलो लेकिन
कहियो तोहरे कोर झगड़ा झाड़ि नहीं सुनलो
झाइया कहे उका नचानी कहिसला कि तो
पादरी साहिब कहला कि मोय तो झगड़ा खोजोना
सरे हेडमास्टरीन के कोह कहे तो ऊपर जाक
बाजार जात रहों तो बकचोनी रास्ता में
बतालक कि तोके पादरी साहेब नचानी कहले
हे और कि मोय तो उकर से झगड़ा।
खोजा नी। मोय बकचोनी के कहलों
कि झगड़ा। झाड़ी कहले पया गैरके मोय
नी खोजोना से कहे नचानी कहलेला —
नचानी तो उका कहेना जे आदमी से
नचैना और आदमी नाचे लूटैना- का
हम उकर आदमी के लूटलों जे हमके
वैसन बोलोला। तो कुछ दिन रहतने होलक
बकचोनी पादरी साहेब के ई सब बात
कहलक तो पादरी साहेब कहलक कि
हो तो मोर आदमी के लूटला और
मिस्ट्रेस तो रहे। तब हमर गुनला चेल
गेला। हम हफ्ता बाद तो दुबा जो मोके
बसानी मिस्ट्रेस पूछलक कि मुसो
पादरी और मिस्ट्रेस कर ऐसन २ बात
सुनीला से का बात है? तो हम कहलों
कि हम नहीं जानी लार ना हम कहला
ना वैसन बात जानीला। कहाँ से सुनले
सेहो मोय उका नहीं पूछलों। उपार से
~~जुलाई ११ ता. में~~ बुधवार के ११ जुलाई में मिस्ट्रेस
का कहलो कि देख मिस्ट्रेस तोके और
मोके तो पादरी साहेब ऐसन २ कहा थे कि

XIX

साहिब : इलाका पंच मेम्बर से चिट्ठी मांगा गया था इसलिये Exec को दरकार नहीं थी।

पादरी साहिब : नहीं कह गये थे - मिसेज़ को। कोई बताये कि जनरल स्टोर में दवाई मिलती है सो हम लोग लालटेन लेके गये थे और ~~२~~ २ आना के ले के बोतल भर लिये - बचा उसको लड़का लोग पी गये।

मिसेज़ : मतलब जनरल स्टोर + फूली मतलब है। नहीं कहने मिलाया हुआ मतलब बचा उसको नहीं देने के लिये लौटाये तब दान दिया गया है बालक लोगों को चुपचाप और पी लिया।

Re: School fees

इलियास : सबूत नहीं दे सकते हैं। सुनी हुई बात है। पंचायत लोग यहां नहीं हैं।

साहिब : H.I.Supdt. को चिट्ठी जोर से insist करने के विषय में लिखेंगे D/. 31.5.37 और बार बार

पादरी : हेड मास्टर के जरूर और इस ओर Minute 14.6.32 Para 9 बात है। Ilaka पादरी प्रबंध करता है कि नहीं। देखिये 12.7.32 Para 4; 17.7.32 Para 4; 14.12.32 Para 2; 12.7.33 Para 3. 22.6.33 No. 9, 14.2.34; 12.5.1936. मैं खूब चिन्ता स्कूल के लिये करता हूँ।

President: पादरी साहिब से तुम्हारा झगड़ा हुआ कि नहीं?
पादरी साहिब मुझसे बोले कि तुम लोग तो सब बाहर निकल के मुझको अपने मुहल्ले से अलग करते हो तो मैंने कहा ऐसी बात है तो आप आप अपने machine में काम करने नहीं देंगे। वह बोले नहीं। कारखाना था कि उसके machine में तेल नहीं था इसलिए चलाने नहीं बनता था। मैं उसी समय लौट के Headmasterin के machine में सिलाई कि है।

Headmasterin to President:
हेडमास्टर बोलते हैं कि आपका और पादरी साहिब के बीच झगड़ा हुआ इसको आप Headmaster को बताई?
Ans. तो हम बताई कि machine में तो सिलाई नहीं करने देते तो से झगड़ा। बोलते हैं कि हमारा machine में तो कोई नहीं सिलाई और रहे तब झगड़ा लगे तो नहीं खुलती।
Qn. किसानों के तो ये बताके विश्वासियों को बतलाना कि पादरी साहिब तो के. पादरी से छोटा?
Headmasterin: पूछा के दिन रहे, मांड लेने के आती। पादरी साहिब विश्वासियों को पूछना कि बतलाना आप मांड ले जाना? विश्वासियों ने कहना कि

XX

है। गड्डी से strong liquor लाता है
(Hobbs' ~~letter~~)

पादरी : किसी रोज नहीं लिया गया, न खाया गया न पीया गया है।

Hobbs : खानसामा बतावेगा।

खानसामा : मैं ने नहीं देखा है।

Hobbs : गाड़ी लोग सब जानते हैं पर shy हो गये हैं।

Hobbs : गवाहों का नाम मैं पीछे दूंगा।

पादरी : कभी २ जाता हूं — गड्डीवार लोग कई कागजों को पढ़वाते हैं इसलिये, फिर Xian लोगों को सीखने के लिये, और गड्डी में कई बार चोरी हुआ इसलिये Inspector साहब के साथ जांच में गया हूं।

Pres : दवा के वास्ते कितना दिन तक पीते थे आप या आप की स्त्री?

Hobbs : जब २ मेरी स्त्री का monthly काम होता है उस समय पीती है। १९३२ में पीती थी या पर आजकल नहीं पीते हैं।

पादरी : मैं ने नहीं लिखा है कि वो पीकर स्कूल या गिर्जा करता है।

Hobbs : निर्मल बाबू का रिपोर्ट में लिखा है जिसको मैं ने पढ़ा — रास्ता (गुनला) में पीता है — स्कूल में पीता है —

पादरी : अच्छा रिपोर्ट में देखा जाय। —

दूसरे दिन की बात — २

दिन भर पादरी साहिब से मुला-
कात हुई जब साँझ हुई तब कचहरी में
मुलाकात हुई उस समय भी इस बात की
पादरी साहिब से पूछ पाछ करना मुनासिब नहीं
बना क्योंकि लड़के और लड़कियाँ गिरजे
से छुट्टी होके कचहरी वालों तक पहुँच
गये थे। मैंने सोचा कि इस बात को
लड़कियां पढ़ने लगे
जब लड़के और
जायेंगे तब मैं पादरी साहिब से एकान्त में
इस बात को पूछूंगा परन्तु लड़कियों ने
द्वार खोल दिये। पीछे मुझको हेडमास्टरनी
फिर बोली थी कि देखो अगर तुम इस बात
की जाँच पड़ताल करोगे तो मैं साबूत दे
नहीं सकूँगी क्योंकि कचहरी ने मुझे बतलाई
थी अभी तो वह यहाँ नहीं है उसी समय
फिर एक बात बतलाई कि देखो तुम पादरी साहिब
से कहे संगति करती हो और उसके नाम को
(पादरी आदि की बात) कह को लेती हो। तब
बातों का नाम उसके ऊपर डाल दो। बस
तुम सब बात से पार होगी। कुछ दिन को
बाद फिर हेडमास्टरनी ने यह ही बात के विषय
हम लोग झगड़ा लगे तो फिर वह कहे
व्यभिचार की बातों को लेके मुझसे बोली
कि तुम कहे को पादरी के बंगला जाता हो मैंने
कहा मैं तो अपने काम पर जाता हूँ तो भी
आप कहती हैं कि क्यों बंगला जाते हो
इसका मतलब आप ही जानते होंगे तो बत-
लाइये। पर वह नहीं बतलाई — उस रोज
का झगड़ा अन्त।

XXI

पादी : डाइरेलो की बात १९३७ की है

नामसौत : ३२ की बात है, नैमन जो बताया सो झगड़ा के समय का है।

Boarding Godown

President: हेडमास्टर से — आप का क्या सबूत है

HdM: १३.७.३२ में पादी १ मन
१३.८.३४ " " १ मन
१२.१०.३४ " " २ सेर
८.८.३२ " " २ सेर
२७.७.३७ " " १२ "
} चावल लिया और नहीं दिया है।

इलियास : पैसा दिया गया है, मैं दे दिया हूं

HdM: १९३७ के पूजा छुट्टी में, एक टीनतेल गोदाम में रखा - दो अंगुल तेल का लोग जलाये थे। आके देखे ३/८ तेल गायब है - तेल की बोतल खराब था — अनेक बार पादी का बोतल देते हैं इसलिये सक करते हैं नहीं मिलता क्योंकि तेल अनेक बार लेकर दिये हैं।

पादी : चुराकर नहीं ले गया। ४ मन चावल के बिना किसी रोज आप HdM से ले बोलते हैं कैसे लिये? आप ऐसे बड़े आदमी से कैसे

HdM: आप लेंगे? २०॥≡) ~~१२~~ हेडमास्टर

पादी ~~आप कहा~~ २८।≡)। से रसीद मुझे मिलना है HdM से पाना पचास पर कहीं से मुझे के बिना निश्चय होता हो। मैं चावल से नहीं काट सकता हूं।

मोंय कहलों चल तो और पादरी के बताव
तब दोनों मन आलो और पादरी को
बताइला — उ सब बात के पादरी को
बतायो। पादरी मोके पूछायो "तोंय रे सन
कहले हर" मोय कहलों कि कोइयो
नी कोई हो बस तोंय गेले हरवन
नी कहलों आज कुछ कुछ हवानो सेलन
कहलों। मोय बांधा जो तो पादरी
कहलों न मोके. तब नइ कोई होला
कहलाक
तब।

President मिसेस से — तोंय बताव —
यह बात तुम को कौन बताई ?

Homastarin. के संग रहती हो तो भी
11 July 1937 तुम लोग प्रेम अपन पादरी से व्यभिचार
आज पादरी साहेब ... रही है और लोगों के
को बात खोल रही है यहां तक कि
बीच में फैला रही है यहां तक कि यह बात पहुंच गई है-
गुनवा में भी यह बात पहुंच गई है-
Homasterin उ अपनी बाट चली
इतना बतलाके इनबातों को
गई। मैं आश्चर्य में पड़ कि पादरीसाहेब ने यह
विचार करने लगी कि मैं उससे पूछूंगी।
बात कहां से निकाली
इतने में Homastarin फिर आई और
मुझसे पूछी कि क्या विचार करती हो?
मैंने उससे कहा कि जो बात आपने बत-
लाई है उस बात को अभी पादरी साहिब
से पूछूंगी। पर खैर उस समय स्कूल का
time था मैं उस रोज किसी सूरत से
पादरी साहेब से मुलाकात होने नहीं पाई।

XXII

पादरी – मुझको हेडमास्टर से पाते हैं और ~~इसलिये~~
देना भी है इसलिये देता है।

Kondra Halka ke Pracharak aur bhai log
Padri par biswas nahin
karte hain.

H.M.: एक रोज बाजार में H.D. Supervisor
(नकशा 221) का भेजे थे – और बोले थे कि
नकशा के लिये जमा किया जाय। बाजार में
आबदिनाद प्रचारक था – यूसुफ वाला नया रखा
किस ओर से जमा किया जाता है ऐसा आबदिनाद
पूछा तो कहा कि H.M. sahib से – । यूसुफ ने
कहा तकता देना चाहिये यदि पादरी कुछ जमा
कहा तक तो नहीं देना चाहिये था।

यूसुफ: मैंने कहा कि देहात में प्रचारकों को
करना चाहिये। आबदिनाद ने कहा कि
देना चाहिये। हेडमास्टर कि पादरी देखो
बात का याद नहीं है।

Pres. पूछा सभा से कि क्या और भी लोग हैं
जो पादरी पर विश्वास नहीं करते हैं?

मनमसीह हुआ — नोंय कोंडरा प्रचारक पन में
उपाध्याय हों – नोरिस हेडमास्टर लिया था –
उसमें सब का नाम था। – मैं उसको ~~कहके~~
किया है। दोनों जनों पर चन्दा का विषय
विश्वास है।

H.M. पादरी नहीं लिया है।

XXXVIII

और मिस्ट्रेस वाइजमैन से मोके
बबर्चीनी बतौलक कहह के हेडमास्टरीन
मिस्ट्रेसक बतौलक। सेखन मिस्ट्रेस
उदास होलकथ, कैसलक हो आपन माइनी
के सटला काईहके, हमर बंगला में
हेठा रहल बे आग लागे बबर्ची खाना आलों
बैठ रहल - तो सेठे रखन
सेखन मिस्ट्रेस माड़ पानी लाने गेलक
हरियानर मास्टरीनन
सेखने मोंय आग निकलाय के लाइगे रहो
सेखन मिस्ट्रेस उकरले माड़ निकलायके
देलक और रख ले निकल के गेलक
और दूसर बेर कहरक (सिकारी लगाय
देलक) मोंय कहलों कि लालन मिस्साहेब
नगर उ चाइल गेलक। गिर्जा से थोड़ा
नन दुरी होलों सेखन बबर्चीनी नहीं
रह आपन से पकाल रहे ~~...~~ आठो
सुखायकरल गेलो। मोंय कहों कि
मोंय का देख कलों जे मिस्ट्रेस मोंके
बरव काइक गेलक - थोड़ा नन खालतों
से ह बात का आयके पादरी के बतै देलों।
~~...~~ तब कहलक का जातो मिस्ट्रेस के
बोलाय लानके - तब मोंय गेलों तो
मिस्ट्रेस कहलक - तोंय ताहर पादरी
से मोके सटीसला स तोंय मोर स साहब
तब मोंय उके कहलों हे बहिन मोर
आइनी ४ बर्ष सीरव ले जाय रे सेखन
नी सटलो तो आज सटबो। मिस्ट्रेस
कहलक तोंय सटीसला मोंय नी जाबों

XXIII

Pres. प्रचारक को विश्वास नहीं करते हैं पादरी पर इसका प्रमाण ?

H.M. अवधियाद बाबू के तरफ से मालूम हुआ।

Pres: इन दोनों के कारण पादरी का दोष आप के ऊपर है ?

H.M. हाँ।

Pres: अवधियाद बोला ?

H.M.: हाँ। पर हम ख्याल

दूसरा: हम नहीं रखाते हैं नहीं करते हैं।

H.M./Inspector: ने सिफारिश को पहले जिले साब पादरी नहीं दिया। 20.8.38 को दिये पर

पादरी: कौन्सल ने केवल नहीं पर साब तरफ सुनाया गया था।

H.M. साब प्रचारकगण तरफ का पद सुनाया था।

इधर उधर से कितना २ आया सो नहीं। जैसे टिपकापानी कितने आदमियों ने बताया कि उनके वाले ने बताया। कितनों ने बताया कि तहसील नहीं हुआ। कितने प्रचारकगणों में तहसील करके हेडमास्टर को ने कहा कि तहसील करके हेडमास्टर को दिया। कितनों ने कहा कि Labour को दिया। नहीं पर पादरी को दिया।

पादरी: मुझे पूरा ख्याल नहीं है। हेडमास्टर हिसाब ऐसा कारबार है कि मेरे लड़कों का फीस साब

H.M. काट लेते हैं। हेडमास्टर बहुत महीनों में मुझको आमदनी को देता है इसीलिये मुझे पता नहीं लगता है। हेडमास्टर खजांची से महीना २ पाता है।

XXXVIII

को जरा कालेज में बोला अच्छा आप लड़कों से सुना किन्हीं के मा. ले. मुझे तब गोपाल बोला कि यह बात बतलाये कि हम लोग इलियाजर मास्टर से सुने हैं। और उस रोज ऐसाही भेंट हुआ। और बोले कि इस का सबूत आप को (इलियाजर) के पास साबूत देना पड़ेगा।

इलियाजर: मैं लड़कों को नहीं बतलाया हूँ। आप लड़कों से भी पूछ सकते हैं।

2 Sept 1937 मैं हेडमास्टर

Rev. L. Kalem — रिपोर्ट देते हैं कि आसपास में प्रचार हुआ है और अभी उसी विषय का बातों में वह ([illegible]) रिपोर्ट देता है कि इलियाजर के कहने से मैं जानता हूँ तो मालूम होता है कि इसका प्रचार पहले से हुआ है कि इसका प्रचार हेडमास्टर और हेडमास्टरीन की बदनामी प्रचार किया है कि और भी कहीं।

मैं नहीं जानता हूँ।

President: मिस्टर [illegible] और तुमने झगड़ा हुआ था?

पादरी साहेब — जब हेडमास्टरीन [illegible] मिस्टर [illegible] को बतलाया है कि देख [illegible] से तीन मिस्टर [illegible] ने पादरी से ऊपर से संग २ [illegible] संगति छोड़ हमारे सदा से ऊपर संगति एक संग रहा — उनको अपने संगति से निकलवाये — देख गुमला जाय जाय को बताने कि गुमला में सभी जानते हैं तो देखते सभी ने हर बतलाया था कि पादरी

XXIV

पंडली पंच का हिसाब देखा गया जिससे पादरी रिस्तों ने चाहा कि कई महिनों का हिसाब गड़बड़ है।

पादरी: कि नक्शा के लिये दिये कि नहीं सो ख्याल नहीं है। मुझे शक है कि साल के चन्दा का हिसाब भी ठीक नहीं है।

Basanti Ekka और Mansidh Kujur को पादरी भगाया

हेडमास्टर: बसन्ती को मैंने पूछा कि क्यों पादरी के कार्रवाई से भाग गई। वह बोली पादरी हमारे नंगापन को देखने को बहुत ऐच्छा करता है।

President: इससे आपको (HOM) का रद्द हुआ है यह तो उनही की बात है, आप की नहीं।

HOM: क्योंकि मैंने मिस्ट्रेस से पूछा और नहीं पाया।

HOSupt: HOM का कहना है कि ऐसा ही उनको भी करने चाहता है।

HOM: उसी तरह से मुझको भी ले जाने चाहता है।

पादरी: नजदिक अपने बिछावन के पास से गया। बसन्ती ~~के~~ के बिषय अपनी कहिन कैसे कहदिक कि कई नहीं जानती है।

XXXII

हो गया तब एकबार अर्थात गोपाल जी
कनईडुबा आसपास प्रचार किया था तो
मैं हाजिर था — मैंने उसको कहा कि
को पादरी साहब के विषय बिना सोच
विचार के ऐसा बोला। वह बोला कि मैं
किसी से बोला — तो मैं बोला कि क्या तुमको
मर्दलोग और नहीं किया जाता है इसलिये
ऐसा बोलोगे बिना सबूती के साथ? तब
पीछे वह बोला कि स्कूल लड़कों से सुना
उसको कहा कौन २ लड़का है? तब वह
बतलाया चीरोड़ाइ को सिमोन खड़िया
और शिरकेरा का कुशल टोपनो।
चामसीह जो बोला था कि मैं पहिले से
जानता था सो हाजिर नहीं था - पीछे
सो मैं उससे नहीं रुका तब इसी बात को
जब वहां बस हो गया तब हम लोग चले
आये और हेडमास्टर के पूछने पर बतलाया।

President: ऐसी बात आईन के विरुद्ध है —

Rev. L. Lakra — उसी २२ ता० में मैं इलियाजर
लोकोबेहराटोली में मोकाबिला
मास्टर को कि कुशलनाथ एक्का तुमको
किया था कि इलियाजर मास्टर प्रचार किया
बतलाया कि आमगाछ के पास कुशल से बातचीत
है। वहां बोले कि ये बातें तो आपको
होने लगी तब वे खेत की लिखापढ़ी हुई उसके
है। जिस रोज हमों को मालूम है
आपही बतलाये जिससे वह बोला मैं दोउर के
इलियाजर को पूछने से वह बतलाया कि गोपाल
मास्टर से सुना कि कनईडुबा में प्रचार करता
इसी बात को
था और चामसीह से जो सुना पर गोपाल
से जांच करने से वह बतलाया कि मैं
सिमोन और कुशल से सुना। और गोपाल

XXV

पादरी का स्कूल Visit नहीं करना

~~पादरी~~ Pres. हकीम से क्या जाय करने देखने वाले थे।

हकीम: वो अपना duty आपही जाते हैं।

पादरी: इसका Inspector के visit के समय मैं जाता हूँ। Cash Book सब मैं देखता। मेरा विश्वास है कि सब पुराना ~~हकीम~~ है इसलिये नहीं देखा।

हकीम: x Kumar Deputy + Chowkas Labary के साथ जाते हैं पर Pastor Supervisor का लवाजा नहीं देख सकते हैं

पादरी स्कूल पादरी है

पादरी: रांची नहाना जाना था - कपड़ा काई साफ नहीं था इसलिये थोड़ा खेजेड़ बेजोड़ होने एक मुक्का मारे जिससे थोड़ा दर्द हुआ था। बेहोश नहीं हुई थी।

H.O. Sinha: आधी रात?

पादरी: नहीं - खाने का समय था दर्द होने से हरिरामजर को बदले के लिये बुलाने गये थे।

हकीम: पादरी गया और प्रायः रोने के समान हरियावन को बुलाया होकर उनको और इनजाकर देखे कि पादरी पादरीन लगी सांस लेती थी। दवा लगाने से श्वास

XXXV

जानते हो? (सवाल आदमी सोता था) X.m.
लोमेहरवालों में जाना हुए थे। एक भाई बोला
कि मैं (चानतर्सीन रेवरन्स) बहुत पहिले से
जानता हूँ। तब मैं बोला कहां से तुम पाया?
ओक्टूबर के २१ ता: में यहाँ कुछ झगड़ा
हुआ Laurentius Zahra साहिब से तो उसी
सन मैं और पाद्री साहिब बात करते हुए
बहरावालों गये - वहां जाने का कारण यही
हुआ मुझको पाद्री साहिब बोले कि तुम
कनागढ़ी हो चरागलब हो तुम मेरे और मजिस्ट्रेट
के बिशप जा जाके गाँव में प्रचार करते हो
~~इस~~ और बात है मैं नहीं बोलूंगा - इतनाही
बात से मालूम कीजिये। जिसका जिसका
नाम पाद्री बोला कि तुम प्रचार करते हो
उनके पास गये - गुल सुनार भाई सब
अपने रोन के ऊपर आन साहब के पास
चले आये - एक भाई उरीक पिटता था
जिस भाई को मेरे बिशप में साबूत देते थे
पाद्री साहिब बोले थे तो उस भाई को
बुलाके तीनों आदमी बैठ गये - उसके बाद
बहरावालों से कई एक भाई चले आये
और बाकोड़ा से एक भाई पहुंचा था -
तालसीया और पुरबड़ीड़ा से दो भाई आये
थे। तो उसी जगह जिसके बारे में बोले थे
कि जनाना चीलाना साबूत देंगे वे सब
हाजिर थे केवल बानसली नहीं था। पूछ
पाछ करने से मैं प्रचार करने वाला नहीं
निकला। ~~मुझे~~ मास्टर आपने से खुद पाद्री
और मिस्टर... के बारे नहीं बोला ऐसा वे
बोलो सुनासुनी बात (पाउंद से) इतनाही
बोलके खतम किया था। वहां पूछा पूछी

XXVII

ठीक हो गया तो २ बजे रात को फिर आया

पादरी मार्टिन : कसूर हुआ था उस समय
एक मुक्का मारे थे । एकदम बेहोश थे नहीं
को - हम नहीं लाना तब मनाया । करीब
६ बजे था ।-

इलियाजर : ६ बजे के बाद था - जोखिम
तो खूब ही था - लम्बी सांस लेते थे।
कुछ बेहोश हुई थी - Pitach को
हमसागर पिलाये थे ✓

पादरी : निर्दय + बेमया का

इलियाजर : ऐसा कहा गया ऐसा तो मैं
नहीं सुना - मैं तो बिमार था । बहुत लोग
आये और लवा किये थे । यह बात मुझको
H.S.M. बताया ✓

H.S.M. इलियाजर मास्टर की दशा बहुत बुरी
थी । पादरी आता जाता था । मैं पादरी से
सेंट कहते आया तब पादरी बोला "मैं समझता
था कि पादरी बना गया" । हम लोग दो ही
जन थे ।

पादरी : मैं जानता था कि इलियाजर बिमार
था और रात और दिन प्रार्थना किया ।
मैं यह 'phrase' नहीं बोला था ।

मिथ्या बिश्वासी पादरी

H.S.M. मैं अपने आंखों से देखा है । दवा बनाने
वाला Michael है, Benjamin जो वहीं था
पादरी जो वहीं था । मैं दो साक्षी दिया ।
दवाई यहां Korosa में तैयार किया गया जिसको

XXXIV

Pres. और कपड़ा सिलाई से जानते हैं।
कहीं २ फैल गया है। Ans उसको इलियागढ़ से सुनकर
मैं जानता हूँ। इलियागढ़ और बाड़ी बारू के
अन्तिम झगड़ा से हम जानते हैं कि यही बात
बहुत दूर तक फैली हुई है।

Pres. कहाँ २ फैली हुई है? Ans पुरकडांड, कुलाइकुआ
बाघोड़।

Pres. किससे आप सुने कि फैल गया?
Ans — आदमियों का नाम नहीं कह सकते हैं।

Pres. कौन २ पचायतन में?
~~Ans~~ पुरकडांड, कोंडरा,

Pres. बच्चियों को पादरी आदि के परिवार का अंग
हो गई है तो साबूत देना कठिन है तो आप
को ऐसी बातों को निकालना नहीं चाहिये था।

इलियागढ़: हो ऐसी बात को मैं बतलाया —
बाजार रोज पुरकडांड
कुलाई जाता था — मैं पाया — वह दूधी
के बाउल मास्टर से किस्सा की बीच ऐसी
एक पादरी और ... बात है। उसने कहा
बात सुनते हैं तो क्या बात है। — और कि यही
कि वह गोपाल से सुना —
बात पुरकडांड में, कानइकुआ में फैल गया है।
मैंने कहा यह तो बहुत भारी है — सुना सुने
है कि कैसा? वह बोला कि गोपाल बताया
उसी कुचरोज ~~धान~~पुर का बनिया मनबोध
साहू का बेटा गरीब का खेत बेह [illegible]
का एक नाई और बाघोड़ा का एक नाई
पादरी लोगों ने किये हैं उसी का हुकुम लिखा
यही राय सलाह वाले मुझको बुलाये
थे। उसी समय में मैं बोला कि मैं एक
नया बात सुना [illegible] तब क्या तुम लोग

XXVII

मैंने देखा। मैंने पादरी को कुछ नहीं बोला १९६३ साल में ∟ मैंने गाड़ते जो देखा। Michael गाड़ा। पादरी जो थे ∟

पादरी: समुचा मराडली मर्द आया था - कोनकेल कितो प्राचीन कब्रिस्तान को - हमलोग नेक पल्पल कितो प्राचीन कशीरा को - हमलोग नेक पल्पल कितो प्राचीन के साथ डाले ∟ कोई दवा नहीं गाड़ा गया ∟ के साथ डाले ∟ कोई हड्डी नहीं गाड़ा गया। सौ सौ (२) हम कोई हड्डी नहीं नहीं ले गये हैं।

H. Griffin: सोत्री या बोतल गाड़ते हैं। निश्चविश्वास से नहीं पर याद के लिये - साहब लोग जो गाड़ते हैं - पर यहां लिखा है कि जानवरों का हाड़ को लगा दिया है पर इसको कैसे जानता है?

H. Griffin — मैं पादरी के बारे में गया - मैंने जगहों में हड्डियों को Michael को देखा

Benjamin ने ही देखा।

~~Unknown person~~: मैं जानता हूँ कुछ नहीं गाड़ा गया है।

धर्मदास: चार गो लोटा, कुछ रखा दिया गया और सरद जानने के लिये - हड्डी को बात हम नहीं जानते हैं। नवीन और बिन्यामीन प्रचारकजी को है — । हम पल्पल गाड़ा गया है।

Benjamin: हम ही को इन वाले थे ∟

कठोर मिजाज

H. Griffin - मास्टरों और प्रचारकों को बुराई चाहता है Fees के न जमा होने पर।

यदि पुरानी बबर्चिनी यहां होती और
पाद्री बाबू अपने परिवार का अंग न बनाता
तो वह बोली हुई बात (पाद्री साहिब को)
जरूर ही Commission को बताती। अभी
वह बबर्चिनी पाद्री बाबू के परिवार का
अंग हो गई है जिससे इसका साबित करना
कठिन है। पाद्री बाबू और मिस्ट्रेस में
बीच का मेल कहां तक मिल गया है सो
अभी इश्तियार मास्टर बतावेंगे। मेरी
स्त्री पाद्री साहिब की दूसरी बात का जिसमें
वह मिस्ट्रेस ~~से~~ जोड़ लगाती है मिस्ट्रेस
को बताई जिससे वही पूरन १९३७ में थोड़े
दिनों के लिये मतलब था। पीछे जब पाद्री
बाबू जशपुर तरफ से सफर से फिरे तब
मिस्ट्रेस को पाद्री पाद्री साहिब और एक
प्रचारक एक मिलकर मिस्ट्रेस को अपने
साथ मिले। कैसे २ मिले लिये सो
इनको मालूम नहीं है। और पीछे से
मिस्ट्रेस बराबर अब पाद्री पाद्री साहिब
से मेल से रहती है।

~~HM~~ Inspector: मिस्ट्रेस का शील से देखने, मान उनकी रक्षा
के लिये जरूर बोला था होगा।

President: मतलब (पाद्री साहिब और मिस्ट्रेस)
को आप कैसे जाने?

HM: ऐसे मालूम हुआ कि मिस्ट्रेस अपना
कोई कपड़ा जब मिशन में सीती है
तब पाद्री साहिब के मिशन में बराबर सीती
थी पर मतलब के समय पाद्री साहिब Mistress
का कपड़ा सीते रहीं थी तब mistress
ना कहे मेरे मिशन में कपड़ा सी है

Pres. आप Mistress से देखे थे?

HM: मेरा देखना तो नहीं है, मेरी स्त्री और mistress
के बीच बातचीत हुई। उसके बताने और

XXVIII.

इश्तियाक मास्टर — सुनासुनी बात है

HoM. — इश्तियाक मास्टर ही से सुना था। इलाका के सब कोई जानते हैं। मैं कैसा स

पादरी — है — हाँ यदि कोई नसीहत के लिये तैयार था। कारण होता है तो कभार जो हुआ। हूँ। हरएक जानता है कि कैसा प्यार से प्यार का और मास्टर रहते हैं।

School बाबत निश्चिन्त

उत्साहित नहीं करते हैं।

HoM — Pastor, Supervisor हो के स्कूल का बगान इत्यादि के विषय ख्याल और चिन्ता नहीं करता है।

Resident: मैं जानता हूँ कि गाँव २ स्कूल के लिये चिन्ता करता है। मैं गाँव २ करता हूँ।

पादरी:

HoM: एक पांव के नीचे था स्कूल पर ध्यान नहीं है तो मुझे विश्वास नहीं है।

आत्मिक कमजोरी (अयोग्य). प्रचार करने को

HoM प्रयोग के लिये और हाजिरी ✓ ठीक समय में पहुँचने

पादरी: कई कारणों से यहाँ केवल नहीं पर कई नहीं सकता हूँ ✓ जगहों में।

HoM: आप क्यों (पादरी) मुझे ठीक का विचार नहीं देते हैं समय को। —

XXXII

स्कूल विषय के बातें हो जाने के पीछे
Bishop बोले कि Mistress कैसी रहती
हैं। मैं बोला Ministers बहुत अच्छी तरह
रहती है। Bishop बोले कि Ministers को
ठीक से देखते रहियेगा। मैं बोला हां मैं
देखते रहूंगा। 36वां जून महीना में मिस्ट्रेस और
पाद्रीसाहिब के बीच कुछ अनबन हो गई
अनबन का कारण यही था कि मेरी स्त्री
बबचीनी को बोली और कि पाद्रीसाहिब
मेरी स्त्री को नाचनी बोली थी इस कारण
स बबचीनी मेरी स्त्री बोला और
को पाद्रीसाहिब पूछा कि नाचनी बोलती
है पाद्रीसाहिब नाचनी शब्द का अर्थ
अच्छी तरह न जानते हैं कि किसको
नाचनी बोलते हैं? बबचीनी मेरी स्त्री
को बात को पाद्रीसाहिब को सुना दिए
तब पाद्रीसाहिब बोले (बबचीनी को)
Mohammedans में तो नाचनी जरूर हो है
इसके सिवाय वह मेरे पति को खराब
कहती है और मिस्ट्रेस तो मेरे पति
को बहुत बेर खराब कहती है यही बात
बबचीनी (पुरानी) जाके मेरी स्त्री को
बता दी। सच है कि ये सब बात विशेष
करके मेरी स्त्री के बारे इनको रिजाने के
लिये बोली गई है पर मिस्ट्रेस की बात
मैं ठीक से नहीं कह सकता हूं। क्योंकि
जब eye-witness कोई नहीं है पर बबचीनी
इसी बात को जहां तहां बतला चुकी जिससे
public को मालूम हुआ कि ~~पाद्री~~
पाद्री बाबू और मिस्ट्रेस के बीच में
मेल है और अभी यही बात आसपास
के सब पत्रकारन में फैली हुई है

XXIX

कोठरी बढ़ाने के विषय:

पाद्री: थोड़ा ख्याल है HM बातचीत किया था।
मैंने कहा कि मेरे पास तो कुछ नहीं — आप Seat
Rent से बचा है तो खर्च कीजिये हद 32 से
मतलब है — कुछ नहीं किया गया है।

Eleazar: Seat Rent से सब लाइन मरम्मत
कुछ नहीं किया गया है सो ताज्जुब
होता है —
हो। Supervisor होके सोचना चाहिये था

Pres: पाद्री

Re: dumb-silent

मौन रहने की बात:

HM: नौकर लोगों का आदर होता है
पादरी का नहीं।

रिपोर्ट: हम कुछ रिपोर्ट नहीं किये हैं।

पाद्री: रिपोर्ट किया

HM/पाद्री ने सब बात एकट्ठा करके रिपोर्ट किया

पाद्री के साथ बालकों का।

Free ship

HM: हम को पाद्री बोले थे कि हमारे सब
लड़के free किये जायें। मैंने कहा कि
Code के मुताबिक करेंगे — इसी बात पर झगड़
रहता है।

पाद्री: मेरे लड़कों का फीस दिया जाता है।
मैंने कभी नहीं बोला हूँ कि free कीजिये।

HM: पाद्री बोला है। हम दोनों
के बीच बातचीत हुई

xxxi.

विषय: खाना पीना रहन सहन देखकर डाह से जल जाता है। प्रभुजी ने [illegible] देता है।

HoM. ये बात पहले हो गई है।

President: क्या बात में डाह करता है?

पादरी — चूड़ी का व्यवहार — इसको रोक टोक किये इसलिये Headmastarni को चिढ़ है। लोगों के विषय — Headmastarni जो कपड़ा रंगना इत्यादि को पहनती थी — खोदा खुदवाने के जो रोकने की बात बोले — बाबत भी रोके।

HoM. हेडमास्टरिन एक २ चूड़ी पहनती है लोगों का भी नहीं पहनती है।

Palegrave: ऐसा निश्चयता से नहीं कहा गया है [illegible] को पसन्द नहीं करते हैं पर कि L. Lakra [illegible] अच्छा होगा कि [illegible] का बोले ले कि हो जावे।

Yusaf: पसन्द की बात नहीं — पर अब Kondra का सिंगार चला गया —

Meeting of the Commission with Revd. Kuhr and the parties concerned.

विषय: ~~पाधी बाबू का [illegible] और मिस्ट्रेस [illegible]~~

पाधी बाबू और मिस्ट्रेस का मेल: —
(From HoM. Jg. Lakra's letter of 2.9.1937)

समय — $10\frac{1}{2}$ बजे रात — जगह: गिरजा घर
ता: ११.११.१९३७.

लेख का वह भाग पढ़ा गया जिसमें इस विषय पर HoM. Jg. Lakra ने C.C. को लिखा है।

HoM: Headsupervr. बाबू [illegible] लाल के [illegible] में [illegible] आये थे उस समय मिस्ट्रेस नहीं थी। स्कूल और [illegible] [illegible] देखकर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

XXX

विषय: डाह, लोभ, लालच से रिपोर्ट किया
है — ।
Hमि: इलियाजर के कहने पर यह बात
लिखी गई।
इलियाजर: मैं संसार भर में सबसे निर्धन और
निर्बुद्धि हूँ - १९३० या ३१ में स्कूल या पाठशाला
से आया Play के लिये २००) रु: CC + DB से
छुट्टी में पादरी बोले उन छुट्टी में काम करो
जो कुली को मिलेगा सो उनको भी मिलेगा।
मैंने किया - मेरे पास बाजार के लिए कुछ
पैसा नहीं था - मेरी स्त्री पैसा मांगने गई थी
तो पादरीसाहब ने उसको बहुत गाली दी। सम्पूर्ण
छुट्टी की कमाई मैं नहीं पाया। मैं मांगा था
कभी उसी पैसा मांगने पर नहीं मिला। मैंने कहा
पर नहीं मिला। १९३२ में कुछ जायदाद / शिकायत
जमीन मैं Konoia में लिया - Simula में लिखा -
यहाँ के लिये गया था - लाचारी से तीन जनों से
रुपैया लेके गया था - पादरी से भी २०) रु: लौटकर
(काम नहीं इसलिये) पादरी को भी लौटा दिया।
एक बार पादरी मुझसे पूछा कि मुझको २०) रु: दिया
कि नहीं। मैंने कहा मैंने रुपैया दे दिया।
मुझे अभी याद नहीं है
पादरी: मैंने पादरी ही को रुपैया २०) वापस
इलियाजर: दिया। जशपुर से लकड़ी लवाये थे — Coolie payment
पादरी — मुहलत चाहते हैं - इन दोनों बहुत काम किये हैं। पाने की
था - आशा दिई गई थी इलियाजर को।

27/6/37

Lutheran Compound Kandra.
19.6.37

I

माननीय सेक्रेटरी साहब को [illegible] मेरा बहुत २ - यीशु सहाय। कुशल मंगल से काम करता हूँ और आप लोगों का भी चाहता हूँ॥

मैं ८-५-३७ से २२-६-३७ - [illegible] देहात में था और २२-६-३७ को [illegible] महीनावारी पंचैत में मुझ को मालूम हुआ कि आप लोग कोनडरा के लिये [illegible] भेजते हैं और [illegible] पढ़ने से मुझ को मालूम हुआ कि आप लोग [illegible] रिपोर्ट में बदल दिये हैं। मैं आप लोगों को इस काम के लिये बहुत धन्यवाद देता हूँ और कि [illegible] में मदद के लिये [illegible] भेजते हैं।

आप लोगों को मालूम होवे कि वह २२-६-३७ को कोनडरा पहुँचा और १४-६-३७ - १६-६-३७ को [illegible] महीनावारी पंचैत में स्वागत सहित ग्रहण किया गया और बोला गया कि आप बड़े हर्ष और आनन्द से [illegible] ने काम को लिये और [illegible] को [illegible] कीजिये। आगे आप लोगों को फिर स्मरण कराता हूँ कि [illegible] कोनडरा [illegible] C.C. में फैसला हुआ है कि [illegible] मेरे पास [illegible] पहुँचाते हैं [illegible] आप लोग उसके बदले [illegible] मेरे पास [illegible] भेजते हैं। २. बहुत जल्द मेरे पास कोनडरा C.C. का [illegible] भेज दीजिये।

[illegible] दिन से मुझ को [illegible] हो रहा है क्योंकि सब Register. Ranchi [illegible] + Jashpur State Ka [illegible] मुझ को [illegible] रहा है। मुझ को नया Register [illegible] होगा [illegible] आप लोग जैसा [illegible] कोनडरा भेजते हैं और [illegible] भेज दीजिये सब बातें साफ हो जायगी॥

II

हेडमास्टर [illegible] को [illegible] रिपोर्ट [illegible] भेज दिया जाता है कि [illegible] महासभा [illegible] किया जाय—

Rev. L. Lakra
Ilaka Chairman. Kandra
19.6.37

मान्यवर चीफ कौंसिल को मेरा बहुत-बहुत धीरज सहाय-

मैं अफसोस सहित और वेदनापूर्वक यह अर्जी आप लोगों के पास भेजता हूं और इसीका एक कोपी, हेड सुपर जेनरल ट्युपेरिन्टेन्डेन्ट के पास भेजा हूं और आगे उसके साथ लिखा पढ़ी चल रहा है। मेरा कोंडरा का हेड मास्टर इग्नातियुस लाकड़ा कोंडरा इलाका के लिये बड़ा भारी ठोकर का कारण हो रहा है जिससे उसको कोंडरा इलाका में सफलता बिलकुल कठिन हो गया। आप लोग खुद जानते हैं कि वह कैसा मतवाला आदमी है और कैसा कोरोंजो का चेला को गुमला से निकाला गया है और वही हालत अभी कोंडरा के भाई और बहिनों के आंखों के सामने बुरा दृष्टान्त दिखाते हुए चला आ रहा है और म्हाड़ली के लिये ठोकर का कारण हो गया है। हेड मास्टर ने सभी तरह छिपछिप के जहां वहां पाने का कोशिश किया परंतु भी भाई और बहिनों से छिपने नहीं सका। मैं आपना रिपोर्ट को उसके विषय का जांच किया हुआ सबूत आप लोगों के पास भेज देता हूं जिससे उचित विचार कर कोंडरा इलाका की भलाई के लिये उसको बिलकुल कोंडरा से तुरन्त हटा दें॥

I. हेड मास्टर साहब जबसे यहां है तबहीसे निशा का व्याभचार अपराध ओर अगुआई लोगों के सामने बराबर करते चले आ रहा है जिसका पता नहीं हो रहा है कि भाइयों लोग उसको इस बुरे चाल को देख कर ने भी विवाह ओर पाप निशा का व्याभचार सहवास करते जा रहे है उसका सबूत नीचे दर्ज है:—

(क) १९२९ साल में जब उन्नति सभा का महासभा रांची में हुई थी तो कोंडरा इलाका से बहुत से लोग होकर उन्नति समाज की बैठक के लिये सिमियोन टोप्पो गुड़िया के ग्राम में एकत्र हुए थे। उसी समय हेड मास्टर भी स्कूल की छुट्टी में रांची गये हुए थे। उसी समय देखा गया कि हेड मास्टर शराब पीकर इतना चूर हुए थे कि सिमियोन टोप्पो के ग्राम में एकत्र देख कर जब लोग ने और इतना समाचार को डर में आकर इधर उधर फैला दिये जिसका सबूत ये लोग भी दे सकेंगे अगर उनसे पूछ किया जाय॥

(ख) १९३४ को कोंडरा स्कूल से Bijay Toppo ने बोर्डिंग परीक्षा के लिये हेड मास्टर गुमला गया और डाक बंगला में अपना सरदार से डेरा किया। उसी लड़का से यह मालूम हुआ कि हेड मास्टर जितना दिन गुमला में था निशा का व्याभचार किया और एक स्कूल लड़का के सामने बुरा दृष्टान्त दिखलाया जिसका गवाह विजय टोप्पो ही है॥

(ग) आदमी एकत्र से यह मालूम हुआ कि हेड मास्टर उसको अपना नौकर बना कर एक रोज कोंडरा से गुमला लाया और हेड-

मास्टर नरिया के सामने निशा पीकर अपने साले सब को गाली देकर कहने लगा कि तुम लोग-कभी भी मुर्गी नहीं खिलाते हो और मैं तुम लोगों को रस्सी खिलाता-हूं । इसपर उसके साले लोग बड़े फजीर मुर्गी बोलने के बाद मुर्गी मारकर फजीर को खिलाये पिलाये-बाद खाना खा पीकर वह ओडरा लौटा- इसबात का-सबूत देनेवाला बहोनरिया-है ॥

(घ) पन्डरा खड़िया जिसको हेड मास्टर अपना नरिया बनाकर गुमला ले गया था रिखसतोपाल बड़ा बखोड़ी को यह बतलाया-कि मैं और हेडमास्टर डुम्बरटोली के नथाकिरलाल के यहां गये थे और हेडमास्टर रात को बहुत जोर निशा पीकर पागल की तरह हो गया-था-और नाना प्रकार की लज्जा की बातें बोलता-था-। जिसका गांव में खूब ही गुमला भर में जिया और बात-रह जाता है ऐसी बातें न-केवल एक बेर पर कई मरतबे हुआ-है जिसको प्रं चहोने से मैं आप लोगों को बता सकता-हूं ॥

(ङ.) मनमसीह एक्का जब एक बेर वह हेड मास्टर का नरिया होकर आया था-यह बयान दहाने पास किया कि हेड मास्टर गुमला बाजार में उसेर सुअर का गोश्त-खरीदा और एक सेर गोश्त-को मेरे हाथ-में अपना ससुरार डुम्बरटोली में भेजा और दो सेर गोश्त-को अपने साथ लेकर डुम्बरटोली आया। जब वह रात को डुम्बरटोली से डेरा लौटा तब मैं उसको देखा कि वह निशा-पीकर बहुत ही मतवाला- हो गया-था—

(च) मनमसीह एक्का से मुझको मालूम-हुआ कि नेमन एक्का उसको यह बतलाया कि जब मैं हेड मास्टर के साथ-गुमला-गया था-नरिया-होकर, उस समय- हेडमास्टर एक बोतल दारू को झोला में बन्द कर ओडरा लौट आया-। रास्ता में हेड मास्टर ने मन को यह बत-लाया- कि यह दारू महुआ का-नहीं है पर चावल-का है ॥

(छ) मनमसीह एक्का से मुझको यह भी मालूम-हुआ कि खास ओडरा ही में- एक रोज नेमन एक्का-को नद्दी पर भेज कर एक बोतल-दारू अपने घर में मंगाया- यह बयान- नेमन एक्का मनमसीह एक्का के पास खूब किया-है ॥

मैं तारीख ४ माई १९३६ को खूद हेड मास्टर को पूछा-कि आप लोग दारू और हंड़िया का व्यवहार क्यों करते हैं और पीते हैं जिससे सब कोई जानते हैं और आप लोग मास्टरी के लिये दोनों का कारण होते हैं जिससे मुझको भी बहुत होना को दुःखित होना पड़ता-है । इसपर वह बोला कि हम लोग अपने बिमारी के कारण यह निशा का चीज अर्थात दारू और हंड़िया का व्यवहार करते हैं । उसका-कहना-यह है कि मेरे स्त्री का-आतिन वात बन्द होजाने से दारू का व्यवहार करती है और रोज रोज थोड़ा थोड़ा-पीती है । मुझे यह आश्चर्य मालूम-होता-है कि अगर कोई दवा-डाक्टर इस्तेमाल-किया जाय तो उसका गुस्सा नशाई का गजब बुराई ही पैदा करेगा। दवाई को समयानुसार व्यवहार करने से किसी को लाभ होता है ॥

II मण्डली के आमदनी के विषय :—

(क) ओडरा प्रचारकगन का मिलना जिन्नो सिरनी, घड़ा सिरनी, धान्य बाल्दि (?), करनी दान, तथा रमनी, अरवुनी, ओ प्रभु प्रीत आदि मिलने आमदनी हैं सब आमदनी हेड मास्टर जो चेयरमैन हैं और हेरवन्दरो (?) आ जो खजांची हैं इनको जिम्मे में रहता है। ये १२ आना पैला से चावल और धान वगैरह को जिमा लेते हैं और १४ आना पैला से बिक्री कर जो पैसा होता है उसको इलाका चेयरमैन को जिमा करते हैं। इस तरह करके से भी पैला ४ आना आपने लिये बचा लेते हैं जिसका ठीक आमदनी मध्यम तौर से २०) रुपैया होता है जिसको वे गुप्त रीति से खा लेते हैं। इसका खबर मुझको पहिले मालूम नहीं था क्योंकि यह कारबार बहुत गुप्त रीति से करते थे। हाल में जांच करने से मुझको मालूम हुआ कि वे रुपैया में ।) आना आपने लिये बचा लेते हैं। हेड मास्टर के ओडरा आने होसे यह हलवल (?) का-कारबार चलना शुरु हुआ है जिसका अभिप्राय: पूर्व की भीतर में मण्डली आमदनी की नोकसानी ४००) सब रुपैया लगभग पहुंचाया है॥

इस कारबार को देखने से मुझको बहुत आफसोच लगता है और कहना होपड़ता है (?) कि ऐसा बहुत (?) आमदनी और रकम में ऐसा ही कारबार करना छोड़ता (?) होगा - मुझको बड़ा आफसोस (?) है॥

(ख) जितना बलीके (?) मोता (?) बिक इलाका का समुचा आमदनी सेन्ट्रलाइज होना चाहिये जिससे मण्डली का काम सुगमता से चले। इसके बारे इलाका की बैठकों में यह ते हुआ कि सब आमदनी सेन्ट्रलाइज के लिये लाया जाय और सब प्रचारकों ने इसको मंजूर किये और दो-महिना तक यह सेन्ट्रलाइज का काम चला। बाद हेड मास्टर साहब आपने चेयरमैन के हैसियत से (ओडरा प्रचारकगन का) सेक्रेटरी को सब प्रचारकों के पास नोटिश भेजवाकर सेन्ट्रलाइज का-काम-को बन्द करवाया जिससे मण्डली के काम में बड़ा भारी धक्का पहुंचा, और ८-९ को २०) रुपैया सेकड़ा देना (?) मण्डली आमदनी से बिलकुल बन्द हो गया। इसके सबूत में जो नोटिश प्रचारकों के पास भेजा गया उसका एक कापी मेरे पास मौजूद है॥

मैं हरवख्त हेड मास्टर को यह देखते चला आ रहा हूं कि वह चार्च (?) को सिलको (?) और यहां के इलाका पंच को भी सलाह (?) के विरोध होके मण्डली के भाईयों को चलाने की चिन्ता को फिकिर में लगा रहता है। जिससे मेरे काम में बहुत ही बाधा पड़ते आ रहा है। यह आमदनी (?) वह आपना साला जुलियस लोइया के जरिये करता है और भाईयों को भरमा कर (?) मिला लेता है। मैं ने इलाका का भी सलाह था कि मण्डली की आमदनी से भी रुपैया ।) चार आना स्कूल के लिये और ।।।) बारह आना मण्डली के लिये मिलना चाहिये। एक समय ओडरा प्रचारकगन को ४ महिना की मण्डली आमदनी ४०) रुपैया हुआ तो इस आमदनी से चार आना स्कूल के लिये लेने का दावी किया और इसके वसूल के लिये आपना साला जुलियस लोइया को गुमाश्ता (?) भेजा बुलाया (?)। जुलियस लोइया पहिले भाईयों के पास जाकर उनको स्कूल के लिये चार आना देने को उसकाया।

बाद मिटिंग-कर (२०) रुपैया स्कूल के लिये और (२०) रुपैया मण्डली के लिये दिलाया। इसी समय में इधर कोण्डरा और गुमला में गुलियस लोगों का प्रभाव मण्डली में बहुत जोर चल रहा था, जब कि वहां गुमला में पादरी बाबू दाऊद कुजुर और गुलियस लोगों का लड़ाई था॥

III हेडमास्टर के जनाना के व्यवहार के विषय:—

(क) नाचना:— गुमला से जब आपना भाई और गुलियस लोगों का शादी का बरात यहां कोण्डरा में आया था उस समय यह हेड मास्टारिन स्कूल के लड़कियों को और मिसराइस को लेकर बरात उतारने के समय नाचई गा किई जो करना उसको उचित नहीं था और गोइला का पंच के फैसला के विरोध है। इसी काम से स्कूल के लड़के लड़कियों को भाई बहिनों को जवान युवतियों के लिये बुरी शिक्षा दिई। यह मेरे आंख के सामने हुई है। इसके बारे में मिसराइस को समझाने को शिक्षा देने पर हेडमास्टरिन बिगड़ गई और बिगड़ कर हमों से आज तक अच्छी तरह बोलचाल भी नहीं करती है। इसके अलावे और और जगहों में भी हेडमास्टरिन नाचई गा किई है जो मुझको बखूबी मालूम है॥

(ख) नशा पीना:— हेडमास्टरिन सांबाउंव में शादी के वास्ते इसी १९३६ के फरवरी महिना के शुरु में गई थी और अपने साथ नासरीएक्का को मरियम के नाम में ले गई थी। नासरीएक्का मरियम साहिएक्का के पास लौटकर यह बात बतलाया कि हेड मास्टारिन हर वक्त जब तक शादी घर में थी वहां शराब के निशा में घुमी हुई थी। यह दुःख की बात है कि मण्डली का कर्मचारी होकर व्याह घर में ऐसा काम किई जो सब के मण्डली भाईयों के लिये ठोकर का कारण हुआ।

जब मैं गुमला गया था और दुम्बारटोली किसी जरुरी काम के लिये गया था उस समय वहां के लोगों से मालूम हुआ कि हेडमास्टरिन भी वहां जाने समय सामायर निशा का व्यवहार करती है जो यह मण्डली के लिये ठोकर का कारण है॥

IV हेडमास्टर का साला गुलियस लोगों के बारे:— तारीख १२, ६-३६ को गुलियस लोगों कोण्डरा आया हुआ है वह इधर उधर मण्डली में घूम कर (२) रुपैया ओढार चाहे रुकाह स्वान जमा करने और तथा बैंक खोलने का मण्डली के भाईयों को चला रहा है। तारीख १३-६-३६ को एतवार गिर्जा के बाद भाई बहिनों को बैठा कर यही उपदेश देने लगा कि लूथेरान मण्डली एक नदी के किनारे खड़ा हुआ है आज तक शिशुनों को ऐसा हो रहा है और समझते हैं कि आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों आवश्य ही गिर जायगा। अगर सब लूथेरान भाई लोग मिलकर पैसा जमा न करें। आगे फिर कहता है कि हम लोगों को मिशनरियों का और उनके रुपैया का कोई दरकार नहीं है। जैसा आप जानते हैं कि विदेशी मिशनरी आने वाले हैं। हम लोगों को उनसे कोई सरोकार नहीं है और न महासभा का न चर्च कौंसिल का न पादरी और प्रचारकों का क्योंकि ये हम लोगों के लिये कुछ नहीं कर सकते हैं। इनसे मंजूरी लेना और संगति रखना कोई दरकार नहीं है। दूसरे दिन सबको बेरहाटोली में इसी बात का प्रचार करने

પર-ભાઈ લોગ પૂછે કિ તબલીઓ ઔર દાન દેને કા કોઈ દરકાર નહીં હૈ-તો વહ બોલા યદિ સબ ગુમલા લોગ દે દેઓગે તો ઔર ઔર દાન દેના કોઈ દરકાર નહીં હૈ। જુલિયસ લોગ યહાં કે લોગોં કો યહ ભી બતલાયા કિ ગુમલા વાલે ભી સબ કોઈ દેને ભી તૈયાર હૈં પર ઇસ-સાલ-નહીં પર આને વાલે સાલ દેંગે ક્યોં કિ-ઇસ સાલ હમલોગોં કો ગિરજા ઘર પક્કા બનાના-હૈ। ગુમલા આકર જાંચ-કરને સે મુઝકો માલૂમ-હુઆ કિ યહ બાતેં સરાસર ગલત-હૈ। ગુમલા વાલે ઇસ બાત કો કુછ ભી નહીં જાનતે હૈં, પર સુનને મેં આયા કિ સંસારિક લોગ-યહાં ગુમલા મેં બૈંક ખોલને વાલે હૈં જિસકા દેખ ભાલ જુલિયસ લોગ કરેગા। મુઝે સમઝ મેં નહીં આતા-હૈ કિ જુલિયસ લોગ બૂપેરાન-મકડલો કે લિયે કૈસા બૈંક ખોલેગા ઔર સંસારિકોં કે લિયે કૈસા। હો સકતા હૈ કિ યહ હલબલ કા-કારબાર હોગા ઔર યહ મકડલો કે લડાઈ કે બદલે સૈક વિરોધ હી હોગા। ફિર સુનને મેં આયા કિ ડાલટેનગંજ કે તરફ એક ટ્રેનિંગ સ્કૂલ ખોલને કા પ્રબન્ધ કર રહા હૈ કોઈ એક ભગત કે બારે મેં। ઇધર સે સંસારિકોં ઔર ખ્રિસ્તાન ભગતોં (ભગત સંસારિક) ખોલકર કૌન સા ટ્રેનિંગ-દેને વાલા-હૈ ક્યા-ગતોઈ-કા ટ્રેનિંગ-ઔર-ખ્રિસ્તાની ટ્રેનિંગ-। યદિ કહે કિ યહ ખ્રિસ્તાની ટ્રેનિંગ હૈ તો ક્યોં ગુમલા મેં નહીં ખોલતા-પર ડાલટેનગંજ કે તરફ। મુઝે બડા ભારી શક-હૈ કિ જુલિયસ લોગ કૌન સા-નયા કારબાર શુરુ કર રહા-હૈ આપ લોગોં સે મેરી અર્જી હૈ કિ ઇસકે બારે જાંચ કીજિયે ॥.

હેડ માસ્ટર કે યહાં રહને સે જુલિયસ લોગ કો યહાં આને કા બડા ભારી મૌકા મિલ જાતા-હૈ જિસસે યહાં કે ભાઈયોં કો હર તરહ સે મકડલો કે બિરુદ્ધ ઉસ્કાવે ઔર ચલાવે ॥.

આખિર મેં સાથી ઓં જિલા કે મેમ્બરોં સે મેરી અર્જી હૈ કિ ઊપર કે રિપોર્ટ કે બારે મેં હેડ માસ્ટર સે કિસી કિસિમ કા રિપોર્ટ ઔર કૈફિયત-ન-માંગા જાય પર આપ લોગ-સ્વયં ખોંડરા આકર મેરે સામને જાંચ કીજિયે ઔર સાબૂત લીજિયે। અગર આપ લોગ રિપોર્ટ ઔર કૈફિયત લેતે હૈં તો લોગોં કો આપકી ઓર ખીંચને કા ઔર અપની રાય મેં લાને કા મૌકા મિલ જાયગા ॥।

જૈસા મેરે હેડ સુપરવાઈઝર કે પાસ ઉસકે બદલી કા રિપોર્ટ ભિરવાને સે-વહ હેડ માસ્ટર સે કૈફિયત માંગા તો આપને કો બચાને કે લિયે ન માલૂમ કાર કૌન કે દબાવ તોં કો લિખા ઔર ભાઈયોં કો અપની રાય મેં લેને કો મિલાને કે લિયે જુલિયસ લોગ

को कोन्डराकुलामा और दिन और रात लोगों को मिलाने के को-
शिश में लगा हुआ है।

सो कृपा है साहब और श्री शिवलाल ने मेम्बरान आपलोग
हेड मास्टर को खूद ही जानते हैं कि वह कैसा आदमी है और कैसा
लंबा चौड़ा बातें उड़ाता है। आपलोगों के पास कोरों जो कारिपोर्ट
आई, सो बहुत, और गुमला का रिपोर्ट भी मौजूद है जिससे भी आपलोग
जान सकते हैं कि वह कैसा आदमी है और अपने अधिकारियों से कैसा
रहता और कैसा उन्हें शिक्षक को शिक्षा में लगा रहता है।

सो मेरा दीनता-पूर्वक अर्ज है कि आपलोग शीघ्र
इसी हेड मास्टर की बातों का उचित विचार कर को कोन्डराकुलाका
भलाई के लिये शीघ्र काम कीजिये और इसी समय आजकल
ही हेड मास्टर को कोन्डरा से हटा दीजिये

जो वाजिब है सो अर्ज किया है।

आइन्दे हुजूर आपलोग मालिक हैं॥

आपलोगों का विश्वस्त सेवक-

बाबू लौरेन्तियुस लकड़ा - कोन्डरा-कुलाका

तारीख-१९ जून १९३६

७ वीं जुलाई बुधवार का दिन बाजार में पादरी बाबू इम्मानुएल
कुजूर ने कहा कि " चर्च कौंसिल लौरिल्युस लकड़ा के ऊपर
बहुत भरोसा रखती थी पर अब चर्च कौंसिल का विश्वास उसके
ऊपर घट गया। जिसके कारण वे अपना जीवन बरबाद कर डाले -

[signature]

श्री श्री श्री मन्यावर हेड सुपरवैज़र लुथेरान स्कुल रांची
महाशय।

आप कोण्डरा मण्डली के ओर से यीशुसहाय

आगे हाल ऐसा है कि आज ता: २७-५-३७ को हम लोग एक मिटिंग बैठे। वजह कि हेड मास्टर J. Lakra आप से मुलाकात कर के आये - और मिटिंग बैठा के पादरी बाबू L. Lakra का रिपोट बतलाये।
सुनने से हमों को मालूम हुआ कि पादरी बाबू सुना हुई बात को बढ़ा कर लिखा है और तौभी बदली के लिये अर्ज करता है - बैठकी में पादरी बाबू गैर हाजिर है इस कारन रिपोट का असली हाल मालूम नहीं कर सके।
फिर हेडमास्टर के ओर से भी पादरी बाबू के बिशय में कई एक बात सिकायत को सुने - जिससे हम सधारन लोगों में बहुत अशान्ती - हो गई - सो अर्ज करते हैं कि आप स्वंयं सरजमीन आ कर पहिले जांच कीजिये उस के बाद जो वाज़िब होगा सो कीजिये ॥

युसुफ टोप्पो   इलियाजर टोप्पो
नयमन खेस्स   जीवन एक्का
हेरवन्त टोप्पो   सामुएल टोप्पो
प्रभु खेस्स
योहन एक्का   सुलेमान किंढ़ो
मरकास लकड़ा
शिमोन टोप्पो   सामेल बड़ा
धर्म्मदा एक्का
फिलीमोन टोप्पो
रैवो लेम पयीयुस लकड़ा

हेड सुपरभैजर लुथेरान मिशन स्कूल रांची को हम कोन्डरा इलाका पंच के मेम्बरों का बहुत २ यीशु सहाय पहुंचे।

आगे हाल समाचार है कि पादरी बाबू लौरे-नेतियुस लक्ड़ा कोन्डरा ने, कोन्डरा मिशन अपर स्कूल के हेड मासटर और मासटारिणी निशा पानी पीने और नाचने के बारे में जो कुछ आप के पास रिपोर्ट किया है सो हमों के देखने और सुनने में बिलकुल झूठ और अफुवा है।

हमों ने कभी नहीं हेड मासटर और और हेड मास्टारिणी को, इन बीते पांच वर्षों में, न पीते न पीये हुए देखा है और न किसी किसिम का निशा खोरी पाया है, इस लिये अच्छे मिजाज और विवेक से हम लोग अपना रिपोर्ट आप के पास पेश करते हैं।

आप इस को मेहरबानी कर के गरहशा कर लिजयो। ता. ५ जून सन १९३७ ई.

पुसाफ्टो जो. कौनुद्ध
नैमन टोप्पो कोन्ड़र

इलियाजर टोप्पो मास्टर कोन्डरा

प्रिये कथारा के प्रचार के आर्य को
मैं जनाता हूं कि आने वाले महिला
सेनटर को ज
मत करिये
कौन्डरा नहीं करेगी।
~~हरवन्त~~ हरवन्त रोग्यों।

[illegible]
10.11.37

6/10/37.

Kinkel, 3 October 1937.

Dear Mr. Kandulna,

I thank you for your letter of the 30th.ultimo,No.496/37/F.-5. It seems to me better not to reply to it,because correspondence gives too easy way to misunderstandings.

It will be the best,the Commission goes very soon to Kondra and clears up the matter with the persons concerned. But please note,that Laurentius Padree will be absent from the 15th.inst.to the 2nd. November at least,as we have sikshaclass at Sarhapani.

I shall leave for Koronjo to morrow for the same purpose. And will travel then with the C.C.'s kindly consent to Takarma,Govindpur,Burju and Tamarh in November. For further touring I shall see in the beginning of 1938.

My best Yishusahay to the members,

Yours truly,

M Hiska

Church Council
Recd. 21.9.37
Register No. 131
Date 18.9.37
File 5
Reply No.
Date

[illegible]
20/9

On File

No. 79K

To,

The Secretary,
Lutheran Church Council, Ranchi.

Dated Kondra, the 18th September 1937,

Dear Sir,

With reference to your kind Memo no 445-51 dated 11th September 1937, in re. the coming of the Commission to Kondra, I am glad to inform you that their coming to Kondra, may be very convenient after the Puja Holidays i.e after 25th October 1937. I shall be very busy in the later part of September 37, as the school will be engaged in the IInd Terminal Examination and we have to complete it before 13th October 1937 and then the Puja Holidays commence. During the Puja Holidays i.e from 13th October to 25th October 37, I or we shall be at Ranchi as we have some treble urgent business there. So I request that the Commission may come after the 25th October 37. On the other hand, the river Shankh will be a great prevention to them as it is now and then flooded.

With kind regards,

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
I. Lakra H.M.
Kondra, Ranchi.

Ch

Kinkel, 7 Sept. 1937.

To
The Lutheran Church Council
c/O Mr.Kandulna,Secretary.
R A N C H I P.O.

11/9/37

File

Dear Mr.Kandulna,

I am sorry to have this complaint of Rev.Laurentius Lakra,dated the 2nd.Sept.1937, to forward to you,but I cant help it,I must sympathise with him. Your Memo No:342/37/F.-5. has caused his feeling insulted. I wonder whether this'paisla' was produced by the whole Executive meeting of the C.C.,whether this is your policy to treat always cases like this. I know of my own experience that little is regarded when servants of Christ are defamed.That is, of course, our share! But yet, could that be possible in an attitude as the C.C. claims? Perhaps the matter has become ripe now for the Ministerium,but as it gathers only once a year,we are depending on you.

Is it right,I ask,to disbelieve a honourable pastor,a man who stands erect,who fights agains evil and badness without fear and selfishness,is it fair to degenerate such matter of purifying to a personal quarrel between bretheren? I think you will agree with me that this is not at all cleverly proposed in your Memo. This is the way to disturb and to weaken the Church's best servants. This is not a good policy to transfer servants just at the most unsuitable time. When last not least Laurentius has to be angaged with the Jashpur work alone as it was decided first,could that not have been done at another time,where no such ill-fame could fall upon him? What on earth has the Kondra Ilaka,Laurentius and myself done,that you again blessed us with Immanuel Padree's company.Did you not recognize the fruit of this action? I feel sorry for Immanuel Padree,he is a gifted man,but unfortunately his mind remains unchanged,though he changed his post several times. I told him that,when he was

at Kinkel. I said to him:Unless you change your mind,your being transferred from one place to another is worthless to you,but dangerous to the congregations.You can imagine that he was not eager to hear this. But it is true, and I believe you know that wherever he was stationed, the congregational work was damaged. *) And you know,as I have been informed,the same thing is about the Headmaster in Kondra. Although nothing may be said of his ability,but his Character has been also spoiled ,being obdurated now ,without an idea of repentance.

Believe me, we should for the sake of responsibility, we bear before God, not be afraid to sacrifice a single man, in order to save a congregation.It is my sincere love and devotion to the common man which gives me the right to submit this before you.

I am,
Yours sincerely,

N.H.Rieba

*) Matth.7/16.
"You will know them by their fruit".

P.S. I hope you did not misunderstand my correspondence in this matter with the persons concerned.

A.

11/9/37

मान्यवर चार्च कौंसिल के पूर्वी
मेम्बरों को मेरा बहुत बहुत यीशु सहाय। मेरा और मसाड़ली की खबर प्रायः अच्छी है।

आगे मैं आप लोगों का फैसला जो मेरे और मेरे हेड मास्टर के बीच में हुई है मैं ३२.८.३७ को पाया और सब हाल मालूम किया। मुझे अफसोस सहित ~~मुझको~~ लिखना है कि फैसला में आप लोग लिखते हैं कि "ऐसी सुनी सुनाई हुई बातों का फैसला हम लोग नहीं करेंगे और न फैसला के लिये चार्च कौंसिल के मेम्बर बरवाडीह कोन्दरा नहीं जायेंगे।" बहुत ताज्जुब की बातें हैं कि यही ख्याल आप लोगों के मन में कैसे आया जिससे ऐसा फैसला फौरन आप लोग लिख भेजे। इन्हीं बातों का फैसला मेरे गैरहाजिर में जब मैं जसपुर हेड घर में था - कोन्दरा प्रचारक पन और दूसरा कोन्दरा इलाका पंच के ४ मेम्बर दो बेर फैसला कर आप लोगों के पास इलाका पूरा से भेज दिये हैं जिसमें वे मुझको दिखलाये हैं कि यही बातें लन्द फन्द की बातें हैं जो पादरी बाबू हेड मास्टर के ऊपर किया है। उसके पीछे मैं अपना कारण और सबूत आप लोगों को दिखलाया हूं जो ३ महिना के पीछे की बातें हैं जिसमें मैं लिखा हूं। क्या आप लोगों का जो मेरे ऊपर ऐसा ही विश्वास है। क्या आप लोग हेडमास्टर इग्नातियुस लकड़ा को आप लोग नहीं जानते हैं और उसके जीवन की दशा आप लोगों को मालूम नहीं है। फिर भी आप लोग मेरे जीवन की दशा जानते हैं और मेरा काम भी कैसा है वह भी आप लोगों को मालूम है। मैं अपने टूर में एक महिना चाहे डेढ़ महिना चाहे महिना में २० या २४ रोज प्रति महिना घर छोड़ के मसाड़ली में अपने घर से ३ दिन कभी २ दिन और आजकल ६ दिन को टूर पर काम करता हूं तो मैं कैसे अपनी आंखों से देख सकता हूं और चोर क्या मेरी आंखों के सामने चोरी करेगा - विश्वास से बाहर है कि ऐसा होगी। पर तौभी मेरा फिर भी सवाल आप लोगों से है? क्या मेरी आंख मेरे भाई और बहिन और पंच लोग नहीं हैं जो मेरे पास आके बेर बेर इत्तलाय पहुंचाते हैं और दिखलाते हैं कि हेड मास्टर का काम ऐसा है वैसा है। क्या ये बातें मेरे लिये सबूत की बातें नहीं हैं। फिर भी यही बातें सुनके मैं कई बार उसको समझाया - जिसमें वह खुद कबूल करता है कि हम लोग स्त्री और पुरुष दवाई के लिये पीते हैं - खासकर के मेरी स्त्री को बीमारी के लिये

प्रतिदिन पीता होता है। मैं खूब उसको बोला कि यह हो काम
यदि प्रतिदिन व्यवहार किया जाता है तो यह दवाई नहीं पर
आप लोगों का बुरा व्यवहार है।

आप लोग छोटानागपुर और आसाम में
ईश्वर के बदले ईश्वर होके प्रभु की दाख बारी में नाईटकहिनों की
अगुवाई कर रहे हैं और मैं भी आप लोगों की शरण में प्रभु की दाख-
बारी में प्रभु के न्याय के लिये काम कर रहा हूं तो आप लोग क्यों
ऐसी फौरन फैसला कर भेजते हैं - क्या आप लोगों का विश्वास मेरे
ऊपर घट गया। जिससे मुझको ऐसा मालूम हो रहा है कि मैं एक
छल फन्द करने वाला पादरी हूं। मैं छल फन्द करने वाला हूं कि
नहीं उससे आप लोगों को कैसा मालूम होगा यदि खुद समुचा कौं-
सिल के मेम्बर आके इसी बात का जांच नहीं करेंगे। ईश्वर न्याय
है और आप दयापाती है "मैं न्याय को चाहता हूं" आप लोगों को खरा
और सच्चाई साफ ढूंढना चाहिये। सच्चाई अवश्य प्रगट होगी क्योंकि
ईश्वर सच्चाई का मार्ग दिखलाने वाला है॥

२९-८-३७ को भेजी हुई आप लोगों की
फैसला जो मुझको ३१-८-३७ को मिली है यदि यह कैम रहता है
तो आगे को दीनतापूर्वक आप लोगों को जनाता हूं कि आगे को मैं आप
लोगों की संगति में काम नहीं कर सकता हूं क्योंकि हेड मास्टर के रूप
प्रकार के दोषों के कारण और इम्माड एक पादरी के नई नई बातों के
कारण। आप लोगों को निश्चय मालूम हो गया कि मैं और मेरी पादरी
आईन पियंकड़ हैं, मिथ्याविश्वासी, व्यभिचारी और नाना प्रकार
के दोषों से भरा हुआ पादरी हूं तो कैसे आप लोगों की संगति में काम
कर सकता हूं क्योंकि ज्योति की संगति अन्धकार से नहीं है वह
आपसे आप अलग हो जायगा। ईश्वर के आगे आप लोगों का
मन और मेरा और मेरी पादरी आईन का मन खुला हुआ है और यह
न्याय के दिन में सभों के आगे प्रगट किया जायगा कि कौन र कैसे है।
आप लोग इसी बात पर स्थिर रहेंगे तो मैं इस्तफा दाखिल करूंगा और
अपने घर में जाकर आत्मा में भी प्रभु के लिये काम करूंगा। आप लोग
पादरी इम्माड एक कुत्तुर और हेड मास्टर इग्नातियुस लकड़ा को
कोन्डरा में रखिये जिससे सलतनत से मराठ चले बोलने और
कहने वाले कोई भी न होवे दिन और रात मिशन पानी में मराठी
डूब ते जाने और हेड मास्टर को बोलने वाला कोई भी न होवे
अभी दो महिना बीता है इम्माड एक पादरी का आना हुआ मराठी
दो गया हो रहा है और सब बातें बिगड़ते जा रही है। आप लोग
जो जी ही से इन्साफ करेंगे तो मैं प्रभु के न्याय के दिन तक इसी
बात पर सदा शोकित रहूंगा कि क्यों मुझको इस्तफा देना
हुआ और आप लोगों का कैसा न्याययुक्त फैसला है॥

३

आप लोगों के ख्याल पर मुझको बहुत
हो आपको चाहिये और ताज्जुब लगता है कि क्यों बेर रखते नहीं आवें
एक ही समय में निकालते और काम करते हैं जिससे प्रतिदिन आनन्द
नहीं पर दुःख पहुंचते हो जाता है। मैं आपको आप लोगों को आरम्भ में
२० वर्ष से कोन्डरा इलाका का चेयरमैन रखा गया हूं और काम चलते
आ रहा हूं तो क्यों फौरन बदल दिया जाता और इस्माइल पादरी एक
पोरस पादरी नहीं पर एक चेयरमैन के हैसियत पर काम करता है।
कोई मेरी गलती है तो पहिले ही आप लोग मुझको दिखाते और
चारों ओर मेरी बातों को इधर उधर नहीं फैलाते तो मुझको अच्छा ही
लगता पर जब ऐसी बातें बाजार में गांव में भाई बहिनों के पास
चलता है तो मुझको बड़ा भारी दुःख है जैसे चार्च की मिल
बोरे म्यियुस पादरी के ऊपर बहुत भरोसा रखते थे पर चार्च की मिल
का विश्वास उसके ऊपर घट गया जिसके कारण वे अपना जीवन
बरबाद कर डाले :- आप लोग मुझको निश्चयता दीजिये
कि कैसे मैं अपना जीवन बरबाद कर दिया और जिससे आप लोगों
का विश्वास मेरे ऊपर घट गया। क्या इस्मानुएल पादरी के आने ही से
मैं अपना जीवन बरबाद कर दिया कि पहिले से - यदि आप लोग मेरी
बातों को जानते हैं तो क्यों मुझको पहिले अलग नहीं कर दिये जिससे
इस्माइल पादरी को आप लोग जिम्मा कर दिये कोन्डरा इलाका को
सुधारने के लिये पादरी और पादरी आइन को सुधारने के लिये ?
मेरे और मेरे काम को और इलाका को शुद्धि करने का काम शुरू
कर दिया है आइये देखिये दो महिनों में कितना शुद्धि किया है।
जगह व स्थान + पुत्र भेज उसके हाथ से नहीं लिया जा रहा है।
जमशेदपुर, जसपुर, और किनकेन और चैनपुर को शुद्धि
करने के लिये भेजा गया था और बड़ागपुर भी जिससे बिना
शुद्धि किये क्यों कोन्डरा इलाका में भेज दिये जिसमें जिनको भी
उसका काम अधूरा पड़ जाता था। मुझे आप लोग पूरा कैफियत
और निश्चयता दीजिये - जिससे मैं शान्ति पाने सकूं - और
यदि आप लोग ध्यान नहीं रखने चाहते तो मैं प्रभु के न्याय
के लिये अपने मुकद्दमा को और आप लोगों की फैसला को रखूंगा -
प्रभु सनातन विभाग के लिये अपने सिंहासन के पास - मेरा
इन्साफ करेगा - और मेरा दिल कैसा है आप ही आप लोगों
को दिखलावेगा - मैं अपने कागज पात्र से आप लोगों को
निश्चयता देने नहीं सकूंगा - ॥

मैं १-६-३६ को इस्माइल पादरी को
चार्ज बरखा आदि जिम्मा नहीं दिया उसका कै एक कारण है
कि :- मैं आप लोगों के पास लिख भेजा कि कैसे और किन किन

चीजों को - इमानुएल पाहू को जिम्मा करूंगा क्यों कि जसपुर
और सिमिलिया एक हो बहे हैं जिससे उसको जिमा देना बहुत
कठिन हो रहा है आप लोग बतलाईये। आप लोगों से कोई जवाब
नहीं आया जिससे मैं बहुत व्याकुल में हूं।
ख :- इमानुएल पाहू को बतला के और यू टिपना से चार्ज
लेने का - आप युक्ति करना :-
True Copy :- Rev. L. Lakra कृपा करके मिशन
बही और कोई रख दियें जो मेरे काम के हों तो जिसे मैं बहुत
धन्यवाद देऊंगा॥ आप का संगी कार्यकारी -
Sd. I. Kujur 1-9-37

बहीबस्ता लेजानेवाले पांच प्रचारक ये जो चिट्ठी मेरे पास
पहुंचाये और बोले कि बहीबस्ता लेजाने के लिये गये हैं। मैं
नाखूब हो गया जो जिससे बोला गया था कि आपको सही आज्ञा के
ले जाना होगा।
उसके उत्तर में मैं २१ दि. कुछ ही को उनको
साथ लिख भेजा :- Rev. I. Kujur :- (True Copy)
मैंने आपका नोटिस पाया और हाल मालूम
किया - मेरा लिखना है कि मुझको जिमा देने में कोई रोक टोक नहीं है
मेरे पास सब बहियां मौजूद हैं जो पुराने कार्यकारियों से करीब २०
वर्ष से मेरे हाथ में जिमा दिया गया है। मैं जिमा देने को तैयार हूं
आप C.C. order ले के खुद आईये और आप ही जिमा लीजिये
और सही कर दीजिये कि कौन कौन चीजों को मैं पाया हूं। पर
ऐसा प्रचारकों को भेजके बहीबस्ता जिमा मांगेंगे तो मैं नहीं दे सकता हूं सो आप जानिये
Rev. L. Lakra
1-9-37
उसके उत्तर में वे लिखते हैं :-
True copy Rev. L. Lakra, जब से मैं आया तब ही से आप को यह
बतलाया हूं कि जिमा आप दीजिये और कहा कि [illegible] तैयार
कीजिये। परन्तु तीन महिने बीत गये आप के जिमा देने का कोई
[illegible] प्रगट नहीं होता इस लिये मुझको लिखना पड़ा। [illegible]
बना के आप भेज देते मैं बहियों को उस मोताबिक देख लेता
और सही करके भेज देता जिससे आप जान जाते कि कौन कौन चीज
मैंने पाया -
आप का संगी कार्यकारी
Sd. I. Kujur 1-9-37
ऐसा ही और भी बातें हैं जो मन्डली बातों
को बदला और मन को खराब कर देता है। मैं चाहता नहीं दे सकूंगा
यदि आप लोग सफाई से कारबार नहीं करेंगे और इमानुएल पाहा
को जिम्मा मुझको नहीं देगा

કાર્મચારીઓંકી સફાઈ પર વિચાર રખનાઓં
પ્રભુકી જ્યોતિ જગતમેં દિખલાના કર્મચારીઓંકા કર્તવ્ય કા મર્મ હૈ
ઔર અપને કામકા લેખા પ્રભુકે સિંહાસનકે સામને દેના-હોગા। ધર્મ
કે લિયે મુઝકો દુઃખ ભોગ, ભિખ માંગના પડ઼ે તૌભી વિશ્વત્વ કે
ન્યાયકે લિયે નહીં ડરૂંગા ઔર ધોખા કરના નહીં છોડ઼ૂંગા। આપલોગ
ધોખા કરને મેં મુઝે છોડ઼ દેંગે તૌભી મૈં આખિરતક પ્રભુકે ન્યાયકે
લિયે લડ઼ૂંગા ઔર દિખાઊંગા. કિ હેડમાસ્ટર ઔર પાદરી દિનકા
ઔર ઇમાનુએલ પાદ્રી સાહબોંકે લિયે કૈસે ઠોકર કે કારણ હૈં।
મુઝે મૃત્યુ મેં ભી જાના પડ઼ે મૈં નહીં ડરૂંગા. ઈશ્વર મેરે રક્ષા કરેગા.॥

જયપુર કે લિયે આગે મુઝકો આપલોગ
મદદ કર રહે હૈં ઔર સંચે મિલાના કામ આપલોગ મુઝસે પાદ્રી
ઇમાનુએલકો દે દિયે હૈં। ઇસ મૈં સત્ય ઔર કામકે લિયે મૈં બહુત
અચ્છા માનતા હૂં ક્યોંકિ મૈં પહિલે હીસે યહી બાતેં બોલતે ચલા
આયા હૂં કિ આપલોગ મુઝકો એક સહાયક દીજિયે જૈસે-
માનવર પ્રેસિડેન્ટ, ડબલ્યૂ રવિસન ઔર ગાંવ કમિશનકો
તિકરજો લિખકે ભી માંગી થી. ઔર ગાંવાર્ડ મુઝકો દિયા ગયા
આપસે બોલા કિ મુઝકો એક સહાયક કી આવશ્યકતા હૈ
પરંતુ સહાયક જિસસે આપલોગ કોઈ સંજોગ દિયે મેરે લિયે
લાભકા આશા નહીં દિખાઈ દે રહા હૈ। અભી મૈં હેડમાસ્ટર
ડ્ગોલાતિયુ સલ્દાનડા ઔર પાદ્રી ઇમાનુએલ ઝુંઝુરકે રિપોર્ટસે
મૈં એક વ્યભિચારી, મતવાલા, વિશ્વાસઘાતી આદિ ઠહરાયા
જાકે આપલોગોંકો દિખાયા ગયા હૂં ઔર આપલોગ કુછ ભી ઇન્સાફ
નહીં કરતે ઔર કહતે હૈં કિ ઐસી લબ્ધ કાર્યવાહી બાતોંકે લિયે સંચી
સે ભી સત્ય કે લિયે કોઈ શિલા નહીં જાયગા। મૈં અપના બિના ભી સત્ય
પાયે અપના અધિકાર નહીં છોડ઼ૂંગા ઔર બદલા નહીં જાઊંગા। ક્યોં
લડ઼ાઈ ઝગડ઼ા કે પહિલે મુઝકો નહીં બદલ દિયે મૈં આપલોગોં
કે બાપર વાહીસે વ્યભિચારી, મતવાલા, ઔર વિશ્વાસઘાતી
હોકે બદલી મેં કહીં નહીં જાઊંગા. ક્યોં આપને ઊપર ઐસા જાકે
કલંક લેઊંગા. । ઇસકે અલાવે ઇસી જગહ મુઝકો અપના કામ
બન્દ કરના હોગા – આગે આકે ઈશ્વર માલિક હૈ વહી
મેરી રક્ષા કરેગા – ઇસલોક ઔર પરલોક કે લિયે.

મૈં જો કુછ બાબત થા ઔર હૈ – લિખ
દિયા – આગે ઈશ્વર માલિક હૈં

આપલોગોંકા વિશ્વસ્ત – સેવક
પાદ્રી બાબુ લૌરેન્તિયુ સલ્દાનડા –
કોડરા ઇલાકા ચેરમેન –
૨–૯–૩૭.

497-99/37/F.-5 30th Sept. 37.

Manyawar Padri Laurentius Lakra ko Yishusahay!
Ap ki chitthi 2.9.37 ki mili. Main ne usko 23 September ko Karyyakarini ki baithki men pesh kiya. Karyyakarini Sabha ko bahut dukh hua ki ap ne chitthi ki baton ko gaur se bina bichar kiye hi kitni anuchit aur ninda ki baton ko likha hai.

Karyyakarini Sabha se adhikar pakar main ap ki chitthi ke jabab men thori bat likhna chahta hun. Kyonki jab Padri Schiebe ko in baton ki janch ke nimit anurodh kiya gaya aur we apne hath lena nahin chaha tab hi Council wahan ek Commission bhejne ka nirnay kii hai. So jab Commission wahan awegi tab hi bistarrup men in baton ka aur ap ki is chitthi ke bishay bhi bat bichar karegi.

Pahili bat ap ko yah sandeh hua hai ki yah bat Karyyakarini Sabha men bina pesh kiye hi likhi gai. Yah Karyyakarini Sabha ka bichar hai.

Dusri bat Council chahti hai ki ap us chitthi ko jo ap ko likhi gai hai original men Council ko bhejiye ki Council is bat ka bichar purn Council men bhi kar sake. Ap likhte hain phaysla hai "aisi suni sunai baton ko phaysla ham log nahin karenge aur na phaysla ke liye Church Council ke member Ranchi se Kondra jayenge. Council men batchit yon hui:- "Padri Laurentius Lakra, Babu Ignatius Lakra aur Pracharak Mansidh Tirkey se janch kiya jawe ki we dosh jo ek dusre ke upar le ate hain unko we khud apne dekh ke jante hain ki dusron ke kahne par report kiye hain. Is par jiste galti na samjha jawe harek ke pas arthat tinon ke pas explain karke ekhi janch ki chitthi likhi gai. Ap ka yah samajhna galat hai ki Council ap par abishwas karke ap ko doshi thahrake yah bichar kiya. Council kisi bishay ki janch men yah mamuli sawal puchhne ka hak rakhti hai aur wah nyay ki riti se na kewal ek se parantu tinon darkhastkariyon se wahi sawal kii hai.

Ap likhte hain ki Padri Immanuel Kujur ap ki gairhajiri men Council ke pas ap ke birudh shikayat kii hai aur Council ne unki baton ka bishwas kar ap ko doshi thahraya hai. Yah nishchayta ke sath ap ko likha jata hai ki Padri Immanuel Kujur ne abhi tak ap ke birodh koi shikayat nahin kii hai jaubhi yah ho sakta hai we sthan men ap ke birudh ki baten kahta hai. Malum hota hai ap ne apne khyal ki baton ko likha hai.

Ap likhte hain ki bhai bahin ap ki ankhen hain nishchay yah ho sakta hai parantu yah bhi uchit hai ki karmmchari un baton ki janch bhi karen aur yadi ap ne un baton ka janch bhi kiya hai aur prayakshrup se ap ko ye sachchi baten malum hui hai to ap ko na apne ko na Council ko na dusre ko dukh diye bina yah likhna uchit tha ki ap ko ye baten sachchi malum hui hain. Ap uprokt baton ke bishay dekhiye ap ko nishchay kisi bhale hi jan ne kaha hoga ki Padri Immanuel ne ap ke birudh Council ko bahut baten likhi hain jaubhi yah bilkul asatya hai. Parantu apne bina janch kiye hi Council par itna bhari dosh diya hai aur usko anyayi thahraya hai.

Phir bhi ap yah bilkul anuchit aur asatya bat likhi hai ki " "koi meri galti hai to pahle hi ap log mujh ko dikhate aur charon or meri baton ko idhar udhar nahin phaylate par jab aisi baten Bazar men ganwon men bhai bahinon ke pas chalta hai to mujhe bara bhari dukh hai" kya yah bat kisi ke bichar men a sakta hai ki Church Council ap ke birudh Bazaron men aur ganwon men bat phaylai hai ? Ap ne Council se is bat ki kaiphiyat mangi hai ki ap ne kaise apne jiwan ko barbad kiya hai kya ap iska uttar de sakte hain ki Council ne ap ke upar yah dosh laya hai ki ap ne apne

apne jiwan ko barbad kiya hai ? Likhna parta hai ki ap ne gaur se bichar kiye bina anuchit baton ko likha hai.

Phir ap apni badli ki baten likhte hain ki ap ki badli dosh laga kar kii jati hai. Kya ap ko Council ki or se badli jane ki koi agya mili hai ? Council yah bichar karti thi ki Jashpur ke karmmchariyon ke ek sthan men rahne se subidha tha par Padri Schiebe ki chitthi se malum hua ki Kinkel men ghar ka abhaw hai. Is karan Council badli ki koi bat bichar nahin kii hai.

Phir bhi likhte hain ki Padri Immanuel Kujur Chairman ka kam karte hain. Council unko Chairman ka adhikar nahin dii hai Chairman Padri Schiebe banaye gaye hain.

Asha karta hun ap phir chitthi ki baton ko misunderstand nahin karenge.

Ap ka bishwast,

[signature]

496/37/F.-5 30th Sept. 37.

To,
The Rev. M.Schiebe,
Lutheran compound,
Kinkel.

Dear Rev. Schiebe,

Yours of September 7th and that of Rev. L.Lakra forwarded by you reached here in due time. They were placed before the Executive on the 23rd September. The Executive going through both the letters was sorry to note that you misunderstood the resolution of the Church Council. As the Executive has empowered me to clear your points,I am writing a few lines in reply.

At the very outset of your letter you write "I wonder whether this paisla was produced by the whole Executive meeting of the Church Council". I wish to clear you doubt and write here that the resolutiln was passed in a meeting in which all the local members were present excepting the President.

You write again that "the servant of Christ are defamed". The Church Council can never do it rather it will remain far away from defaming the Pastors and in this particular case the Church Council has in no way defamed the Rev. L. Lakra.The simple question was put to him not because the Church Council disbelieved him but for the sake of justice. You can clearly see in the resolution that the Church Council has not made any difference between the reporter it has put them all the same question. Moreover each of them were written privately and nothing was done to defame any of them.

You perhapes question the right of the Church Council's having such an authority. The Executive without any doubt can claim this right of putting this simple question to a reporter,and there is nothing amiss in it.

You might have noticed the difference between the resolution of the Church Council a copy of which was sent to you and the wording of the resolution the Rev.L.Lakra quotes in his letter.They are quite untrue and the Rev.L.Lakra should not have written so.

I close my letter here for the Commission will soon discuss the matters in detail on the spot. Other points,will,I believe be clear to you from the letter addressed to the Rev.L.Lakra a copy of which is also enclosed herewith.

Hoping that you will not misunderstnad me

Yours sincerely,

[signature]

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G.E.L.CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.
CHURCH COUNCIL KI KARYYAKRAK SABHA KI BAITHKI.
Ta:6 September,1937.

------------oOo----------

17. Kondra ki chitthiyan wahan ke Padri Laurentius Lakra aur Babu Ignatius Lakra ke bich ke anban ke bishay parhi gai.

SANKALP:- Ki barsat ke bad Council ke kitne member wahan jakar iska phaysla karen. Is kam ke liye nimn likhit memberon ka ek Commission niyukt kiya jawe.
Rev. J. Tiga, Rev.D. Kujur, President, Hon.Mr. N. Soy aur Rev.W.Radsick.

Memo nos:445-51/37/F.-5.
Dated Ranchi, the 11th September, 1937.

Extract from the Minutes of the Church Council Executive of 6th September, 1937 forwarded to the Revds. J. Tiga, D. Kujur, W. Radsick & Messrs N. Soy, I. Lakra and Rev. L. Lakra. for information, guidance and compliance.

Secretary.
G.E.L.Church.

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G.E.L. CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.
CHURCH COUNCIL KI KARYYAKARAK SABHA KI BAITHKI.
Ta: 26 July, 1937.

---------oOo---------

5. Padri Schiebe ki chitthiyan Kondra Padri aur Head-Master ke bishay parhi gai. Babu Julius Tiga aur Pracharak Mansidh ki chitthiyan Schiebe sahib ke pas aur un chitthiyon ke jabab bhi parhe gaye.

SANKALP:- Padri Laurentius Lakra, Babu Ignatius Lakra aur Pracharak Mansidh Tirkey se janch kiya jawe ki we dosh jo ek dusre ke upar le ate hain unko we khud apne dekh ke jante hain ki dusron ke kahne par report kiye hain.

Memo no:342/37/F.-5.

Dated Ranchi, the 27th July, 1937.

Extract from the Minutes of the Church Council Executive of 26th July 1937 forwarded to the Rev: M. Schiebe, Lutheran compound, Kinkel, for information, guidance and compliance.

Secretary,
G.E.L.Church.

Church Council
Received 10. 8. 37
Register No. 11 7
Date 30. 7. 37
File 5
Reply No.
Date

File

Kondra.
30-7-37

Manyawar Rev. W. Radoick

ap ko mera prem-
purbak yishusahay.

Is patri dwara main yah janane ki arji karta hun ki main sab mandliyon o pracharakpanon men ho aya hun mandli amdani ko dekhne se main yahi malum kiya hun ki mujh ko bahut taklip bhogna hoga, bhukhe rahna parega aur apne bete betiyon ka school jana band karna parega; Jis ghar men main abhi rahta wah bahut purana makan hai bahut chuta hai bhit ke girne ka dar hai; bhiton men bhitar 2 ched hain jahan saup basa kiye hain tin bishwale saup ajhi kal mare gaye hain, makan maramat karna bahut jarurat hai, mandli amdani se ghar ka maramat ho nahin sakta hai agar C.C. se maramat na ho to ghargir jayga.

Main apna taklip aur ghar ka halat ap ke pas likhta aur arji karta hun ki ap C.C. men in do baton ko

rakhiye. (1) Mera taklif, amdani ki ghati, aur Parish-ka chotapan.

(2) Meri badli Chirodaud men hui, wahan rahne ke liye ghar nahin hai Kondra dauk Banglo-men rahta hun jiska halat bhi thik nahin hai

(1) Bichar kiya jay ki taklif ke ~~karan~~ grant diya jay.

2. Ghar ki maramati ke liye. Rupaiya-bandobas howe.

Ap ka Agyakari das

Rev. Immanuel Kujur

Church Council
Received 10. 8. 37
Register No. 117
Date 30. 7. 37
File 5
Reply No.
Date

File

Kondra.
30-7-37

Manyawar Rev. W. Radcick

ap ko mera prem-purbak yishusahay.

Is patri dwara main yah janane ki arji karta hun ki main sab mandliyon o pracharakpanon men ho aya hun mandli amdani ko dekhne se main yahi malum kiya hun ki mujh ko bahut taklip bhogna hoga, bhukhe rahna parega aur apne bete betiyon ka school jana band karna parega; Jis ghar men main abhi rahta wah bahut purana makan hai bahut chuta hai bhit ke girne ka dar hai; bhiton men bhitar 2 ched hain jahan saup basa kiye hain tin bishwale saup ajhi kal mare gaye hain, makan maramat karna bahut jarurat hai, mandli amdani se ghar ka maramat ho nahin sakta hai agar C.C. se maramat na ho to ghargir jayga.

Main apna taklip aur ghar ka halat ap ke pas likhta aur arji karta hun ki ap C.C. men in do baton ko

File

Kinkel 2.August 1937

To
The Church Council

Secretary Mr.Kandulna.

R a n c h i.

Mahasaygan,

Ap ko mera yishsusahay.

I. Mujhe ab tak malum nahin hai ki ap log mere bheje huwe kagajon par jinko maine tarik 9 July bheja, kya sochh aur bichhar karte hain.

Age main is ke sambandh aur chitthi bhej raha hun, jo aplogon ko bichhar karne keliye sahayta de sakti hain.

Arthat:

1) Mansidh Tirky ki asli chitthi jis se spast malum hota hai ki pahili chitthi us ki or se nahin likhi gai thi.

Rev. Laurentius arji karta hai ki is nai bat men jarur janch kiya jae, ki aise rakkam ke log pakhre jae.

2) Phir ek chitthi Ignatius Headmaster ki or se mere liye hai, jo uprokt bat se sambandh rakta hai.

Apne jabab ko main bhi bhejta hun, jiste ap jane ki meri khyal kya hai.

II. Phir ek to dusri bat main ap logon ke pas pesh karta hun, jis keliye main ap logon ki anumatti mangta hun.

Ap log malum kiye hongen, ki Home-board mere liye anewale March mahina thaharya hai ki main apne istpariwaron sahith Germany chutthi ke waste ja sakunga.

Meri ichha aur manorath yah hai ki mere liye us-ke pahile phursat diya jae ki Gossner kalisha ke Munda Manliyon men bhule aur kai ek stanon men 4 din ke bhiter men Evangelisation ka kam karne pawe.

Main Oktober-Novermber men jatra karne chahta hun aur phalne jaghaon men kam karne chahta hun.:

Koronjo, Raj-gangpur hokarke Chakradarpur (yadi bane Karimatti men bhi) Chaibassa, Purulia aur Ranchi hokarke Burjhu, Tamar, Govindpur, Takarma aur akhri Khutitoli.

Bishay hai: Christian Mandli.

Ishwar ke bachhan anusar.	1)	Christian mandli ka kya art?
	2)	" " kaise ban jati hai?
	3)	" " Kaise majbut ho jati hai?
	4)	" " Raj-bridhi keliye kya phal lati hai.

Yahan-kahi ap mujhe jane ko manjur karte hain, main jaunga. Susamay men jabab dijiye, jiste main un mandliyon se likha-parhi kar sakinga.

Ap ka bishwast,

H. Thiele

श्री- पुज्य- मान्यवर पादरी साहेब को मेरा यीशुसहाय

महाशय !

आप की चीट्ठी ता: १६-७-३७ को मिली
और पढ़के बयान मालूम किया पर उस
चीट्ठी का बयान जो कि आप मुझ से
कैफियत मेरी बेटी के बारे तलप करते हैं
सो बयान बिलकुल झूठा और गैरवाजिब
बात है वह चीट्ठी मैं आपको कभी नहीं
लिख के दिया हूं यह बात मैं पुराना प्रचारक
हो कर सच्चा दिल से कहता हूं, मैं किसी को
दुश्मनाई भी तो नहीं किया हूं पर कौन
बदमाश आदमी का काम है कि ऐसी झूठी
बयान देकर मेरे नाम से आपको चिट्ठी
लिखा हैं। सो उसका अन्दर पहिचानने वास्ते

P.T.O.

मेहरबानगी कर वह चीठी को भेज देते तो मैं उस लिखने
वाले को पता लगाते क्यों ऐसी झूठी बयान पुरोहित पादरी के
देना कोई हलकी बातें नहीं है बिना दोष के वह पादरी
पर दोष लगाना भी हलकी बात नहीं है। मेरी बेटी जेठ
छुट्टी में घर नहीं आई थी मुझे किसी प्रकार की बातें
मालूम नहीं हैं इससे मैं लचारबस हो कर आप की
चीठी का जवाब देने से मजबूर हूं बलकी मैं आपने
बेटी से भी इस बात का तहकीक कर आगाह करूंगा।

आप का आज्ञाकारी सेवक

मनसिद्ध तीरकी सा: लुटुतपाठ

GOSSNER MISSION IN CHOTA-NAGPUR

No. 60K

To,

The Revd. M. Schiebe,
Missionary, Lutheran Church,
Kinkel.

Dated Kondra, the 19th July, 1937.

Dear Rev. Sir

On the capacity of the Secretary, Kondra Ilaka Panch, I regret much and wonder to inform one, horrible matter that the Padri, Rev. L. Lakra, Kondra who is under your supervision and control, has issued out a new dispute against me and the teachers as well, which is, as follows:—

You may know that the Padri has reported against my wife as a dancer in the month of May 1937, only to abuse us before the Kondra christian brethren and sisters, the explanation and note of which I have already sent to the Head Supervisor Lutheran Schools, Ranchi and the matter is cleared up. Recently in the later part of June 37, the Padri's wife shamelessly was also uttering the same vice and evil term against my wife who asked her why she was speaking such an evil word, which she, being a Padriain ought not do so, otherwise she would be a bad example to the christian brethren and sisters. She was horribly angry and the talking was running thus between the Padriain and my wife.

P.T.O.

My wife said to her, "Padriain, why do you call me a dancer, a vague and vice team, where have seen me such?"

The Padriain said, "Surely you are such and moreover you have deceived my husband Rev. L. Lakra for adultery (nonsense + false)? and Mistress B. Tirkey also deceived my husband and committed adultery many times."

Hearing these words of the Padriain my wife was silent and hereafter told me the matter. Being the wife of the Padri, dear sir, she is uttering such vice and shameless words only to abuse us. When the Padriain spoke these words, the Padri was absent from Kondra. Now she and her husband are denying the said statements saying that she has not spoken those words. The matter spread far and wide in the Ilaka and they are disputing with us saying that the teachers are spreading the matter before all. Whatever the Padriain has spoken is true, but the matter is false. On the 14th July 1937, the Padri and his wife, out of anger and envy, were sitting on the verandah, and calling all the teachers bad names, from 6 a.m. to 2 p.m. while we were in our school duty. He was roaring like a tiger out of anger.

we did not speak a word but were silent as lambs hereafter also. The Padri threatened us to sue a case against the teachers why they are blaming him for adultery with the Mistress. The silly Padriain thinking herself to be a wise fellow, has uttered these words about her husband in her own mouth. Surely we are not blaming her husband for adultery but his own wife, shamelessly saying so, is proving that her husband is an adulteror. As regards my wife, I daresay she has spoken such shameless words out of her anger, envy and malicious character. No shame at all when they are uttering such before the christian children (school). The same day it seemed that the Lutheran compound was changed into the Bhuinyatoli or chamartoli. Now and then both the Padri and the Padriain are complaining and muttering against us saying, "हम लोग उनको यहां से उड़ा देंगे।"
(नौकरी वा जीवन)

Under these circumstances, I hope, it will be much better that you will be kind enough to take the Padri and the family at Kuckel very sharply, where he has been transferred to reside that the compound may be safe, well and out of dispute, for which act of kindness, I shall be thankful to you. An early reply is earnestly solicited.

I have the honor to be,
Sir
your most obedient servant,
I. Lakra
Headmaster, Kondra

P.N.W. There was the most secret meeting on saturday, the 17th July '37 in which the Padri, Padriain, Johan Prach. and Miss B. Tirkey were present. (12 a.m to 5 p.m.)

Kuch[illegible]
11 Ha.

Copy

Kinkel 25.VII.37

To

The Headmaster of Kondra U.P. School,

Ignatius Lakra.

Dear Sir,

I received your letter of the 19th. inst. complaining against Laurentius Padree and his wife. and asking me to call him to Kinkel to stay here.

I am well acquainted with ~~with~~ the recent trouble in Kondra and feel very sorry for it. All the papers concerning are still with me I am awaiting further order of the C.C. I am aware of your grievances. It is unwise to insult, but also to be suspicious and to be so irritable. A man who is sure of himself does not listen to ill fame, espacially not when created by women's gossip. An innocent mind keeps quiet! Educated Christians should by no means quarrel with ~~each~~ another knowing: Never revenge yourselves, beloved, but let the Wrath of God have its way; for it is written, Vengeance is mine, I will exact a requital- the Lord has said it. Rom. 12/19. Beloved bretheren, do not quarrel for the Lord's sake, who was reviled and made no retort, who suffered and never threatened, but left everything to Him, who judges justly. 1 Petr. 2/23. This is said to those who suffer, whose heart does not condemn themselves, who are denounced and persecuted by men for Christ's sake.

But if I am really guilty, if my heart is troubled by my own weakness and sin, it is better to admit and give way to that what gives me peace. I know the pastor better than ~~yxux and~~ I know you, and you can believe me, ~~I had~~ There are many experiences with him not only in connection with my person but with others too and we could but only approve his actions. It is therefore, a very hard task for me to assume that he should be such a rascal as painted in your letter to the C.C. Even you did never complain about him as long as he kept quiet about you. Should he really have done injustice to you, was it

A.

then necessary for you to react in such a way? I don't think so. If the 25 points in your contra-suit had been of great importance at that time past, then they should have been submitted long before. But now it seems if you had them collected to forge a weapon against the pastor, who dares to criticises your character. Dear me, where should we pastors go ,when everybody would react like you? I fear it was not very wise to do so. Would it have been not much more clever to keep quiet and to ask the superiors for investigation? Think about it!

Hoping that my letter could help you a xxbit

I am Yours truly,

P.C. I have no right to call Rev.L.Lakra to stay at Kinkel. This resolution was cancelled by the C.C. commision under Rev.Jilo Tiga.

Kinkel 9 July 37

12/7/37

Ch

To

The Lutheran Church Council
RANCHI.

file in Kondra file

Mahasaygan,

Aplogon ne mere pas Kondra golmal ki bathen bheje hai, jiste main usko dekhe, lekin spat se nahin likhte hain ki sapahay karne ka hak bhi hai atwa sirph janchne ka kam mujhe soamp diya gaya hai. Parantu kai ek rok-tok ki bathen hain: jaisa

A

1) Kix aj kal main jatra karna nahin sakta hun.
2) Sab koi jante hai ki Laurentius mere 'favour' men hai, isliye bhala hoga ki as pas ke rahne wale C.C. member is kam keliye bulaye jae.
3) Ap mujhe Kondra Chairman banae hain? Kis karan se? Laurentius nahin ho sakta hai, jaisa pahila bhi taharaya gaya tha? Ham Kondra keliye Chairman bhi nahin sakta han. Main sambhalne nahin sakta hun. Ap chahte hain ki Immanuel Padri mujhse adhin rahen. Apne is bichhar thik se sochh liya hai?
4) Main Immanuel Padri ke sath phir kabhi nahin kam karunga. Is Padri ko ap log kaheko chutthi nahin dete hain? Usne Jamshedpur men golmal uthaya, wisahi Kinkel men, wisahi Chainpur men aur abhi mujhe aisa hi malum hota hai ki thik Kondra men aiya jiste ' he may fish also there in troubled waters'. Us ke upar kai ek bar badli aur chutthi dene ka bichhar C.C. ki or se kiya gaya tha. Stosch saheb ne us ke bishay men bhi kaha, yadi nahin manta hai, to usko 'dismiss' karna chahiye. Aur dekhiye wah abhi hamon se tamsho khelta hai.

Is liye main Kondra ke golmal men hath dalne nahin chahta hun.

Main ap ke pas kai ek chitthi ko bhej raha hun, jisko ap dehan se parhiye aur sambandh bathon ko malum kijiye.

1) Julius mere pas Laurentius ke upar kis prakar nalis karta hai. Ap saman kijiye us ke ijhar se, ki wah Mandli ke niamon aur C.C. ke bishay men kaisa sahhhta hai.--- Tab meri jabab bhi parhiye.

2) Us chitthi ko dekiye jisko maine Ichhkela se paya aur tab milayije, jo kuchh usne ap logon ke sahmne man liya hai.

3) Mansidh Tirky, Lutchutpat, ka nalish Padri ke upar parhiye, kaisa yah bath chalai jati hai. aur mera uttar ko dekhiye. Mujhe bahut sakh malum parhta hai ki is bath men phir Immanuel aur Julius donon apne hath men mila lie hain. Shabud mere itnahin hai: Jisne do ber is rakkam ka maila kam chalaya hai, wah phir karne keliye taiyar hai.

So kirpakarke dehan se sochh bichhar kijiye aur mere chitthiyon ko apne naia bichhar ke sath mere pas bhejiye. Age bhi yah sochhiye ki yadi Laurentius sirph Jashpur keliye chuna jata hai, to Immanuel kabhi santusht nahin rahega agar Chirodanr uska dera samjha jata hai. Wah jarur Kondra Hatta hi men rahne kojega. Ha, yadi Laurentius Kinkel men rahne sakega (abhi to yagah nahin hai, yagah to tha aur banaya gaya tha, par jab ve ane nahin lage, tab 2nd. master is men baith gaya), tab to Immanuel Kondra men rah sakega.

— // —

B.

Phir ek to bath. Radsick saheb ne mere pas likha ki main phir Property incharge men rahen mal tasil kare, dekh bhal kare, itiyadi. Lekin maine sochh liya ki main grahan nahin kar sakta hun, yadi C.C. ki or se mujhe adhikar iskeliye nahin diya jata hai aur jo kuchh kagajpatr/hisab itiyadi hai, mere hath men kissi jababdehi admi se soamp dia nahin jata hai. Kai ek bandobast Mali Babu se kiya gaya, jis ke bishay men main nahin janta hun ki manjur kiya gaya hai. Meri ray yahin hai, ki ap jarur naia

Manager keliye bandobast kijiye,nahinto aur Rupaya aur jaijat barbat hojaega.Ap logon men se koi nahin hai,jo idhar hi ki bathe aur halat jante hain,isliye meri ray par dehan dijiye.Main bahut ashra dekhta hun ki Kandulna Secretary ek ber Kinkel aur Karamdih men awe.Ek jabadehi admi hona chahiye jo Property ko janta aur dekhbhal bhi kar sakta hai.

Age shubh,

Ap ka,

Letters to and from
M. Schiebe, Winkel
sent to the C.C.
for information
and Return.

[illegible] 9.VII.37

[illegible]
12/7/37

Kondra
17.6.37.

Dear Rev. Sir,

It is with deep sense of regret that I have to pen to you a few lines against Rev. L. Lakra of Kondra. I have got severe grievances against him as a pastor. May I say that he is not at all behaving himself as a Padri these days. The moment he has been appointed to work in Jaspur proper as against the civil portion of the Kondra Illaka he has played the foul game of having bad aims upon one or the other. To cite a particular case. He has lately aimed at disgracing and degrading the present Kondra Head Master Babu Ignatius Lakra and his wife. As you know the said master is my brother-in-law and his wife is my own sister. If any injustice happens to my own person for that I have got no complain whatsoever. But if any improper and uncomly thing happens to another that is a point which I cannot overlook. That the the case in Gumla and I had to struggle with Rev. D. Kujur. Rev. L. Lakra says the Head master is a drunkard and is to be found in that intoxicated condition not both while taking a class in the school and conducting a religious service in the Church. And with these words he has reported against him to the Head Supervisor. Then again he has and his wife (Padri's wife) have termed my sister a "dancer." I have actually facts with me to prove it. Now I ask is it to be liked that a Padri should say or blame thus? Here the Illaka Panch members have nothing to say against the Head master neither have they to say anything against my sister. The Padri is going headlong backbiting and preaching

false rumours against both (Head master and his wife). Now this is intolerable. Most so because Rev. L. Lakra and his wife are Padri and Padriain.

I have it in mind that I will follow the case up. I am giving you a chance to look into the matter as Rev. L. Lakra is your subordinate. The Kendra Parish is not doing anything as the same has to function as a witness and not as an arbitrator. The case is taken up by the HD supervisor. If it turns out to be false finally I think the right course to teach a Padri is to make him appear in a Court in a defamation suit. And I will do it. I have not much faith in a ministerium, in the CC., in the HD supervisor. In a fortnight's time if you could kindly bring both the parties to a conciliation I would be much obliged. With high anticipations and good regards.

Yours sincerely,

Julius Tiga

(Gumla).

Kinkel, 21 June 1937.

Babu Julius Tiga,
GUMLA.

Prie Bhay,

Meine ap ki chitthi ko, tarik 17. June, paya, jis men ap Laurentius Padri ke upar mere pas nalis karte hain aur mujhe phursat dene mangte hain ki main Kondra Padri aur Headmaster ki bath ko saphay kare 15 din ke bhiter men, nahin to is bath ap ki or se court ke sahmne laya jaega ~~hai~~.

Padri Laurentius mera Sangikarmchari to hai, jis ke karan main us par dehan de sakta hun, lekin ap ke report ke motabik yah ek to Kondra Ilaka ki bath bhi hai, jis men main bina C.C. ki anumatti se hath dalne nahin sakta hun. Yadi yah bath Head-supervisor ke pas pesh kiyi gayi hai, to wah us "channel" ho karke mere pas a sakti hai aur tabto main kam kar sakunga. Bhala hota hai ki ham nyamon se adhin hote rahe, nahin to ham, jo mandli chalane aur samjhane walen hain, golmal uthane ka karan ban jate hain.

Bhari dosh to hai, jo Headmaster aur uski patni ke upar lagaya gaya hai aur main thik samajhta hu ki ap apne "family" ke karan se is bath ka sudhar chahte aur kojte hain. Lekin Christ bishwasiyon ko utchit nahin hain ki weh is rakkam se lare jaisa ap prastao karte hain. Main ap ko ek upay batlane chahta hun, jisko maine anubhao karke achha paya: Yadi Headmaster ji nirdosh hai, to naraj ho jane ka karan nahin hai, wah sah lewe aur sahne se jit lega. Ham par bhi ek samay barha dosh lagaya gaya hai yahan tak ki main "defamation suit" chalane saka, parantu maine nahin chaha, kyonki man men shanti thi aur is riti se main un dosh laganewalon par jit liya, court ke bina. Yadi Headmaster ke man men doshi hone ke karan se chanti na hoti hai, tab to sirph man hi lene se us ki bath saphay ho ja sakti hai Prabhu ki pratigiya ke anusar. -- Abtak meri khyal yah thi ki Laurentius Padree aisa admi hai jo kisi par dosh lagane tak bahut samay leta hai aur yadi karta hai to dukh ke sath karta hai.

Bahut Yishusahay ke sath,

Ap ka,

चैनपुर

२ जुलाय १९३० ई.

मान्यवार एम श्रीवे साहब को मेरा बहुत २ यीशुसहाय
और नमस्कार पहुंचे। आगे समाचार है की मुझ को कोड़रा
पुरबकांड और कसीरा चोरेडांड प्रचारकपन के भाइयों
से एक बहुत उदास का समाचार मिला है की कोड़रा
पादरी लौरेन तीपुस बाबू हमारी बेटी विलासी तिर्की
को जो कोड़रा में मिसट्रेस का काम करती है कुकर्म
किया और करते रहता है वह मेरी बेटी नौकरी
से डरवाता है और जबरजसती व्यभिचार करता है
कुकर्मी पापी पादरी पादरी होकर दुसरे के बेटी
को खराब करता है पादरीपन धोखा कर रहे हैं
आप इस पापी पादरी के मालिक हैं सो उस को कोड़रा
हाता से तुरन्त हटा दीजीये नहीं तो मैं उसपर नालिश
विपत्ति लाऊंगा। पापी पादरी मेरी प्यारी निर्दोषी

बेटी को खराब कर दिया यदि यह कोइरी से पूरा न किया
जाय तो मैं जो उसका पिता हूं जरूर करके उस पर
वार कर फेंक दूंगा इन्सपेक्टरों को मैं हाल
दूंगा कि पादरी मेरी बेटी पर अत्याचार किया और
कहता है पादरी नौकरी से हटवाकर और जबरजोरी से
ऐसा काम किया और करता रहता है अन्त में मैं
यही बोलता हूं कि ऐसे पादरी को तुरन्त ऐसा दण्ड
दीजिए की वह जीवन भर याद करे चाहे कोइरी से
भर भगाइये और किन्तु केवल ले जाइयेगा।

आगे शुभ

आपका विश्वस्त भाई
मनसिंह तिवारी
लुचुतपाट

Babu

Mansidh Tirkey Lutthurbpat.

ko mera Yishusahay.

Mahasay,

Maine ap ki chitthi ko ,tarik 2.July paya aur bahut apsos ke sath malum kiya ki ap kis prakar se ek Padri ke upar dosh lagate hai. Prie bhay aisa nahin banta hai aur main ap ki bat grahan kar nahin sakta hun.Isliye yadi ap meri sahayta kojte hai to phalna salah anusar kijiye.

1) Hamko sunaiye ki kaun bhay log yane " BHAY" aisi baton ko L.Lakra Padri ke upar apko bataye hain, .
2) Ap pahile khud apne bethi ka pria bap hote huwe is bat men janchiye,arthat Padri ki se mulakat kijiye, jaisa susamachar bachan anusar karna uchhit hai. Main sochta hun ki ap purana Pracharak is stal bachan ko khyal karte hain,ki nahin ?
3) Ap apne bethi se ijhar lijiye ki is prakar burra beohar Padri ki or ~~xx~~ larki se kiya gaya hai,athwa nahin, aur tab mujhe sab in tin baton ko likh karke bhejiye.

Itne men main ap ki jabab ki ashra men rahunga.

Age shubh, [signature] . 7 VII 37

Gumla
11. 3. 37.

बन्धु अधिकारियों को नमस्कार और उन सब
इस कलीसिया के भाई बहिनों को जो मुझे जानने का ख्याल
करते हैं मेरा बहुत२ यीशुसहाय के प्रेम से

मैं समाचार अच्छा हूँ। आप लोगों का अच्छी उम्मेद
मनाता हूँ। लिखने का खास विषय यह है कि मुझे एक
भारी बात आप को लिखना है। बात है कि पीछे महासभा
से मैं गहरी सोच में हूँ कि आगे क्या किया जायगा।
मंडली टूटती जा रही है। फिर फेडरेशन, लूथर, स्वीडिश,
एस. पी. जी. आदि तथा फिर इसाई धर्म में ही दो
झुंड मिल कर उस बात को जो असली होनी चाहिए
सिर्फ तोपने का उपाय है। मैं ने असली जो बात है
उसको एक डिसेन्टरस से कहा। शुरू में वे नहीं मंजूर
किये। लिखी हुई कागज (दो [illegible]) की बात आप
जानते होंगे। मैं ने बड़ा विरोध किया। पीछे इलाका२
में यानी गुमला, लोहरदगा और एक हिस्सा रांची में
घूम कर भाईयों को जमा कर फिर भी बात किया।
भाईयों की राय पादरियों की राय से भिन्न है।
डिसेन्टर पादरी से भी भाईयों का राय भिन्न है।
मैं हैरान होकर पीछे एक लिखित कार्यक्रम
(प्रोग्राम) डिसेन्टरों को पेश किया है और वह उन
सब को मंजूर हो गया है। उस मुताबिक
अब काम चलाना चाहिए। कौंसिल का मुँह
देखना, महासभा को ताकना, फेडरेशन स्वीडिश
या और भी कोई चीज का कुछ भी भरोसा

नहीं है। वे सिर्फ हमारी तमाशा देखेंगे और
आपस में देखा देखी होंगे और घर का काम
गिरता चला जायगा। आप लोग भी आगे
तो उसका मुँह देखेगा। रास्ता कहाँ है? मेरे
ख्याल को दिमाग में आता है कि अभी समय है
पीछे बाद जायगा। फिर हम लोग फिर भी ऐसा
मिलेंगे कि उठ नहीं सकेंगे। यह आदमी मौका है
सब नौजवान लोग उठें और मेरी पेश किई
हुई बात को मान कर काम करें। यह धार्मिक
युद्ध है। अधिकारियों और अत्याचार, अन्याय
और अत्याचार के विरुद्ध यह लड़ाई है।
कागज मैं छपा कर भेजूंगा। अभी तीन
इलाकों में पानी लाहर देगा, चौनपुर
और केउरा में। लेकिन आज 2 इलाकों को पकड़ना
होगा। काम है सब बात का खुलासा खुली
बात करना वो कुरी और अन्याय को तोड़ना।
फिर एक निर्णय करना हकड़ा करता जो
छोटानागपुर बैंक में दिया जायगा। कायदा है इसे
लूटेरा परिवार से ९) रु० चन्दा या एक उठना
चाहिए एक ही बार। पांच वर्ष तक
यह पैसा बिल्कुल नहीं लिया जायगा।
हमारा काम पांच वर्ष का तान है।

पांच वर्ष के अन्त में देखेंगे कि कितना काम
हुआ कितना बाकी रहेगा। यहां उठक हुआ का
बात नहीं है। यहां सोच कृपेयन कलीसिया की बात
बात है। हरेक साल कैसा काम होंगे इसका कागज
और पांच साल का भी काम होगा जो अलग २
कागज में छप कर भेजा जायगा। शुरू से
आखिरी तक पांच जनों किये तो आ जाएंगे
गए हैं एक आफी सभा बनेगी वो रहेंगी
चेयरमैन मैं हूं और सेक्रेटरी महिंदु बेसरा
यह देहाती प्रोग्राम है। रांची अलग बाहर
किया गया है। गोस्सनर के नाम पर आप को
हमलोग अगुवा पकड़ेंगे। आप अपने बोर्ड
राय में जो इस काम को होंगे चार जन
साथ इसका से चुन दीजिये। हम लोग नाम
मांगेंगे। पर कौंसिल न लाने के लिये तैयार
रहना चाहिये। लाजा की बात से नहीं
डरना चाहिये। पूरा बात पीछे मालूम होगा
जब कागज आप को छपने। फिर मैं भी
दौरा करने निकलूंगा। काम 1ली जुलाई
१९७७ से शुरू होकर ३० जून १९८२
तक पांच वर्ष रहेगा। इस सभा का
कोई नाम नहीं है। इसमें केवल मंडली का
काम है। प्रेम से, Julius Tigga
२३.७७ को लिख रहा हूं।

बापू
१५ अलिपार्क रोड
उपकेला
नागपूर

File

कोंडरा पेरिश सभा की ओर से

छोटानागपुर और आसाम लूथेरन चर्च कौंसिल को

कोंडरा पेरिश का C. C. को पोशु सहाय.

सबिनय जनाया जाता है कि:- कोंडरा पेरिश सभा की पहली बैठकी, पहली सेप्टेम्बर १९३७ को हुई। पेरिश सभा की यह राय हुई कि सभा के मिनिट्स की ५ वी बातें C.C. के पास भेजी जाय। इस लिये सभा की ५ वी बातें C.C. के पास भेजी जाती हैं।

५-वी बात:— हेड मास्टर साहब बतलाये" कि लौरेंतियुस पादरी झूठ मूठ में झूठा दोष लगाये चलते है, नया २ बनावटी जोड़ जाड़ कर नया २ रिपोर्ट देते हैं, जैसे I हेडमास्टर जशपुर नगर में पीके वहां के गल्ली में टहलता था। II जन सधाररणों में यह प्रचारता है कि हेडमास्टर पीके गिर्जा में उपदेश करता है इसी लिये उस का उपदेश सुनने आई बहिनों को मोटा होता है।

कोंडरा पेरिश Civil सभा अफसोस करती है कि हेडमास्टर पर जो दोष आरोपित हुआ है वह बहुत दिन हो गया तौभी सफाई नहीं किई गई है, इस लिये कोन्डरा Civil पेरिश सभा C.C. से अर्ज करती है कि सफाई करने का अख्तियार पेरिश सभा को दिया जाय।.

नकल करनेवाला Naiman Khess

कोन्डरा:
ता. १ली सेप्टेम्बर १९३७ }

Chairman.
I. Kujur
1-9-37

1

No. 72K

Lutheran Church Compound,
Kondra.

The 2nd September 1937.

मान्यवर सेक्रेटरी साहेब, जी. ई. एल चार्च कौंसल, रांची को मेरा बहुत२ यीशसहाय।

आगे आप को आदर पूर्वक मैं जनाता हूं कि आप की प्रेममय चिट्ठी नं० ३८६/३७ तारिख २१ अगस्त सन १९३७ ई० मुझको २८ अगस्त सन १९३७ ई० को मिली और उसके लिये मैं आप को बहुत ही धन्यबाद देता हूं और आप की आज्ञानुसार मैं नीचे लिखित बातें तथा कामों को आप के सामने दीनतापूर्वक पेश करता हूं जो पादरी एल. लकड़ा के बाबत हैं और जिन को मैं खुद अपनी आंखों और स्पष्ट कानों से देखा और सुना हूं। परन्तु पेश करने के पहिले मैं दो बातें को आप के सामने धर देता हूं अर्थात पहिला — पादरी बाबू Offensive लेकर न प्रचारक पलने इलाका पंच न मुझको कोई बात को जांच कर मेरे विरुद्ध रिपोर्ट फरमाई है परन्तु चुपकी से चार सौ रिव आप लोगों के पास रिपोर्ट दाखिल किई है जो वो बिलकुल चुगली करना ठीक नजायज है। दूसरी — मैं Defensive होकर उससे लड़ाई झगड़ा करना नहीं चाहता था क्योंकि मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि यदि भाई बाहरी गैर हमों के झगड़े को सुने तो बहुत ही ठोकर का कारण होगा। अपनी बचाईस और लाचार वश होकर और मान्यवर हेड सुपरिन्टेंडेंट से अनुमति पाकर मुझको उसके विरुद्ध कई बातों को लिखना ही पड़ा। मैं झगड़े और लड़ाई का जन नहीं हूं परन्तु प्रेम और दीनता का हूं। दृढ़ता से मैं कहता हूं कि यह मेरे जीवन में सब से पहिला झगड़ा है जिसमें मैं फंसा हूं और दिखता भी हूं। आप मेरे प्रेम को अपने स्कूल ही समय से मालूम किये होंगे।

P.T.O.

१. <u>पादरी बाबू का मिथ्या विश्वास और ख्रीष्टीय भाई बहिनों के लिये ठोकर का कारण होना :—</u>

मैं पादरी बाबू के साथ कशोर गांव गया था कि उसके बिल्कुल नये घर की नेव डाली जाय। वहां मैं ने देखा कि सात शीशा जो हड्डियों से भरी था, नेव में गाड़ी गई इस बिश्वास से कि घर तैयार होने से उसी घर में रोग और मृत्यु न आवे। वहां ख्रीष्टीय भाई बहिनों को ठोकर थी।

२. <u>पादरी बाबू का मद्रास रहने के समय तीन बोतल फुलौ ले आना :—</u>

कोडरा का भट्ठीदार हमों के मिशन हाते में दो बार आया और पादरी बाबू को खोज करने लगा। भट्ठीदार ने मुझको और मास्टरनियों को स्पष्ट रीति से बताया कि पादरी बाबू तीन बोतल फुलौ भट्ठा से ले आया है जिसका दाम ११ रुपैया बाकी है उसी को मांगने आया हूं। उसी वक्त पादरी बाबू जसपुर तरफ सफर में था।

३ <u>पादरी बाबू की स्त्री और मिस्ट्रेस्स बो॰ लरकी का रात के समय भट्ठी जाना और मदिरा ले आना :—</u>

पादरिआइन और मिस्ट्रेस्स रात के समय भट्ठी गयीं और एक बोतल मदिरा भराकर दो ख्रीष्टीय जवानों को मदिरा पिलाई थी। पिछले लोग इधर उधर बोलते तथा भाई बहिनों को सुनाते हैं कि पादरी बाबू, पादरिआइन और मिस्ट्रेस्स भट्ठी जाकर मदिरा लाते हैं तो हमों को पीने खाने में क्या दोष है। वे जवान यह भी घृणित शब्द बोलते हैं, कि ये दोनों स्त्रियां एक मतलब नहीं, पर दो मतलब से भट्ठी गईं थीं, यदि हम लोग वहां नहीं होते तो उनको वहां दुर्दशा होती।

४. <u>पादरी बाबू की निर्दयता :—</u>

पादरी बाबू अपने निहायत क्रोध में आकर अपनी स्त्री को इतना मारा कि वह बेहोश हो जाकर लंबी श्वांस भरती थी, हां यदि तुरन्त दवा नहीं किई जाती, तो वह बेचारी

मृत्यु को संवारती। बाव इलियाजर मास्टर और मैं १२ बजे रात को बुलाये जाने पर वहां गये और पादिआइन को कहरती हुई दशा में पाये। मास्टर बाव बैद्य है और वह दवा सब बनाकर पीने को दिया और बदन में भी लगाया जिससे उसका श्वांस फिर गया और वह कुछ चंगी हो गई। भाई बहिन गरा सन कर छाती पीटते हैं और बोलते हैं: हाय, हाय! पादरी का काम।

५. पादरी बाव का दोरवयों पर हंसना और ठट्ठा मारना :-

(क) बाव इलियाजर मास्टर बहुत बिमार था हां दो तीन रोज तक बहुत कठिन दशा में था। पादरी उसको ऐसी हालत में देख कर सफर निकला। हम लोग उसको दिन २ विनती के साथ प्रभु के हाथ में सौंपते थे। जब वह सफर से फिरा, मैं किसी काम के लिये उसके पास गया। वह मुझको पूछा कि मास्टर कैसा है? मैं बोला - मास्टर कुछ अच्छा है। वह बोला - मैं समझता था कि मास्टर चला गया। कैसा भयंकर लब्ज है पादरी होकर ऐसी खराब बात उच्चारण करता है।

(ख) मास्टरों का लैन घर बिगड़ा और चूना देख कर पादरी बाव आंगन में खड़ा होकर हंसा और ठट्ठा मारता था और दूसरों के पास बोलता था कि मास्टर लोग खूब सयावेंगे।

६. पादरी बाव का धमकाना तथा पादिआइन का श्राप देना :-

(क) १४ वीं जुलाई सन १९६९ को वह अपने बरंडे में खड़ा हुआ और बोलने लगा — मैं मास्टरों को देखूंगा हां उनको उड़ा दूंगा।

(ख) पादिआइन आंगन में खड़ी हो कर श्राप देती है:- कि मास्टरों के मुंह में पिल्लू पड़े और वे गल जावें। ये तो ख्रीष्टीय बोली नहीं परन्तु सांसारिक बोली है।

P.T.O.

७. पादरी बाब का बोर्डिंग के चावल और मट्टी तेल हजम कर लेना :—

(क) पादरी बाब कई एक बार बोर्डिंग के चावल और मट्टी तेल गोदाम से लिया है और नहीं फिराया है और न उनको फिरावेगा। उसके आगे और डर रखना चाहिये कि मैं बालकगण का चावल और तेल ले रहा हूं जिसको मास्टर गण मासिक तलब से जमा करते हैं ~~चाहिये~~। 75
कैसी लज्जा की बात।

(ख) वह बाब इलियाजार मास्टर का भी कमाया हुआ ८, आठ ~~८~~ 75 रुपैया हजम कर लिया है, जब वह मांगने जाता है तो वह उसी को गाली देता है और धमकाता भी है यह कह कर "तुम को (मास्टर) लाज शर्म नहीं है कि ऐसे बड़े आदमी (पादरी) के पास रुपैया मांगने आते हो, मैं किसी का खरा नहीं धरता हूं।" रुपैया भी वह धरता है और मांगने से धड़की सुनाता है।

८. पादरी बाब और मिस्ट्रेस का मेल :—

सर्वे सहित मालूम होवे कि यही खराब बात बोर्डिंग की बबर्चीनी के द्वारा पादरीआइन की ओर से मेरी मास्टरिन के पास पहुंचाई गई जिसमें पादरीआइन अपनी बड़ाई और प्रशंसा के लिये और हमों को दुख मालूम करवाने के लिये साफ रीति से बोली है कि "मिस्ट्रेस बिलासी ने को मेरे प्यारे पति एल. लकड़ा को कई बार कुकर्म करवाकर बिगाड़ दिई है।" बबर्चीनी इस बात को इधर उधर फैलाने लगी तब पादरी बाब उसी विधवा बबर्चीनी को तुरन्त राजी खुसी करके यहां कोंडरा से गमला रघुनाथपुर ले गया और वहां बिना वचनदत्त तथा पुकार अपने जेठशाला के साथ सादी कर दिई - यह कहते हुए कि "मेरे ही

पास न आग और पानी है मुल्क को कौन क्या करेगा।"

अभी वही ववचौनी उसके परिवार में चली गई और अब वह जरूर ही उसके पक्ष और हमों के विपदा में में बोलेगी। रिपोर्ट में मैं साफ और स्पष्टता से लिख चुका हूं। जून महीने में पादरी ब्लाइन और मिस्ट्रेस के बीच भारी झगड़ा था और वे एक दूसरे से न बैठते न उठते न बातचीत करते थे। अभी पादरी बाब मिस्ट्रेस को मिला लिया है और अपनी राय में ले आया है और वे दोनों अभी इसी बात को पूरा करने के लिये बहुत प्रयत्न कर रहे हैं। सब लोगों का विश्वास है कि जब पादरी को निज मांस वचा लाई बोल चुकी है तब पादरी और मिस्ट्रेस में मेल है।

अन्त में यही अर्ज पेश करता हूं कि और भी बातें इसी रिपोर्ट में हैं जो बिलकुल सच और स्पष्ट है और मैं उनको लिखना भी नहीं चाहता हूं। मैं इन सब बातों को लिखना भी नहीं चाहता था पर आप की आज्ञानुसार पेश कर देता हूं इस आशा से कि आप लोग गंभीरता से विचार कीजिये और जो भला होवे सो कीजिये। पर बात यही है कि जब तक यही पादरी बाब कोंडरा में रहेंगे तब तक वह स्कूल और स्कूल मास्टरों के लिये दरबदादुकुल जैसे कितने मास्टरों को बीते समयों में कर चुका है और किन २ नई २ झूठी बात भाई बहिनों के बीच फैलावेगा — जैसे वे चार दिन बीत गये कि मैं दो झूठी और बनावटी और डाही बात सुन चुका हूं :—

१. हेडमास्टर जसपुर नगर जाकर निशे में इधर उधर फिरता था — यह पादरी को बोली है। हाय हाय ऐसा झूठा और डाही पादरी, मैं सच कहता हूं मैं अभी तक न जसपुर गया हूं न उसको देखा हूं।

२. हेडमास्टर जब २ गिर्जा करता है (इतवार को) तब २ वह पी के गिर्जा करता है इसी से उसका उपदेश

और जाति बहुत मनोहर, सुहावनी और प्रेममय होती है। यह बात भी बिल्कुल झूठी और डाही है आप तुरन्त मालुम कर सकते हैं - मनुष्य से डर नहीं तो ईश्वर से मुझको डर नहीं है। आखिरी में मैं यही प्रेम से लिख कर अपना लेख अन्त करता हूं कि आप गौर से विचार कीजिये और इसका अन्तिम फैसला सुसमय में भेज दीजिये जिसके लिये मैं आप का बहुत ही धन्यवादी हूंऊंगा-

बहुतर प्रेममय यीशु सहाय आप सभों को होवे

I have the honor to be,
Sir,
Your most obedient servant
I. Lakra.
Headmaster, Kondra.

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G.E.L.CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.
CHURCH COUNCIL KI KARYYAKARAK SABHA KI BAITHKI.
Ta: 1 July, 1937.
---------oOo---------

4. Kondra Head-Master ke bishay Rev: Laurentius Lakra ka report .Padri aur Head-Master aur Head-Master ke paksh men Panchon se jo chitthi mili so sab parhe gaye.

SANKALP:- Yahi bat Mr. Schiebe ko saunpa jawe aur donon taraph ke kagaj usko bheja jawe.

Memo nos: 308-309/37/F.-5.

Dated Ranchi, the 3rd July, 1937.

Extract from the Minutes of the Church Council Executive of 1st July 1937 forwarded to the Rev:ds. M. Schiebe and Laurentius Lakra. for information, guidance and compliance.

Secretary,
G.E.L.Church.

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G.E.L. CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.
CHURCH COUNCIL KI KARYYARAK SABHA KI BAITHKI.
Ta: 1 July, 1937.
--------oOo--------

3. Chairmanship of Kondra Ilaka.- Mr. Schiebe Kondra Ilaka ka bhi Chairman rahen aur Rev: I. Kujur unke adhin rah kar samucha Kondra civil men kam kare. Abhi we jahan rahte hain wahin barsat men rahen.

Memo nos: 306-307/37/F.-5.
Dated Ranchi, the 3rd July, 1937.

Extract from the Minutes ofthe Church Council Executive of 1st July 1937 forwarded to the Rev:ds. M. Schiebe and Immanuel Kujur for information, guidance and compliance.

Secretary,
G.E.L.Church.

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G.E.L. CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.
CHURCH COUNCIL KI KARYYAKARAK SABHA KI BAITHKI
Ta: 16 June, 1936.

-------oOo---------

18. Kondra Ilaka ke Tipkapani ke Benjamin Toppo aur Israel Toppo ki chitthi 8-6-36. Is chitthi men we gharane sahit S.P.G. Mission men jane ke bishay likhte hain.

Yah chitthi Ilaka Chairman ko bheja jay ki wah un gharanon ko phir bhi samjhawe ki apni mata mandali men rahe. Ilaka Chairman Council ko batlawe ki unke S.P.G. men chale jane ka kya karan hai.

Memo no. 437/36/F.-5.

Dated Ranchi, the 17th June, 1936

Extract from the Minutes of the Church Council Executive of 16th June 1936 forwarded to the Rev: Laurentius Lakra, Lutheran compound, Kondra, for information, guidance and compliance.

Secretary,
G.E.L. Church.

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G.E.L. CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.
CHURCH COUNCIL KI KARYYAKARAK SABHA KI BAITHKI.
Ta: 7 May, 1936.
---------oOo---------

11. KONDRA ILAKE KI CHITTHI 26.3.36 KI.

~~xxxxxxx~~ Chitthi parhi gai. Ilaka report karti hai ki Chirodanr ke master o Pracharak Johan mithya bishwasi hoke wahan ki mandali ko thokar dete aur bigarte hain aur arji karti hai ki master us sthan se badli kiye jawen. President ne bhi is report ko samarthan kar kaha ki yah bat thik hai ki Babu Johan Minz wahan ki mandali ko bigarta hai aur is karan uski badli wahan se dusre jagah men hona bahut jaruri hai.

Bichar hua ki Head-Supervisor ko likha jawe ki we Babu Johan Minz ki badli ka bandobast jitna shighar ho karen. Report ke parhne se saph malum hota hai ki Babu Johan Minz mithya bishwas ka kam karte hain is karan usko mandali saja diya jay.

Memo nos: 288-90/36/F.-5.

Dated Ranchi, the 14th. May, 1936.

Extract from the Minutes of the Church Council Executive of 7th May, 1936 forwarded to the Hd. Supervisor, Rev: L. Lakra & Johan for information, guidance and compliance.

P. Kandulna
Secretary,
G.E.L. Church.

To the President
P. K[illegible]
File
Ch

Kondra
26.3.36.

मान्यवर- प्रेसिडेन्ट- साहेब को मेरा बहुत २ यीशु सहाय—
मैं १४.१०.३४ का गोहन गिरजा का इजहार कागज और इसका पेच को ४.१२.३४ का बदली समर्थन सिफारिस और उसका नकल— और सब इन्सपेक्टर स्कूलस- चैनपुर की- चिट्ठी का नकल आपके पास और C.C. के पास भेज दिया हूँ — जिस्से गांव का उचित फैसला होकर [illegible] में भेज दीजिये जिस्से आगे गोहन पर कारवाई किई जाय—

1) गोहन गिरजा- मिथ्या विश्वासी है मण्डली में मिथ्या विश्वास को बढ़ता जैसा- इजहार कागज में सबूत- है —
2) मण्डली के अधिकारियों के अधीन न रहना (दो तीन वर्ष से मण्डली का आमदनी का हिसाब में गड़बड़ी डालना और परचे चलाना—
3) मण्डली आमदनी को गबराई करना और मण्डली के फैसला अधीन नहीं रहना—
4) समूचे इलाके में डाइन विसाही का विश्वास उत्पन्न करना—
5) समूचा चिरोडांड़ मण्डली का कुविश्वास में भ्रष्ट हो जाना और धर्म और अधर्म में अन्धा बन जाना और चिरोडांड़ में हथियार रखनी रखवाके चौपट हो जाना- इसी के रहने से—
6) चिरोडांड़ मण्डली का गिर जाना—

इन्हीं सब कारणों को दिखलाते हुए आपलोगों के पास लिखता हूँ कि यह आदमी और उन को इस इलाका से हटा दिया जाय- क्योंकि जब वह सब इन्सपेक्टर के पास जाके केवल स्कूल में आनाकानी चाहता और जैसा सब इन्सपेक्टर लिखते हैं कि वह चिरोडांड़ ही में मास्टर करे- बहुत अफसोस की बात होगी- यदि वह चिरोडांड़ ही में रहे - वह डिस्मिस किया जाय चाहे दूसरे इलाके में हटा दिया जाय-। हो सकता है कि यदि मण्डली आना मन्दि छोड़वा दिया जाय तो मण्डली दोनागा को और पहिले से पीछे और अधिक भूल हो जायगी— अच्छा होगा- बिल्कुल हटा दिया जाय—

अभी तक मण्डली सजा नहीं दिये हैं- इसी आशा- जिस्से वह चिरोडांड़ से हट जाय और कहीं आनाकानी न सके। आप लोगों से मेरी आरजू है कि और खबर दीजिये कि कैसा करना होगा। क्या मण्डली सजा दे दें? — चाहे जैसा आप लोगों को अच्छा मालूम होवे शीघ्र खबर दीजिये—

आपलोगों का विश्वासी- सेवक—
Rev. Laurentius Lakra
Kondra

मेरे विचार में सुरसांग में बदली होना अब जरूर नहीं होगा क्योंकि वह बहुत दिमाग और [illegible] आदमी है. और इसके रहने से इलाका में गोलमाल उठने का डर है और जहां जायगा आपनी कु शिक्षा - प्रचार करेगा
Rev. L. Lakra

True copy of.

S.I. School Circle Chainpur

Dated 18th March 1936

यदि आप लोग २-३ साल के प्रचारकों का नाम से नाखुश हैं तो अच्छी बात आप उनको प्रचारक नाम से छुट्टी दीजिये। स्कूलों में मैं किसी तरह की गड़बड़ी नहीं देखता हूं। गांव वाले भी उनसे नाराज नहीं हैं। दो तीन आदमी गोहन से बिगड़े हैं सो उन्हीं आदमियों का कसूर है। आप लोग स्वयं गांव वालों को Enquiry जाकर कर सकते हैं। इस साल में गोहन को कहीं दूसरे स्कूलों में बदलने को सोचता हूं।

आपका शुभ—

Sd. Ch. Lakra

S.I. Schools

Chainpur

True Copy

तारीख 4. दिसम्बर सन १९३५ ई० को में इलाका पंच की बैठक हुई थी जिसमें निम्नलिखित मेम्बर हाजिर थे —

१) पादरी बाबू लौरेन्तियुस लकड़ा,
२) इग्नासियुस-लकड़ा,
३) बाबू-अबदियाह कुजूर
४) " युसफ-टोप्पो,
५) " खिस्तो कुंवार बड़ा,
६) " मसीहप्रकाश-मिंज
७) " सुलेमान-लकड़ा,
८) " इलियाजर टोप्पो,
९) " हाबिल बड़ा,
१०) " निनिटर — लौरेन्तियुस कुजूर,
११) " नैमन — टोप्पो —

२) चिरोडांड़ के बाबू जोहन मिंज मास्टर के बाबत! —
इलाका पंच मास्टर के बारे बहुत सोच विचार किई और यह संकल्प करते कि बाबू जोहन मिंज मास्टर कुरसांग लो० प्रैमरी स्कूल के मास्टरी के लिये बदली किया जाय और कुरसांग स्कूल का मास्टर आनन्द दास टोप्पो चिरोडांड़ स्कूल का चार्ज लेवे और स्कूल को आछी रीतों को चलावे अर्थात प्रचारक और मास्टर का काम दोनों करे

Rev. L. Lakra.
4-12-35

Sd.
Ignatius Lakra Secy
4-12-35

Sd. E. Toppo.
" इग्नासियुस लकड़ा।
" नैमन टोप्पो।
" युसफ-टोप्पो।
" मसीहप्रकाश-मिंज।
" कुंवार बड़ा,
" लौरेन्तियुस-कुजूर

A. Kujur.
मसीहप्रकाश-मिंज।

True Copy.

आज तारीख २४:१०:३५ को चिरोडांड में प्रचारकों का महीनवारी पंचैत बैठी थी जिसमें प्रचारक २५ और पादरी बाबू हाजिर थे— सभा में प्रचारक बाबू जोहन मिंज और चिरोडांड के अल्बानियुस मिंज के आपस का झगड़ा की बातें सफाई के लिये पेश हुई। बैठकी को चलाने के लिये सभापति मास्टर पाड़ी बाबू [illegible] चुने गये थे और सेक्रेटरी प्रचारक हरमसीह तिर्की चुने गये॥

सभापति की आज्ञा से :— प्रचारक जोहन मिंज चिरोडांड का इजहार

जोहन मिंज चिरोडांड :— मैं बहुधा रात के समय एक या दो नींद निन्द कर उठकर गांव में घुमा करता हूं और प्रतिदिन ऐसा ही करता हूं एक रात को मैं निन्द कर उठकर और हाथ में टोर्च लाईट पकड़ कर घूमने गया था- उसी रात को मैं अल्बिनियुस मिंज की माता को पाया। वह नंगी थी और खोईर के नजदीक एक कठहल गाछ को सलाम कर रही थी उस समय मैं बोला कि कौन हो और ऐसा रात के समय क्या करती हो तब वह मुझ को उत्तर दिई बेटा मैं हूं दिशा फिरने आई हूं। ऐसा सुन कर मैं वहां से आगे पार हो गया। थोड़ा दिन बीत जाने पर मैं एक दिन अपने स्कूल लड़कों को पढ़ाने के लिये स्कूल में जा रहा था- उस समय वह बुढ़िया मुझ को बोलने लगी कि यह मन डिवार टंगा के इस गांव में आया था [illegible] मोटा गया और दाल को ढिपा कर के चलता है। ऐसा आवाज सुन मैं उस बुढ़िया को कुछ नहीं बोला पर आगे ही अपने काम के लिये बढ़ा।

एक दिन की बात है कि कार्तिक अमावस के रात में मैं उस बुढ़िया को परखने के लिये उसके पास गया- रात सुनसान थी। मैं उसके पास पहुंचा और वह बोलने लगी बेटा! किस मतलब से आये हो कि कुछ काज सोचते हो। मैं उसको उस समय जवाब में कहा माता मैं गुणा सीखने के लिये आया हूं सो जो हो मुझ को आप कृपा से सिखा दीजिये। आपके लिये एक पिंधना और एक बर को कपड़ा दूंगा। यह सुन मुझ से बोली कि बेटा. इस बरस का समय तो बीत गया सो आने वाले बरस में तुम को इस गुण को सिखा दूंगी आज नहीं बनेगा। आगो कहने पर मैं चला गया। उस साल में चुप रह कर समय को बिताया जब दूसरे बरस आया तब उसके पास गया तो वह कहने लगी- कि बेटा कहे आये हो सो बताओ- तब मैं उसको बताने लगा कि माता- मैं बीती साल को याद करके गुणा सीखने आया हूं जो आप बरस भर के पहिले मुझ को आने के लिये कहा थी। तब वह याद किई और मुझ को कहने लगी कि बेटा मैं आप को वह गुणा सिखाऊंगी जिसको आप सीखने चाहते हैं- पर उसके लिये तुम क्या दोगे। वैसाही सीखना नहीं बनता है सो "मांग देओ" कि "कोरवं"। तब मैं यह सुन कर उसको कहा कि माता मैं इन दोनों में से एक को भी नहीं दे सकूंगा- क्योंकि मुझ को बड़ा कठिन जान पड़ रहा है। मेरी स्त्री दूसरी है सो मैं "मांग" नहीं दे सकूंगा और लड़का वाले के लिये भी मैं गरीब हूं। मेरा बेटा एक ही जन है सो "कोरवं" भी नहीं दे सकूंगा- सो मैं गुणा हो न नहीं सीखूंगा। यह कह मैं वहां से उठ कर चला गया॥

सभापति :— क्या तुम सच मुच गुणा सीखने के लिये उसके पास गया था?

जोहन मिंज :— मैं आकर गुणा से उसका गुणा कितना जांचा करके कह कर उसको परखने को गया था॥

सभापति :— जोहन बाबु क्या तुम सचमुच जान सकते हो कि गांव में डाईन लोग रहते हैं और कुछ कर भी सकते हैं ?

जोहन मिंज :— हां जी बाबु और क्या कहें एक दिन ऐसा हुआ कि बिरोडांड़ गांव में दो बहिन लड़ रहे थे। एक स्त्री दूसरी को पकड़ रहती थी मैं उनको समझाने गया तो एक स्त्री मुझ से बिगड़ गई और बहुत गाली देने लगी और श्राप देकर कहने लगी कि ए मास्टर तुम मुझको समझाने आये हो और गाली देते हो। जाओ मैं तुमको कहती हूं कि सवा महिना में देखोगे। तो मैं जो (जोहन) खिसा गया और उसको कहा कि देखो तुम मुझको क्यों सवा महिना कहते हो ज्यादा देखो मैं जो कहता हूं कि डेढ़ महिना में देखा जायगा। ऐसा कहकर मैं चला गया और ठीक डेढ़ महिना के बीतने पर वह स्त्री अपने दुःख से मर गई ॥

सभापति :— जोहन-इससे तो साफ मालुम होता है कि तुम खिसाहा हे और डाईन का विद्या जानते हो क्योंकि डेढ़ महिना के भीतर उस स्त्री को मार डाला ?

जोहन मिंज :— नहीं बाबु ऐसा तो मैं नहीं हूं पर जो लोग ईश्वर के लोगों को मार डालने चाहते हैं ईश्वर उन्हीं लोगों को मार डालता है ॥

जोहन मिंज का दूसरा इजहार :—

सभापति :— जोहन बाबु सुनने में आता है कि इस समय तुम खूब बिमार हुआ था और बिमार में बचने की आशा कहीं था क्या सचमुच ऐसा था— थोड़ा वर्णन करो तो ?

जोहन मिंज :— एक समय मैं खूब बिमार था और मेरे सेवा के लिये मेरे भाई लोग जो आये हुए थे और गांव के भाई बहिन लोग भी थे। उस समय मुझको थोड़ा भी बल सामर्थ नहीं था। मरने के समान मैं हो गया था। उस समय मेरा हालत ऐसा बुरा था कि बिछावन से भी उठ नहीं सकता था। उसी समय मैं एक रात दर्शन में देखा कि मेरे रहने के कोठरी के भीत के ऊपर चार जवानों को खड़े देखा और वे इस तरह खड़े थे। एक ही जन के कांधा पर दो जन खड़े थे और एक जन उनके ऊपर खड़े थे। यह तो पश्चिम तरफ के भीत का हाल था। पूर्व तरफ के भीत में भी देखा कि उस भीत पर एक जन खड़ा था— जिसका पांव घोड़े के पांव के समान, दांत हाथी के दांत के समान और सिर घोड़े के सिर के समान था। वह पीछे से चलकर मेरे बांया पांव के नजदीक आया और पकड़ने चाहता था, पर मैं यह देख अपना पांव जल्दी से खींच लिया और कहा कि मैं अपना पांव तुमको पकड़ने नहीं दूंगा— यह सब दर्शन था— जब मैं नींद से जाग गया तब वे सब के सब पश्चिम के भीत पास से उतर के भाग गये। उनके भागने पर एक चेतन को (तारा) घर में आया। उसका तेज इतना जोर था कि उसके चमक ज्योति के तेज से लालटेन का ज्योति काला हो गया। बाद में मुझको दो स्वर्ग दूत ने आके स्वर्ग ले गये। वहां मैं देखा कि ईश्वर को छोटे २ बालक स्वर्ग दूत और धर्मी लोग चांवर से चूक रहे थे। सभों का कपड़ा पाला— बिल्कुल सफेद था— और उस जगह अर्थात्- स्वर्ग में जितने लोग थे सब ईश्वर को महिमा गा रहे थे। ईश्वर के हाथ में एक बड़ी किताब थी जिसको खोला था और मुझको देखा— मेरा नाम भी देखा और मेरा नाम भी उसमें लिखा हुआ था पर ईश्वर ने दूतों से कहा— इस जन को बिना समय पूरे क्यों लाये हो ? इसको फिर अपने जगह में पहुंचा देओ। पर मुझको उस जगह से आने का मन नहीं करता था। उसी समय दूसरे और देखा कि नरक में दो जन डाले गये थे। उनको रोंआदार पिल्लू काटते थे। काटने से उनका जीभ बाहर निकला हुआ था। नरक में पानी को भी देखा— वह पानी गंधक और आग से डबकता था और उन के लिये पानी गंधक तक होता था। बाद में दूत लोग मुझको जुलाने के लिये ले गये और स्वर्ग के फाटक के पास

था- मेरा बांया हाथ के चौथे अंगुल को सुता से बांध कर नीचे गिरा दिये। मेरे गिरने के समय फाटक भी बन्द होगया। ज्योंही मैं चरखे पर पहुंचा त्योंही भाग गया और लोगों को रोते देखा- तब मैं कहा कि क्यों रोते हो- वे मुझको जवाब दिये कि तुम्हारे लिये रोते हैं सो तुम इतना देर तक कहां था, क्या हुआ था, बाद में मैं उनको कहा मारछा बाब मत रोओ. तब सब चुप हुए॥

सभापति की हुकुम से अन्तोनियुस मिंज का इजहार :—

सभापति :— अन्तोनियुस क्या तुम भी उसी समय हाजिर था और उसके बिमार के समय तोभी साहेब हुआ ?—

अन्तोनियुस मिंज :— मेरे समय का हाल भी देखने में तो आया बिलकुल उन्हों बतलाया गया है। जिस समय मैं था उसी समय ऐसा नहीं हुआ था- जैसा जोहन बर्णन करता है।

सभापति :— अन्तोनियुस तो तुम बर्णन करो कि उसके बिमार के समय कैसा हुआ—

अन्तोनियुस मिंज :— जिस समय जोहन प्रचारक बिमार था उस समय वह इतना कमजोर था- कि वह बैठ उठ न सकता था। उस समय उसके निजलोग भी देखने के लिये वास आये थे और गांव के स्त्री पुरुष भी वहां उसके घर में थे। उसी समय जोहन प्रचारक बाबु एक किताब को बराबर अपने साथ होकर रखता था- मैं नहीं जानता हूं कि वह क्या किताब था। लेकिन मैं तो जानता होता था कि वह उस किताब को अपने छाती ही पर रखता था और बराबर जब मन लगता था- वह पढ़ता था। एक दिन ऐसा हुआ कि वह तो बहुत कमजोर तो था ही उपर उसी किताब में से क्या मंत्र को पढ़ा और नराहु आ बाद मों उठ खड़ा हुआ और कहने लगा कि मैं इस गुरुप को सीखा- इसलिये मुझको बुझाकर रखो और मार्टिन को मारना चाहते हैं- सो उस समय मैं इन्हीं बातों को देखा और सुना॥

सभापति :— जोहन क्या तुम सचमुच डाइन आदि लोगों को पहिचानते हो ?

जोहन मिंज :— पादरी बाबु सब को एक ही प्रकार का गुरुपन होता है। सब के लिये ईश्वर बरदान बांट दिया है जिस से लोग पहिचाने जाते हैं॥

सभापति :— अच्छा हम को तो ऐसा विश्वास नहीं है बर्णन करो तो कि कैसे डाइन लोगों को पहिचानते और ठीक जानते हो ?—

जोहन मिंज :— मैं डाइन लोगों को अच्छा रीति से पहिचानता हूं और वे मुझ से छिप नहीं सकते हैं। डाइन लोग मच्छड़ और बिल्ली होकर बिमार आदमियों के पास आते हैं। मच्छड़ होने से बिमारियों के नाक और मुंह से घुस के कलेजों को निकालते हैं। बिल्ली होने से साफ वे पहिचाने जाते हैं कि वे कौन हैं॥

सभापति :— क्या तुम इसका सबूत दे सकते हो कि डाइन लोग बिल्ली होकर आते और तुम उनको जिस से पहिचानते हो ?—

जोहन मिंज :— मैंने अन्तोनियुस की माता- बेर बेर जब वह जीती थी मेरे घर में

(क) बिल्ली होके आती थी। और कोई एक बेर पकड़ा और गांव के नाई लोगों को भी बतलाया- कि अन्तोनियुस की माता डाइन है और बिल्ली होके मेरे पास आती है और लोग उसको गांव से भी निकाल दिये थे॥

(ख) कोन्डरा में एक समय मनमसीह पाड़ो आइन बिमार थी और मरने पर थी तो रोज रोज एक बिल्ली उनके घर में जाती थी। मनमसीह पाड़ो मुझे दवा बनाने के लिये ले गया तो बनाके रात को वहीं सो गया था- उसी रात में क्या देखा- कि एक बुढ़िया- बिल्ली का रूप धरके आई और पाड़ो आइन को नोकार आई और मैं उसे पहिचान के मारने चाहता था पर वह बिल्ली भाग गई। फजीर को मनमसीह पाड़ो को बताया कि वे हरायेल का एक बुढ़िया था जो रात को बिल्ली के रूप में आई हुई थी। मनमसीह पाड़ो बुढ़िया को बहुत गरियाया और उसी दिन से बन्द हो गया॥

अन्तोनिपूस का दूसरा इजहार सभापति की आज्ञा से :—

अन्तोनियूस :— एक बेर मैं जोहन के साथ का शरीर उर्बानुस रोया के घर गया था। जब कि उर्बानुस रोया बिमार था — दवाई बनाने के लिये शरीर में गये हम लोग गये उस समय उर्बानुस और उसका स्त्री हमों से अधिक तर बातें करते थे और वे डाइनों के विषय बातें करते थे। वे कहने लगे कि कौन है जो हमों को ऐसा कर रहे हैं। उर्बानुस पहिले से जोहन को संदेह से कहा था कि लोग मुझ से कहते हैं कि आप का जाई बहुरिया है डाइन है और वह आप को ऐसा कर रही है कहके कहा था। पर तो और उसने कहा सो क्या सच है कि झूठ है मैं नहीं कह सकता हूं। ~~कक~~ तब जोहन एक लकड़ी को जलाया और उसके लहर में क्या को देखने लगा मैं नहीं समझने सका। उस जलती लकड़ी के लहर को देखकर जोहन जान गया कि कौन डाइन ऐसा करता था — पर उनको उसने बताने नहीं चाहा लेकिन उर्बानुस और उसका स्त्री के गुलुम से कहा कि आपका जाई बहुरिया है। जोहन प्रचारक उर्बानुस का दवाई करने गया था। यह रात का समय था — और उस समय थोड़ा२ सोता था — नींद में गुलुम नहीं था — जागता ही था। वे बैठे रहे इतना ही मेरा कहना है कहकर अन्तोनियूस अपना कहना अन्त किया ——

प्रचारक जोहन मिंज :— से पूछा गया (सभापति से) कि क्यों वह ऐसा किया — जोहन :— लकड़ी तो देवदारु का मंगाया। सो मैं लकड़ी को जला कर लहर में रूप देखता था और मैं इसको यहां दवाई बनाने जाता हूं ऐसा करता हूं। उस लकड़ी को बराबर जब गुमला जाता हूं खरीद करता हूं कहके कि वह मुझ को बचाव का काम देता है। जब मैं वहां देवदारु का लकड़ी जलाया तो उस समय धूप और गन्धक भी जलाया और विचार भी किया और रूप भी देखा इतना ही मेरा कहना है कह वह अपना कहना अन्त किया ——

आखिरी बात :— महाडलों में देखा गया कि अनेक२ बातें चिरोडीह में होती है पर वह महाडली रिपोर्ट नहीं देता है जिनको कि रिपोर्ट देना बहुत जरूरी बात था। फिर महाडलों में इन बातों का देखा गया कि लोग बाड़दान नहीं लाते हैं। वे बतलाये कि प्रचारक हमों को नहीं चलाता है। बाड़दान के बाबत में जोहन को कहा गया कि क्यों यह ऐसा होता है तब उसने कहा कि लोग — पंच वाले इन दानों को रोक रखे हैं लेकिन देखा गया कि उसका — महीनवारी महाडली हिसाब में बाड़दान का भी हिसाब था ——

इन सब बातों का पूछपाछ कर सभा अन्त हुई —

Rev. L. Lakra,
Chairman Lutheran
Conference Kendra
P.O. Raidih
Dt. Ranchi.
14-10-35

Sd.
Harimasih Tirkey
Pracharak Barganw.
14-10-35

Most urgent letter.

Luthran compound
Kondra.
28-3-35.

Manyawar Secretary Saheb ko mera bahut 2 Yishusahay kushal mangal achha hai aur ap logon ka bhi yahi asha hai.

Age likhne ka bishesh karan yahi hai ki main 26-3-34 ko Jashpur Uparghat ke Keundpani ki girja ghar ke bishay likha parhi kiya tha uska kya hua aur honewala hai mujh ko malum nahin hai.

Abhi main ek chithi nathi kar bhej deta hun jisse ap logon ko khud malum hoga ki Keundpani ke Girja ghar ka halat kya hone wala hai Uske sath na kewal girja ghar ki nokshani par Pracharak bhi desh se nikala jayga.

Main 26-3-34 ko phin bhi True copy of Report Submitted by first Assistant Superintendent Dated 27-1-34 to the Superintendent Jashpur State:-

Ap logon ke pas bhej diya hun asha hai ap log phauran phirti Dank se mujhe khabar dijiye jisten Pracharak aur girja ghar ke upar hani na howe.

Phin State Superintendent ke pas phauran likhiye chahe hajir aiye jisten bura natija na hone pawe nahin to aj Keundpani ke upar yah huwa age phin dusre girja ghar men bhi aisa hi hoga -

Bhai bahin bahut byakul hain aur nana prakar ki baten bolte hain ki Lutheran Padri logon ka kuchh thikana nahin hai Roman log apne bhaiyon ko aur girja ghar ko achhitarah rakhte hain so mera dinta purbak arji hai bahut jaruri ke sath ki phauran phirti dank se mujh ko kul khabar dijiye jisten main girja ghar aur bhaiyon ko thik karne sakun.

Chahe jaldi se chitthi patehi State Superintendent ke pas aiye jisten golmal sant ho jawe.

Prem se ap logon ka
bishwasht sewak .
Sd/- Rev: L. Lakra.
Kondra.

Memo no:978/35/F.-5.
Dated Ranchi, the 1st. April, 1935.

The Kondra pastor's letter re: Keundpani chapel in Jashpur forwarded in original to Rev: M. Kerschis, Chairman, Church Council, for favour of immediate attention and action.

[signature]
Secretary,
G.E.L. Church.

P.T.O.

True copy.

Keundpani
ta:27.

Manyawar Padri Babu ko mera Yishusahay -

Age ap ko main janata hun Keundpani mandali ka girja ghar ke bare men phir garbar utha hai ki ek sipahi nagar se ake manah kar gaya ki tum log aj tarikh se is ghar men girja mat karo yah ghar ab tum logon ka koi hak nahin hai yah sarkari ghar ho gaya so manyawar Babu is men hamon ko koi upai nahin dikhai deta hai ki kya karenge. Bhai log bhi is men dara rahe hain ki hukum na manne se kya hoga kya jane State ke barkhilap hoga phir bhi ki pahile ke yane bitesal ke gol mal men ka bat kya hua kya nahin so bhi hamon ko malum nahin hai so Babu ham logon ko ab ki Atwar girja ghar men girja baithna moshkil hai so ap is ka upai himon ko dikhaiye.

Li: William Ekka.
Pracharak.

शिमोन बेक का दरखास्त C.C. को लौटा दिया गया है
Rev. L.L.

Luth Cong[?] Kondra
Dated the 31 July 1934

CHOTANAGPUR CENTRAL CHRISTIAN CO-OPERATIVE BANK LD.

मान्यवर सेक्रेटरी साहेब को यीशु सहाय ।

आप को इन कागजों को देख कर मालूम होगा कि शिमोन बेक किस मतलब से आप लोगों के पास लिखा था ॥

मूल कारण :— ९वीं दिसम्बर १९३३ को वह ७वीं आज्ञा को भंग करने से व्यभिचार के पाप में गिर गया और २० वीं दिसम्बर १९३३ को वह मण्डली सभा के इलाका पंच की सलाह से प्रचारक, और इलाका पंच के मेम्बर से निकाला गया है और उसके बदले एक नया प्रचारक रखा गया है ॥

अजी तो वह बिलकुल न लायक और मण्डली को ठोकर + धूरा का काम कर चुका है जो सोच और विचार से बाहर मालूम होता है ।

अजी वह फिर एक नये प्रकार के पाप में गिर गया है अर्थात एक रीति का दूसरा स्त्री से व्यभिचार के पाप में गिर गया जो ३.७.३४ को प्रचारक पंच को और [illegible] की बैठकों में साबित हो गया है जिसमें मैं भी हाजिर था और उसका नोटिस भी तैयार किया गया है पर अभी वह इलाका पंच में नहीं आया है । इलाका पंच में आने से आप लोगों के पास उसका नोटिस फैसला की लिपि भेज दिया जायगा —

सो इन सब बातों से आपको स्पष्ट मालूम होगा कि शिमोन का जीवन कैसा है और पहिले था जो लिखा हुआ था —

आगे क्या लिखूं आप लोग खुद सोच विचार कर शिमोन के दरखास्त को मेरे और इलाका पंच की बातों को देख भाल कर उचित विचार कर लेंगे ।

आप लोगों का विश्वस्त.
सेवक —
पादरी बाबू लोरेन्तियुस लकड़ा
कोन्डरा ·
३१वीं जुलाई १९३४ ·

Church Council
Received 6-8-34
Register No. 227
Date........
File.... 5
Reply No........
Date........

मान्यवर सेक्रेटरी साहेब,

मैं आपका भेजा हुआ शिमोन बेक, के दरखास्त का फैसला जो इलाका पंच को C.C. से कोन्डरा में भेजा गया था सो इलाका का फैसला लिख भेजता हूं :—

कोन्डरा इलाका पंच की बैठकी २.५.३४ को बैठी थी जिसमें प्रायः सब इलाका मेम्बर और दो मिनिस्टर थे जिसमें सब जमा २७ मेम्बर हाज़िर थे ॥

१, मलाकी बाबू का दरखास्त (शिमोन बेक का बेटा) :— २.१.३४ + १.३.३४ जो चार्च कौंसिल से लौटाया गया है दोनों इलाका पंच के सामने पढ़े गई जिसको इलाका पंच बहुत सोच विचार कर यह पाई कि पिता + पुत्र की बातें समान होती हैं जिसको लिये वह माफ किये जाने का योग्यता पूर्वक अर्ज करता है और एक माफी नामा निम्न में लिख देता है जो नीचे लिखे गये हैं :—

मलाकी बेक :— मैं मलाकी बेक आज तारीख २.५.३४ को कोन्डरा इलाका पंच की बैठकी में हाज़िर होकर अपना दरखास्त जो ८ जनवरी १९३४ को कोन्डरा इलाका में पेश किया था, उसमें जो कुछ भूल चूक जो पंचों के विरुद्ध बातों का घात से चोट पहुंचाया जिसके कारण से मैं दोनों हाथों जोड़ कर इस्तेदार कर क्षमा मांगता हूं जो अपने बाप के दरखास्त पर जिसको वे चार्च कौंसिल में पेश किये थे उसमें जितना बातों में उसके साथ राय सलाह देकर उसके दोष में शामिल हुआ उसके लिये भी मैं दीनहीन हो हाथ में जोड़कर जो इस्तेदार कर क्षमा मांगता हूं जो आगे इकरार करता हूं कि मैं आगे ऐसा बात को लिखा कर दरखास्त जो कि दूसरों को चोट पहुंचे न करूंगा न लिखूंगा ॥

आप लोगों का दीन ताबेदार
Christo Dan Malaki Beck
2/5/34.

२, शिमोन बेक और उसके दरखास्तों के विषय जो चार्च कौंसिल से आया था और जसपुर राज्य रियासत के बारे में जो कागज़ इलाका के सामने दायर हुए और सब पंचों के सामने पढ़े गये, इलाका पंच सोच विचार कर यह पाई कि यह बातें केवल एक लंद फंद की बातें हैं और एक दूसरे को गिराने के नियत से यह किया गया है !— शिमोन बेक उसके लिये माफी मांगता है और एक माफी कागज़ लिख देता है जो निम्न लिखित है !—

शिमोन बेक :— मैं शिमोन बेक, आज २.५.३४ को कोन्डरा इलाका पंच की बैठकी में हाज़िर हुआ जो अपने दरखास्त जो चार्च कौंसिल को पेश किया था जिसमें अनेकों दोष पादरी बाबू को इलाका पंचों को दोष मत लगाया था जो स्टेट राज्य रियासत में जो झूठा इलज़ाम दिया था अपने भलाई साधने के लिये, जिसके कारण से आज मैं पछता कर जो मन फिरा कर अपना दोनों हाथ जोड़ कर पंचों के सामने अपना कुसूर मान लेता हूं जो क्षमा मांगता हूं और करार करता हूं कि आगे मैं इस कदर का लिखा पढ़ी जो झूठा बात कभी न करूंगा ॥

शिमोन बेक बरगांव २ ५/३४

संक्षेप :— इलाका पंच शिमोन को माफी करता है और हिदायत करता है कि आइन्दे फिर ऐसा न करे कि जिसमें महाडली को पंच के ऊपर चोट लगे। और शिमोन बेक को २०.४.३४ को [illegible] [illegible] दरखास्त की बातें मुलतवी रहती है।

Rev. L. Lakra
31-7-34

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G.E.L.CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM
PURN CHURCH COUNCIL KI KARYYAKARAK SABHA KI BAITHKI.
Ta:7 November, 1934.

-----------oOo-----------

4. SIMON BEK - JASHPUR.

Darkhast parha gaya - Yah darkhast Ilake ko bhej diya jay ki Ilaka is bishay par apni ray dewe ki kis prakar se ab tak mandali grahan nahin ho saka hai aur Simon ke sambandh men kya roktok hai aur Ilake se usko kaise us prakar ka notice diya gaya jiska nakal yahan bheja gaya hai.

Memo no:605/34/F.-5.

Dated Ranchi, the 9th.November, 1934.

Extract copy from the Minutes of the Church Council Executive of 7th.November, 1934 forwarded to the Rev: Laurentius Lakra, Lutheran compound, Kondra, for information, guidance and compliance.

[signature]

Secretary.

Church Council
Received 12.3.34
Register No. 754 / 8.3.34
Date
File S.
Reply No.
Date

कोन्डरा, ८, ३.३४.

मान्यवर सेक्रेटेरी. साहेब को मेरा बहुत २. यीशुसहाय । कुशल मंगल मेरा प्रभु की अपार कृपा से अच्छा है है और आप लोगों को भी यही आशा है ।

[आगे आप को खबर देना मेरा यह है कि अभी शिमोन प्रचारक बरगांव का मुकदमा अभी वहीं चल रहा है. पहिले आप को खबर दिये हैं कि किस प्रकार से एक स्त्री से व्यभिचार में गिरने से मण्डली से निकाला गया और प्रचारक के काम से उसको छुट्टी मिला है. मैं सोचा था कि वह अपने दोष और मण्डली भीतर के लिये और अपने बेटे की शादी के लिये आप लोगों के पास दरखास्त लिखेगा पर अभी तक उसका पता नहीं है.। मेरा विचार है कि उसका मण्डली भीतर होना कठिन है क्योंकि वह छोटी सजा से बड़ी सजा पाने के ऐसा हो आ रहा है क्योंकि अभी सुनने में आ रहा है कि वह एक रौतीआइन जनाना से व्यभिचार में पकड़ा जा रहा है जिसको रौतिया लोग पकड़ लिये है पर अभी वही फैसला वे लोग मुकाम नहीं सुनाये हैं: रौतीया लोगों का भी विचार है कि इसी बात का फैसला करके हम लोगों को

भी खबर सुनावेंगे. ओ आगे जैसा होगा आप लोगों को सुनाऊंगा, श्रिमोन प्रचारक आगे हम इलाका पंचों को और खास कर के मुझ को निहायत ही खिसा रहा है कि जब मौका आवे हम लोगों को निगल जाय, आगे ईश्वर पिता उस को + हमों का न्याय कारका आपही है ॥.

II. मैं अपने काम करते २ जब नगर गया 28. फरवारी को तो २५ नगर में सक्रामेन्ट का काम किया, २६ २/४ को सुपरिटेन्डेन्ट जसपुर से मुलाकात करने गया तो सुपरिटेन्डेन्ट के मुंह से बातचीत करते यह खबर मिला कि जसपुर रेयासत में बलवा उठने पर है और उस बलवे के उतपन्न करने वाले खास करके आप के लूथेरान खिस्तान लोग हैं। तो इन बातों को सुनके से मुझे बड़ा ताजुब लगा और मैं साहेब से कहा कि इन बातों में मैं बिल-कुल अनजान हूं, सबसे पहिली बार आप के मुख से सुन रहा हूं: बिजली की नाई आप के मुख से सुन रहा हूं: सुपरिटेन्डेन्ट साहेब मुझको बतलाये कि ...जो आबादियह कुसुर इचकेला में आपने गाईयों के साथ जसपुर राज्य रेआसत के विषय पंचैत किया. और लोगों को उस्काया है और उनके साथ और ४ गाईयों का नाम भी बताये।

सुपरिटेन्डेन्ट साहेब मुझको बोले कि वे पंचैत करके गवर्नर साहेब के पास दरखास्त पेश करने गये थे बोलेंग के पास।

साहेब की बातों को सुनके बहुत ताजुब लगा और उससे कहा कि मैं तो इससे जानता भी नहीं हूं तो आपको आ जवाब देऊंगा. तो

बोले कि मैं निश्चयता से आप को कहता हूं कि राज्य रेयासत की बैठकी इचकेला में हुई है सो आप अपने लूथेरान भाईयों को समझाईये क्योंकि यदि यही बातें बढ़ जायेगी तो देखिये पहिले छिलगालान में आपके लूथेरान आवेथे और अबकी भी आपके लूथेरान ही लोग होरहे हैं तो यह आप लोगों के लिये बहुत अफसोस हैं।

यही बातों से आजकल मेरा मन इतना और व्याकुल है कि मुझको कुछ भी चैन नहीं है। नगर से लौट के मैं बहुत तदारुक में लगा हूं पर कुछ पता नहीं चलता है कि लूथेरान लोग इसी बात के अगुवे हैं। इचकेला में आबादियाह कुसुर २२, २२/३३ को मिटिंग बैठाया था पर वह कहता है कि हमलोग स्कूल की मिटिंग बैठे थे। आजकल सैर तरफ से इसी बात की सख्त जांच हो रही है और रोज २ बुलाये जाके पूछे जारहे हैं। यही बातें आजकल दब गई है और जिससे पता भी नहीं चलरहा है कि गोलमाल करने वाले कौन हैं। समूचे राज्य में इसी बात की (मालगुजारी-खरचरी) की बातें सुनाई तो दे रही है सब जात के लोगों के

मुंह से पर इसी बात का सुरु करने वाला कौन है जरा भी पता नहीं लग रहा है।

इसी गोलमाल के मगुवे यदि हमारे ही खयेरान लोग होंगे तो यह हम लोगों के लिये बहुत अफसोस का कारण है। मैं इन सब बातों को जानता भी नहीं हूं और लोग इससे एक जरा भी नहीं बतलाये कि क्या होने वाला है,

आपको खूद मालूम है कि जसपुर राज्य के लोग में खिस्तान सहित कैसे चलाक और होसियार हैं। मराडली विषयक दरखास्त, आमेरिकन मिशन जाने, भोरेनोमी में नहीं रहने आदि किसीम २ के दरखास्त आपके दफ्तर में पहुंचे भी है मेरे आने के पहिले ही से। फिर बीते महासभा के समय भी जसपुर से एक दरखास्त रांची पहुंचा है था मेरे सही भी सलाह बिना और फिर मैं जानता भी नहीं हूं कि उसमें क्या लिखा था लोग केवल मुझ को सही करवाते थे तो मैं नहीं किया और दरखास्त लौट गया,

ऐसा ही और तर कोई किसिम की बातें और भी होती होंगी जो मुझको मालुम नहीं होता है जैसा इसी समय का उलगुलान जो उठने पर है- ये आपीन चलाकी से मुझको नहीं बतलाये और राय आदि से मुझको नहीं बतलाये और राय आदि मैं साहेब का कहनी परवाह नहीं किये। मैं साहेब से आखीर में बोला कि देखिये आप समूचे

जसपुर राज्य के छोटे बड़े मैं, संसार, हिन्दु
मुसलमान औ खिृस्तान लोगों के मालिक हैं
आप को ध्यान सहित जांच करना होगा, क्योंकि
बैठे उलेगुलान को आप जानते हैं कि राय सलाह
देने वाले रोमन लोग थे तौभी पीछे रहे और
लूथरानों के ऊपर गया क्योंकि उनके पास कोई
सपूत नहीं हैं, और लूथरानों के चलाने वाले
बाहर में रहते हैं इसलिये तुरन्त दोष लूथरानों
के ऊपर चला गया। इसके लिये आप कह रहे
हैं कि गोस्सनर के अगुवे लूथरान लोग हैं क्योंकि
उनके अगुवे जसपुर में नहीं रहते हैं। सैद यदि
कोई एक देहाती पादरी जो जसपुर में रहता तो
ऐसा नहीं होता, क्योंकि यह बात चली आ रही
है कि जो सामर्थी है उससे दोष नहीं लगता पर
जो बेचारे हैं उन्हीं के ऊपर दोष आता है।

आज कल दनादन रेट से जांच
हो रही है मैं आप को खबर देते जाऊंगा
कि क्या होती जा रही है। मैं भी भीतर २
जांच करते जा रहा हूं कि असली बातें क्या
है ऐसा न हो कि रोमन प्रचारक लंदफंद
की बातें उड़ा रहा है।

भूल चूक माफ कीजिये
आपका विश्वस्त सेवक
Rev. L. Lakra
Kondra

OFFICE OF THE COUNCIL OF THE G.E.L. CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM.
PURN CHURCH COUNCIL KI BAITHKI KA KARYYABIBRAN.
Ta:22 September, 1933.

-----------oOo-----------

18. KHRISTIYAN HANRIYA DUKANDAR.

Kondra ke Ilake Chairman ne ~~xx~~ samachar diya ~~hax~~ hai ki Sursang ke kisi bhai ne wahan par hanriya ki dukan ke liye license leke hanriya bech raha hai so uske sath men mandali ka kaisa byawahar hona chahiye. Bahut soch bichar karne par dekha gaya ki khristiyanon ke bich men aise kam ke liye anumati dena nihayat buri hogi jab mandali matwalpan ko rokne ke liye bishesh agya deti hai.

SANKALP: Kondra Ilake Panch ko likha jay ki wah Sursang ke us bhai ko ek do mahina ka samay thahrake chitapan dewen ki wah us samay tak us dukan ko chhor dewe aur aise kam se alag rahe. Yadi yah chitapan nishphal thahre to usko mandali dand diya jay.

Memo No: 343/33/G-5

Dated Ranchi, the 3rd. September, 1933.

Extract copy from the Minutes of the Church Council of 22nd. September 1933 forwarded to the Rev: Laurentius Lakra, Lutheran compound, Kondra, for information, guidance and compliance.

[signature]

Secretary,
G.E.L. Church.

OFFICE OF THE SECRETARY LUTHERAN CHURCH COUNCIL CHOTANAGPUR & ASSAM.
PURN CHURCH COUNCIL KI BAITHKIYON KA KARYYABIBRAN.
Ta: 4 October, 1932.
----------oOo----------

6. KONDRA ILAKA SABHAPATI KA SAMJHAUTA.

Padri Juel Lakra bite jeth men Kondra gaye the us samay Ilaka ke sambandh men kitni asantoshjanak bat batai gai thin jab ki Padri ap anupasthit the. Is par padri ki ray mangi gai thi. Isi par apne jo apni saphai ka britant likha hai so parha gaya.-

SANKALP: Ki Padri Laurentius Lakra ka spasht kaiphiyat dekha gaya aur wah grahan yogy aur santoshjanak paya gaya so Council use sahars grahan karti hai.

Memo no. 758/32.
F.- 5.
Dated Ranchi, the 5th. October, 1932.

Extract copy fromthe Minutes of the full Church Council of 4th. October, 1932 forwarded to the Rev: Laurentius Lakra, Lutheran Church, Kondra, for information.

Secretary,
G. E. L. Church

Church Council
Received 19.9.32
Register No. 264.
Date 15.8.32.
File 5.
Reply No.........
Date.........

19/9/32

Lutheran Compound
Kondra. 15. 8. 32.

मान्यवर. सेक्रेटरी साहिब को मेरा बहुत२ यीशु सहाय।

आगे मैं आपके चिट्ठी 30th, june 32. का थोड़ा जवाब आप के आज्ञानुसार लिख भेजता हूं। मैं अफसोस करता हूं कि उस समय जब लकड़ा साहेब आये हाजिर नहीं रह सका अपने घर के काम से औ अनजान से।

यही इलाका रिपोर्ट जो दिया गया है सो इलाका के मेम्बरों का कोई साधारण भाई का नहीं है पर एक विशेष आदमी का है जिससे आप लोग हमारे नीचे दिये हुए जवाबों से आप लोगों को मालुम होगा कि इलाका काम कैसा है और उस आदमी का रिपोर्ट क्या है।

१:– आत्म पालन के लिये विशेष प्रबन्ध :– इलाका पंच के मेम्बर और प्रचारक और साधारण भाई लोग बहिन लोग मिलके गांव २ पंचैत करते औ भाई बहिनों को समझाते औ पंचों को स्थिर करते हैं जो २६. २. ३२. से सुरू हुआ।

२१–१८. २. ३२– सुरसांग में आदि.

1– 3. 3. 32– हाथा मांड़ी आदि

2– 4– 4– 32– के उन्द पानी आदि.

14–16– 3. 32– कोन्दरा और आत्मा प्रचारकपन.

6. 5– 32 – कोनकेल (बिमारी से तारिख अनुसार हाजिर नहीं हुआ और पीछे प्रोग्राम बन्द हुआ.

I पीछे पानी के गिरने और खेती बारी बुनने के कारण. जुम२ के पंचैत करना बन्द हुआ है पर तौभी पादरी + वहीं के प्रचारक मिल के और यदि मौका हो तो इलाका पंच के मेम्बर के साथ प्राय: जहां २ मेरा घुमना हो रहा है दिन को रात पंच बनाना और लोगों को समझाना है। फिर लोगों को उसकाते हैं कि स्वापालन के लिये जैसा बने नया उपाय निकालें और जहां बनता है वहां लाह के गाछों को रोपते औ लगाते हैं जिससे आनेवाले दिनों को कुछ मदद हो प्राय: दो तीन प्रचारकपन में मिलके प्राय: २००. तक लाह गाछ आदी का लगाने का सुरू किये हैं और लोगों को उसकाते हैं कि वे आगे इसको हिफाजत करे।

II इलाका बैठकी:– January – May 26-5-32. तक.

I 13. 1– 32: इलाका पंच.

II 28. 1– 32: इलाका पंच बाद आम सभा.

III 15– 3. 32. – इलाका पंच.

केवल तीन बार बैठी और बेशी काम घुम २ के प्रचारकपन में भाई बहिनों को समझाने में बिताई।

III इलाका कार्य कारिणी January – may 26. 5– 32. तक.

December – 17-12-31- School के लिये.

13-1-32. इलाका + कार्य कारिणी + प्रचारकों की सामिलात बैठकी

29. 2–32 — इलाका कार्य कारिणी – – .

कार्यकारिणी की बैठकों में और अधिक होते नहीं सका कहकी महीनवारी पंचैत में देहात में होता था ॥.

IV महीनवारी पंचैत :— January — may.

13. 1- 32 — 12 प्रचारक हाजिर थे।
16. 2- 32 — 7 " "
15- 3. 32 — 12 " " "
11 — 5 - 32 9. + 1 = 10. " "

आप लोगों को मालूम हो की मेरे इलाके में सब प्रचारक पन. 20 हैं जो 5 मास्टरों से और 15. प्रचारकों से जिसमें भी कै एक रोक टोक के कारण कोई हाजिर नहीं होते और मास्टर लोग स्कूल के कारण ठीक ठहराये पंचैत में हाजिर नहीं होते और इन साल खास करके प्रचारक लोग गैरहाजिर होते थे ताप के कारण।

V सेन्ट्रालिजेसन :— सेन्ट्रालिजेसन देश की घटती को दर भाव के गिर जाने से कच्चा है और जैसा होना चाहिये नहीं होता है हरएक कलीसिया आमदनी पर जीवन काटते हैं ॥.

VI देहात घुमना :— यह मेरे शक्ति भर होता है महीना में यदि कोई रोक टोक न हो तीन हप्ता देहात में रहते और एक हप्ता घर में रहते हैं — पर एतवार को नहीं।.

आगे मेरा भूल चूक माफ किया जाय यदि कोई किसिम की गलती होय और आप इस जबाब से देख सकते हैं कि मेरा काम कैसा है।

आप लोगों का बिश्वस्त दास.
लौरेन्तियुस ककड़ा कोन्डरा.

OFFICE OF THE SECRETARY LUTHERAN CHURCH COUNCIL CHOTANAGPUR & ASSAM
KARYYAKARAK SABHA KI BAITHKI KA MANTABYA.
Ta: 22 June, 1932
---------oOo---------

5. PADRI X JUEL LAKRA KA KONDRA REPORT.

Padri Juel Lakra ka report jise apne Kondra jake Council ke liye bheja so parha gaya. Jis samay padri Juel Lakra gaye huwe the us samay men sthani padri wahan nahin the aur is karan wahan ke sambandh men kitni aisi baten report men hai jin par bishesh dhyan aur bichar karna hai. Par pahile un bish ayon par padri ka bichar bhi sunna chahiye.

SANKALP: Ki Padri Juel Lakra ke report ka ek nakal padri Laurentius Lakra ko bhej diya jay jisten ukt report par wah apni ray pragat kar Council ko sab hal janawe.

Memo No. 313. /32.
F. -5.
Dated Ranchi, the 30th. June, 1932.

Extract copy from the Minutes of the Church Council Executive of 22nd. June, 1932 forwarded to Rev: L. Lakra. for information, guidance and compliance.

Church Council
Received 21.6.32
Register No. 89
Date 26.5.32
File S.
Reply No.
Date

ओरछा हलाका

२८-५-३२

१. मुआयना हुआ - उपदेशकों का काम -

२. हाजिरी - ओरछा - १३
मूलकोट - ६
नितकोट - २४
सिनकमाली - ~~[illegible]~~
असमुल्गोत्रकोत - ६
डिगनारोली - ९ ५३
६९

३. हलाका रिपोर्ट - कोई विशेष प्रबन्ध आत्मिक जीवन
के लिये नहीं हुआ है। जानकारी से हलाका बैठकों
[illegible] नहीं हुई है। पर [illegible] महीने
में बैठकें होती - ओरछा प्रचारक [illegible]
बहुत [illegible] हो रहा है। सेक्रेटरी [illegible]
[illegible] नहीं हुआ है। इस लिये अनु-
मान का हल [illegible] लगाया नहीं जाता है।
स्कूल के लिये कुछ नहीं किया जाता है।
ऐसा ही [illegible] के लिये भी कुछ नहीं
किया जाता है। कर्मचारी लोगों का
[illegible] संचालन नहीं होता है। बल्कि और
प्रचारक [illegible] आमदनी से जो देते हैं।
[illegible] में [illegible] मासिक [illegible] है।
[illegible] प्रचारक [illegible] है। पर कुछ [illegible] है। [illegible]

छः दिनें (म) ताना और भिजाई प्राय (प) और
दूसरे आमदनी (फ) है। मजदूरों के (म) नहीं
तहसील होता है। प्रायः ४० का हिसाब आता है।
दूसरी मजदूरियां में भी बैठते हैं। लेकिन वाहन
का हिसाब मुताबिक आते हैं नहीं - और प्रायः
लोग कहते हैं कि आजकी आमदनी से
सिवा नहीं मिलती।

इलाका पंच की कार्यकारिणी उत्साहपूर्वक
काम नहीं करती है - लगभग टूट गई है।
चावल को आसपास में वहां नहीं हो सकता है इसलिए
होना मुश्किल है।

निरीक्षकों की रिपोर्ट:-

निरीक्षक के लिये एक प्रचारक का ध्यान जाता है।
प्रचारक कहते हैं कि सिर्फ बता दिया जायगा - ऐसा होता
जाता है। मालूम नहीं जाता है।

सोनकेला

सोनकेला के बाहर ... हो गया है।

संगठन के विषय:-

(१) प्रचार(कार्यकर्ता) संघ:-

काम -

(क) महीना में एक बार बैठक (आमसभा) हो,

(ख) हर एक बैठक का ... ठीक
किया जाय

(ग) रचनात्मक हिसाब रखना।

(घ) रचनात्मक कार्यक्रम हर महीना
... के समय मजदूरों को
... देना

(९) अदालतों से [illegible] वकीलों को
हटवाना [illegible]।

(१०) अपराधों में [illegible] बिना स्वार्थ के
[illegible] [illegible] [illegible] है।

(११) [illegible] [illegible] [illegible]।

घड़ी सिली: २५

नियम -

(१) घड़ी सिली हमेशा [illegible] -

(२) घड़ी सिली [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] जावे।

(३) घड़ी सिली [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]।

(४) घड़ी सिली [illegible] के [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible], [illegible] जाय।

(५) घड़ी सिली [illegible] [illegible]।

प्रस्ताव के साथ [illegible] [illegible] हूं -

Submitted [illegible]

[illegible] [illegible]
26/5/32
[illegible]

82

Kondra

18. 1. 32.

BM 25/1/32

Manyawar Secretary Sahib ko Yishusahay dated 26.10.31 ko No. 71. ko Mangal + Barpani school ko Jaspur State men dene ko likha parhi kiya thā uske liye ap log kya kar rahe hain So aj main yah Remainder p[illegible]in Abhi likhta hun ki Sighar in Schoolon ke bishay likha parhi State se kijiye jisten hame logon ke mandli men kuchh achha aandolan hone sake aur mandli achhi riti se chale chahe aur iske liye kya kiya jay likha parhi kijiye.

Church Council
Received... 25.1.32
Register No. 633
Date 18.1.32
File 5
Rep[illegible] No...........
Date...................

Rev. L. Lakra

Kondra

Church
Received 28. 10. 31
Register No. 468
Date 26. 10. 31
File 5.
Reply No.
Date

Luthran Compound
Kondra. 26.10.31

Manyawar Secretary Sahib ko mera bahut 2 yishusahay.

Idhar mandli ka hal samachar achha hai par apshwch sahit ap ko kewal (private) likhna hai ki Jaspur uper ghat men golmal sant nahin hota aur samay samay par uthta hi rahta hai. Jaspur uper ghat men golmal karne wala to hai Abadiyah master Ichkila. Jo samay 2 par bhai bahinon ko uskata & Padri & council ke beirodh & autonomy ke ~~beirod~~ beirodh halla uthata hai.
Abhi uper ghat ke log acha hi karen hain ki kale station ki liye jagah liya jayga & sale Intijam kiya jayga.
Abhi uper ghat men ek school Ichkila men hai par tau bhi wah girne ke aisa hai. Ichkila school men larke log parhne nahin chahte hain kyonki Abadiyah master larkon ko bahut pitta hai aur school karne ka thikana nahin hai.
Apshwch sahit likhna hai ki usko janta hun tau bhi master ko badli karna mujhko muskil hota hai kyonki usi ~~ke~~ Abadiyah master ke ghar men school hota hai aur wah us ghar se badli hone se bhi nahin uthagega.
~~So~~ kya upay kiya jayga mujhko malum

nahin hota hai. So ap iske liye kuchh upay sochiye aur mujh ko khabar dijiye. Iske vaste uper ghat Jarper men kabhi Saltanat nahin hoga aur koi Padri ake Saltanat se yanhan kam nahin kar sakega. Khair mere uper to koi mere jante lehar dosh abhi tak nahin dikhaya hai par purane padri log isi admi ke samne bekuchh the aur ~~Lheth~~ Luchcha the jisko sun 2 ke mera man bahut apshoch karta hai kabhi C.C ke memberon ka ninda, kabhi Autonomy ka ninda jo mujh ko saha nahin jata hai. Yahi admi yadi upper ghat Jarpur men rahega to har samay aisahi golmal hota rahega aur log kabhi R.M.S. kabhi Jermini sahab aur adi aur kai mission ka batchit karenge.

So ap isi bat ko soch bichar kar mujh ko khabar dijiye ki isi admi ke uper kya kiya jayga & kaise school se chhutti karenge & school kaisa usi ke ghar men kiya jayga.

Prem se apka

Rev Lawrence Lal

Church Council
Received 1. 9. 31
Register No. 305.
Date 29. 8. 31.
File 5.
Reply No. ....
Date ....

Grant question may be revised.

No / 56 meeting ~~in Full CC~~ BH.

BH 1/9/31

BH 14/9/31.

Manyawar Church Council ko mera bahut 2 yishusahay.

Main ap logon ka bheja huwa 12 August ka Sanklap ko paya aur iska jabap men yahi likhta hun ki jaspur uper ghat ka golmal sant abhi huwa so kaha nahin ja sakta hai. Yanhan ke bhai & karamchari log ap logon ki shanti may baton par ashrit hain jisko ap log dekhkila Panchait men bole. Main asha karta hun ki sab golmal sant hoga yadi yanhan uper ghat jasper men:—

I School ka achhi riti se baithaya jana.
II mission station ka banaya jana.
III C.C. se uper ghat & nich ghat ka barabar rup se dekhna.

Yahi Talap tankhah ki baten jo uper ghat & nich ghat men hota hai bar bar mere mahinawari Panchait men nikalti hai aur Pracharak log mujh se ashantush rahte hain.

Yahi golmal jo hoti hai khas karke karamchariyon se. Main unko bahut samjhata hun aur unko apni bat men jane nahin deta hun to we log milke dehat men golmal karne lagte aur sirni adi ko band karwate hain.

Isliye ap logon se mera Binay purbak araj yahi hai ki school adi ka thora uper ghat men thik se bandobast kijiye, abhi hal men 2 school naya chalta hai aur 1 school phir kholne par hun.

Phir station adi ke liye sighar jaisa bane ap log koshish kijiye, main bhi ilaka men yadi jagah thik hoga to bhai bahinon se koshis karunga.

Age Rupaiya paisa ka jiske liye Pracharak log kurkurate hain. Uper ghat & nich ghat men kuchh samanta kijiye yadi banta hai aur kuchh adhik grant barhane ka koshish kijiye

Prem se ap logon ka sewak

Rev Laurentius Lal

Kond ~~64~~

29. 8. 31

G.E.L. Church Compound
Ranchi.
The 19th. June, 1931.

No. 79/31.
F.- 5.

Dear Bishop,

and Konkel
Your letter regarding Kuladuba/people received. Thanks! I know that your Kinkel pastor gave due notice to our Lutheran pastor of Kondra and the same was intimated to me as well Once the people break away and receive encouragement for reception in another community no amount of good-will shown them will make them change their hearts. They will simply wait for the time bar given them by your pastors.

I wonder that your Padre feels so much for those men when they are pressing him hard to have them received. It is good that the people should feel that they are being left out in the cold between the two Missions for unless they feel so they will never return to their own fold. But you are standing on the way. We do not leave people in an abondoned condition. It appears that you feel more for our such people than we ourselves do. But it is no wonder that your Padre moves about more freely amongst our congregations than he does amongst non-Christians.

As for such disaffected people we would request you to keep hands off and if in spite of our request you decide to take them we have nothing to say.

Yours sincerely,

[signature]

The Bishop of Chotanagpur,
S.P.G. Compound,
Ranchi.

Executive

Herewith the Bishop's letter & my draft reply thereto. It is for your opinion & suggestions, if any.

Botany [illegible]

Please see suggestion for change by me and Mr S.L. in the last para.

Bm.

18/6/31

Mr. Latin's change at the close seems to me more adequate. A.P. 18.6.31.

Draft for approval

G. E. L. Compound
Ranchi
19th June 1931.

~~To,
The Bishop of Chotanagpur,
R A N C H I.~~

Dear Bishop,

Your letter regarding Kuladuba and Konkel people received. Thanks! I know that your Kinkel pastor gave due notice to our Lutheran pastor of Kondra and the same was intimated to me as well. Once the people break away and received encouragement for reception in another community no amount of good-will shown them will make them change their hearts. They will simply wait for the time bar given them by your pastors.

I wonder that your Padre feels so much for those men when they are pressing him hard to have them received. It is good that the people should feel that they are being left out in the cold between the two Missions for unless they feel so they will never return to their own fold. But you are standing on the way. We do not leave people in an abondoned condition. It appears that you feel more for our such people than we ourselves do. But it is no wonder that your Padre moves about more freely amongst our congregations than he does amongst non-Christians.

As for such disaffected people ~~we have always the same answer which I gave you a month or so ago regarding the Jargo people, and you are accordingly free to accept them.~~ we would request you to keep hands off and if in spite of our request you decide to take them we have nothing to say.

Yours sincerely,
[signature]

Hi 18/6
BM 18/6
M.T. 18/6.

The Bishop of C. N. Pur.
S. P. G. Compound
Ranchi

17/6

Bishop's Lodge,

Ranchi, B.N.R.

17th June, 1931.

Dear Mr. Hurad,

I gather that it is to you that I should write about these matters. Last August, while I was in England, a darkhast was received from some people of Kuladuba and Konkel, asking to be received into our communion. I am informed that due notice was sent to the Lutheran authorities, and that the padre and pracharak went and tried to arrange the matter, but were unsuccessful. When I was in Kinkel at the beginning of April, these people came to me and repeated their petition. I told our padre to write to the Lutheran padre of Kondra, and ask him if he could not make up the difference with them, and to say that if there was no hope of doing so that he would ask me to receive them. Our padre at Kinkel has now written to me under the date 9.vi.31., saying that he wrote at once after I had directed him, and the letter was handed to Laurentius padre, but that he had received no answer from him, and that the people are pressing him much to have them received, and feel they are being left out in the cold between the two Missions.

As you know, I am never anxious to take over people like this, but I do feel that we must not leave people in an abandoned condition, so if there is no prospect of your being able to make up whatever the difference is, and as I am informed that there is no question of their being under discipline, I will only wait another month before giving directions that they should be put under instruction for Confirmation. If, in the meantime, you are able to effect a reconciliation, I shall be quite pleased.

Yours sincerely,

Kenneth Chota Nagpur

Mr. P. Hurad,
Lutheran Mission,
Ranchi.

D. C. 53/31. 28th. May, 31.
F.-5 or 29.

To,
The Officiating Treasurer,
Lutheran Church Compound,
Ranchi.

Dear Sir,

Please send Rs 120/- to the pastor of Kondra to pay for the District Board Rest house which has been bought by us on auction recently. The Church Council has sanctioned Rs 150/- for the same but news has come to me that the auction ended on a bid of Rs 120/- in our name. Please treat this as urgent as the pastor has taken a loan on interest.

Secretary,
G. E. L. Church.

1/31. 2nd. May, 31.
F. - 5.

Padri babu Laurentius Lakra ko bahut Yishusahay !

Ap ka Post Card mila jismen ap Kondra ke Dak ghar ke nilam ke sambandh men likhe the. Ap ko janata hun ki Council ne usko lena manjur kiya hai. So ap jahan tak bane kam dak men lene ka koshish kijiye arthat koi dak bole to uske upar ap Rs1 Rs2/ karke barhiye ek dam Rs20/ 25/- rupaiya mat boliye so Rs50/- tak men main samajhta hun khatam ho jayga. Yadi na ho to ap dhire dhire Rs100/- se leke Rs150/- ke hadd tak pahunch sakte hain. Kadachit S. P. G. log lena chahen to kuchh adhik dak we bolenge par ap Rs150/- se upar hone se chhor dijiye. Yadi liya jayga to usmen Padri ~~y~~ rahega aur abhi ke ghar men School howe aur abhi ka School Boarding rahega.

Itnahi likhta hun.-

Prem se,
Ap ka shubhchintak,

[signature]

Secretary,

Lutheran Church, Ranchi.

लिया जायगा। सो आप मेहरबानी कर फौरन हाल दीजिये कि इसी डांक घर को खिलाफ में लेना होगा कि नहीं और मिलान तक में लिया जाय ? —

आपो आपका लोगों का सेवक

Rw Laurentius Lakra

INDIA

POST CARD

WRITING SPACE

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE

HALF ½A ANNA

RANCHI

30 APR. 31

11 A.M.

Church Council

Received 1.5.31.

No. 2/J0

Date 29.4.31.

File S.

Reply

Date

The Secretary. C.E.

Lutheran Compound

Ranchi

Ranchi Dt

No 28

Lutheran Compound
Kor[illegible]a 29.4.31

मान्यवर सेक्रेटरी को मुन्न दीनादीन दास का प्रेम का यीशु सहाय। इधर का हाल चाल अच्छा है और मैं कुशल चैन कोन्डरा पहुंचा।

आज चिट्ठी लिखने का विशेष कारण यही है कि आनेवाले - महीना के ६ तारीख को 6·5·31 - यहां कोन्डरा का डाक घर नीलाम होने पर है और अभी यह घर नीलाम से लेने के लैक है क्योंकि यही घर हम लोगों के स्टेशन के नीकट भी है और उसको लेने से हम लोगों को कै एक बातों में बहुत सुभीता होगा। सो आप मेहरबानी कर फौरन चिट्ठी डाक से मुझे जनाइये कि हम लोगों को लेना होगा की नहीं और यदि लिया जाय तो फौरन C.C. से रुपैया मिलने का उमेद है की नहीं क्योंकि सैत लिलाम मे नगद रुपैया फौरन लिया

Church Council
Received 24.4.31.
Register No. 964.
Date...
File

9th April 1931
S. P. G. Mission
Compound
Kinkel

श्रीयुक्त पादरी लौरेन्तियुस लकड़ा, लुथेरान मिसन हाता, कोराङरा।

आप को मेरा येशुसहाय।

आप को मालुम है कि कुलाडुबा के धनमसीह खाखा अपने घराने समेत जमा ९ प्राणी, और कोनकेल के जकरिया कुजुर अपने घराने समेत जमा ६ प्राणी और तितुस एक्का अपने घराने समेत जमा ८ प्राणी हमारे मंड़ली में मिलने के लिये ३१।८।१९३० को दरखास्त दिये हैं, जिस को मैं बिशप के गैरहाजरी में उस के कमिशरी के पास भेज दिया। और मैं आप के मिशनरी पादरी जोन साहेब किनकेल को भी २।९।१९३० को यह बात सुना दिया। और वह मुझ को, इस के बिषय जांच और समुझाने के वास्ते आप के पास चिट्ठी भेजेंगे कहा था। और मैं समुझता हूं कि पादरी जोन साहेब आप के पास चिट्ठी लिखा होगा, तब ही तो आप और आप के मास्टर कोराङरा के इलियाजर टोप्पो उन को समुझाने के लिये गये थे, और फिर बिन्यामीन प्रचारक और कोराङरा का चौकीदार भी कोनकेल के भाइयों को समुझाने गये थे।

पर देखिये कि वे अब तक मेरे मंड़ली कुलाडुबा में गिर्जा आते हैं। सो मैं इस चिट्ठी के द्वारा आप को जनाता हूं कि आप मुझ को इस के बिषय ६ वीं मई १९३१ तक के भीतर में साफ तौर से जवाब दीजिये। यदि आप इतने दिनों के भीतर में जवाब नहीं देंगे तो मैं नियमानुसार अपने मंड़ली में मिलाने के लिये बिशप साहेब के पास लिखूंगा।

आगे शुभ।

Revd. P. P. Kachchhap
S. P. G. Mission
Pastor of Kinkel Parish.
Post office Kinkel
Ranchi

Church Council
Received 31.3.31.
Register No. 882.
Date 27.3.31.
File 6.
Reply No.
Date

No 24

लूथेरान मिशन हाता
कोन्डरा २६.३.३१

Secy. for full CC.
[initials] 31/3/31

मान्यवर चार्च कौंशिल को मुझ दीन दास का प्रेम का यीशु सहाय।

मण्डली की दशा उतना अच्छा नहीं है जितना होना चाहिये; क्योंकि प्रति दिन नये २ लड़ाई और झगड़ा औ किसान किसी प्रकार का रोक टोक उठते ही जाता है पर पिता प्रभु की दया से वह भी समयानुसार शान्त होते जाता है। इसलिये कह सकते हैं मण्डली की दशा प्राय: मध्यम है॥

आगे विनय पूर्वक मुझ दीन दास का निवेदन आप लोगों के निकट पहुंचाया जाता है जिससे मेरे और मेरे सहकर्मियों को ऊपर कुछ मदत मिले।

१. आगे आप लोगों को मालुम होवे कि मैं अपने काम में यही पाया कि जौभी बहुत कोशिश करता ही रहा हूं, पर तौभी उन्नति का पता नहीं चल रहा है। किसानों आदि कुछ बढ़ती और लेन देन भी कुछ बढ़ रही है पर देश के दर भाव से और ही गिर जाता जिससे मैं बहुत व्याकुल हो गया हूं।

मैं अपने मण्डली और कर्मचारियों के लिये शक्ति भर कोशिश करके काम कर रहा हूं पर किसी दिन उनको तकलीफ को दूर करने और उन्हें जीविका की रक्षा के लिये ~ दाल भात नहीं, पर मांड़ भात पुराने का कोशिश कर रहा हूं पर नहीं सक रहा हूं जिससे प्रति दिन कर्मचारियों का मन और ही अधीर होते चला जा रहा है। सो आप लोगों से विनय पूर्वक अर्ज यही है कि मेरे जसपुर + इलाका के लिये कुछ ग्रैन्ट बढ़ाया जाय जितना आप लोगों के लिये सुभीता हो॥

मेरे इलाका में बार बार यही सुनने में आता है कि जसपुर नीच घाट के लिये प्रति प्रचारक ३) रु० करके ग्रैन्ट भेजा जाता और पादरी के लिये अलग भेजा जाता है। जौभी उपर घाट में १२ प्रचारक और एक पादरी हैं तौभी क्यों २०) केवल ग्रैन्ट भेजा जाता है सो इसी बात पर भी आप लोगों को ध्यान होवे।

आगे मैं यहां आके सेन्ट्रालाइज करके बहुत कोशिश करता चला आता हूं पर तौभी किसी को तरक्की पर पहुंचा नहीं सकता हूं। प्रचारकों को ३) से ६) रु० के बीच में जैसा आमदनी होता तलब बांटता हूं तो अधिकांश १) या १॥) या दो, या तीन और कभी २४) रु० भी हो जाता है सो कुछ बातें आप लोगों को इससे भी मालूम पड़ेगी कि मण्डली कैसी कठिनता से चलती है। और फिर मेरे पास कोई भी ऐसी सहायता के उपाय नहीं है जिससे मण्डली चलाऊं

२ :- दूसरी बात यही है कि जसपुर उपर घाट में और दो स्कूलों की अभी बहुत ही दरकार है। अब की कोन्डरा

इलाकाकी आमसभा २०.३.३१ को कोन्डरा में बैठी थी जिसमें यही भी सलाह हुआ है कि "जसपुर ऊपर घाट में और दो स्कूलों की अति आवश्यक है सो C. C. इसके लिये इन्तिजाम करे" मैं आप लोगों के पास यही बातें पेश करता हूं जिस्तें मण्डली की दशा भला होवे। जैसा एक गांव में अर्थात बरपानी में २६ लड़के लो जमा हुए हैं और एक मास्टर भी बिलफैल वैसाही पढ़ा रहा है और दूसरा स्कूल भी फौरन खोल दिये जाने पर है पर आप लोगों की ओर हमों की विशेष आशा है सो इसका निपटारा करके सुसमय में इसका खबर दीजिये जिस्तें स्कूल खोली जाय और आगे स्कूल चले। खर्च आदि का पूरा इन्तिजाम आपही लोगों के ऊपर निर्भर है ॥

३ —— मैं इस बात को अभी तक नहीं समझता हूं कि क्यों मेरे लिये केवल ५) रु० Pastor's Salary के नाम से आता है मैं अपने काम में देखता हूं कि यही उपाय अर्थात ५) रु० बहुत ही घटती है। मैं अपने कर्मचारियों को इसी बात को दिखलाते चला आता हूं कि किस प्रकार मुझ को भी घटती होती है तो बहुत मुसकी लता से मेरे लिये कुछ बचता जब प्रचारकों का पेट मारा जाता। बीते साल ~~१९~~ १९३० में प्रचारकों के पेट को मारते २ तलप लेने पर भी क्या हुआ कि प्राय: दो महीने के तलप की पूरती नहीं हुई। और यदि प्रचारकों को ५ या. ६ या ७ लगातार उन्हें तलप देने से तो पादरी को कुछ भी नहीं बचेगा। सो आप लोगों से इसी मेरे तकलीफ पर भी बिनय पूर्वक अर्जी है कि मुझ दीन दास पर कुछ ध्यान किया जाय और Pastor's Salary सैंत २०) रुपैया भेजने से कुछ रहत को होती।

आइन्दे आप लोग मेरे भूल चूक को माफ कीजिये

आपलोगों का विश्वस्त सेवक

पादरी बाबू लौरेन्तियुस लकड़ा

कोन्डरा ॥

Memorandum.

From,

The Secretary,
G. E. L. Church,
Chota Nagpur & Assam.
RANCHI.

No. 60/30.
F.-5.

LUTHERAN COMPOUND,

Ranchi the 24th April, 1930.

To

The Rev. Laurentius Lakra,
G.E.L. Church Compound,
Kondra.

Extract Copy of the minutes of the Church Council dated the 7th April, 1930 forwarded to the Rev. Laurentius Lakra for information and guidance and ~~compliance.~~ communication to the persons concerned.

[signature]
Secretary,
G.E.L. Church, Ranchi.

Office of the Secretary, G.E.L. Church Council, Chotanagpur & Assam.

Church Council ki baithki.

ta: 7 April, 1930.

4. Kuladuba kabarsthan - Kondra ke Padri ne samachar bheja hai ki Kuladuba ke Angreji mandli men gaye huwe logon ne hamare kabarsthan men bite sal bahut rat men uthke Punruthan ki Aradhana ki aur apne mritkon ko bhi garna chahte hain. Is par bahut batchit karne par nirnay hua -

SANKALP : Ki yah Lutheran kabarsthan hai aur yahan dusron ki aisi Aradhana nahin ki ja sakegi aur dusri mandli ke log use apna kabarsthan jan ke wahan nahin garne sakenge.

[signature]

Church Council
Received 4.4.30.
Register No. 11.
Date 4.4.30.
File 5.
Reply No.
Date

File

मान्यवर चर्च कौंसिल को कोन्डरा के पादरी बाबू की ओर से यीशुसहाय।

आगे आप लोगों को मालूम होवे कि कोन्डरा इलाके में कुलाडुबा नाम का एक गांव है जहां के आधे लोग S.P.G. मिशन में चले गये हैं और आधे लोग हमारेही माता मण्डली में हैं। अपशोच सहित लिखने का कारण येही है कि वहां जो हमलोगों का कबरस्थान है उसको वे लोग छोड़ने नहीं चाहते हैं और उसी में अपने प्यारे मरे हुओं को लेके गाड़ देते हैं, और जीउठना पर्ब्ब के दिन में S.P.G. लोग पहिले आधीरात में जाके जीउठना का गिर्जा कर लेते हैं और पीछे हम लोग वाले जाके जीउठना का गिर्जा करते हैं जो देखने में अत्यन्त ही बुरा मालूम होता और हमारे लूथेरान संगति में अच्छा मालूम नहीं होता॥

फिर और एक विशेष बात यह है कि पहिले जब वे एक में थे सांझ बिहान बिन्ती प्रार्थना के लिये एक घंटा मिशन की ओर से दिया गया था उसको भी वे लोग अपना लिये और हम लोगों के लूथेरान भाईयों को वही घंटा नहीं देते और लड़ाई झगड़ा किया करते हैं॥

इन दो बातों को आप लोगों के पास बिनय पूर्बक अरज पेश करते हैं कि इसका उचित बिचार कर सुसमय में जैसा बने वैसा निपटारा कर दें आईन्दे हजूर आप लोग मालिक हैं॥

रांची
४थी अप्रैल
१९30

आप लोगों का बिश्वस्त
सेवक
पादरी बाबू लौरेन्त्युस लकड़ा
लूथेरन मिशन हाता कोन्डरा